नेपाली क्रान्ति-कथा

फणीश्वरनाथ रेणु

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

रेणु और मैं

विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला

बात १६३७ की है। महीना मुझे याद नहीं। मैं अपनी पत्नी सुशीला के साथ अपने घर विराटनगर (नेपाल) जा रहा था। हमारी नयी-नयी शादी हुई थी। हम कटिहार से जोगबनी जानेवाली गाड़ी में सफर कर रहे थे। जोरों की वर्षा हो रही थी। एक स्टेशन से जब गाड़ी खुली तो देखता हूँ कि एक किशोर हमारे डिब्बे के बाहर डण्डी पकड़कर पांवदान पर खड़ा है। गाड़ी सांय-सांय करती हुई द्रुतगति से दौड़ने लगी थी। वह युवक भीगकर पानी-पानी हो रहा था। हमारा डब्बा सैकेंड क्लास का था (उन दिनों का राजसी सैकॅण्ड क्लास)। उस डब्बे में केवल हम पति-पत्नी थे। हम दोनों इसी उधेड़बुन में थे कि उस नितान्त अपरिचित व्यक्ति को डब्बे के अन्दर आने दिया जाये या नहीं। कहीं वह उचक्का तो नहीं है? हो सकता है कि वह चोर हो और हमें एक प्रकार से निर्जन पाकर हमारी हत्या कर हमारा सामान लेकर चलता बने! लेकिन सुशीला से रहा नहीं गया। उसकी सतही सही, उस समय की हालत पर तरस खाकर उसने डब्बे का दरवाजा खोल दिया। अन्दर आने पर जब उसने देखा कि डब्बे में पति-पत्नी सरीखे केवल दो प्राणी हैं तो वह सकते में आ गया और सीट पर बैठने से कतराता रहा, लेकिन बैठने के लिए हमारे बार-बार के अनुरोध पर वह एक सीट पर दुबककर बैठ गया। सुस्थिर होते ही उसने अपना परिचय दिया और हमारा परिचय पूछा। पारस्परिक परिचय के बाद वह हम लोगों से इतना घुल-मिल गया कि वह हमारे साथ विराटनगर चला

आया। विराटनगर आने के बाद वह हमारे घर पर ही रहने लगा। वह था हिन्दी का यशस्वी कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु।

रेणु मुझे सान्दाजु कहता था। नेपाली में सान्दाजु का अर्थ होता है: बड़े भाई से छोटा लेकिन अपने से अग्रज। हम पाँच भाइयों में मातृका-प्रसाद कोइराला ज्येष्ठ है। हम अनुज उन्हें ठुल्दाजु अर्थात् बड़े भैया कहते हैं। उनसे छोटा मैं हूँ। अन्य तीन भाइयों मे बड़ा होने के नाते मैं उनके लिए सान्दाजु बना।

विराटनगर मे मेरे पिताजी (स्व० कृष्णप्रसाद कोइराला, जो नेपाल के गांधी कहाते थे और साधारणतया सभी उन्हें 'पिताजी' कहा करते थे) ने एक स्कूल खोला था जो नेपाल तराई का सर्वप्रथम स्कूल था। उसी स्कूल में रेणु भी दाखिल हुआ और उसकी प्रारम्भिक शिक्षा वहीं हुई। मेरे एक छोटे भाई तारिणी प्रसाद कोइराला (अब स्वर्गीय) से रेणु की खूब जमती थी। दोनों में साहित्य के प्रति चाव था। दोनों साहित्य के रसिक प्रेमी यदा-कदा कुछ लिखते रहते थे। उस समय तारिणी प्रसाद की उम्र १५ वर्ष की थी और रेणु भी समवयसी ही रहा होगा। तभी से एक समय का नितान्त अपरिचित किशोर रेणु कोइराला-परिवार का एक अभिन्न सदस्य-जैसा हो गया और जीवन-पर्यन्त रहा।

रेणु हिन्दी का ही नहीं, बंगला साहित्य का भी मनोयोगी और रस-ग्राही पाठक था। उन दिनों वह विशेषत: सतीनाथ भादुड़ी की उफनती-फड़कती क्रान्तिकारी राजनैतिक रचनाओं के प्रति बड़ा ही आसक्त था। उसी ने मुझे सतीनाथजी से मिलाया और उनकी रचनाओं को पढ़-पढ़ाकर रसास्वादन कराया। मेरी कुछ रचनाएँ हिन्दी मासिक 'हंस' (उसके सम्पादक प्रेमचन्द से मेरा परिचय हो गया था) और नेपाली मासिक 'शारदा' (काठमाण्डो) में छप चुकी थीं। रेणु मेरा साहित्यिक सहायक बना। बाद मे उसने मेरी कुछेक नेपाली कहानियों का हिन्दी में अनुवाद किया। पटना से स्व० रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा सम्पादित मासिक 'हिमालय' मे मेरी एक नेपाली कहानी का हिन्दी अनुवाद रेणु ने प्रकाशित कराया।

लेकिन सबसे बढ़कर रेणु मेरा छोटा भाई था। उसकी क्रान्तिकारी प्रवृत्ति और अन्याय तथा दमन का विरोध करने की उग्रता मेरी ही जैसी

थी। उसके विचार मेरे अपने जैसे लगते थे। वास्तव में यह मेरा ही था। वह स्वतन्त्रता का प्रचण्ड योद्धा था। नेपाल में प्रजातन्त्र के हमारे संघर्ष में उसने हमसे कन्धे से कन्धा मिलाया। राणा-शासन को अपदस्थ करने के हेतु नेपाली कांग्रेस ने १९५० में जो सशस्त्र क्रान्ति छेड़ी थी, उसमें रेणु भी शामिल हो गया और मुक्तिसेना की फौजी वर्दी में मेरे साथ बन्दूक लेकर मोर्चे पर कूद पड़ा। क्रान्ति के समय उसने नेपाली कांग्रेस के प्रचार-प्रकाशन तथा विराटनगर से स्थापित एक 'गैरकानूनी' आकाशवाणी के संगठन में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

१९३५ से जब से मेरा परिचय रेणु से हुआ तब से हम घनिष्ठही रहे, यद्यपि बीच-बीच में हमारा सम्पर्क टूट जाया करता था। दिसम्बर १९७६ में ८ वर्षों के निरन्तर आत्मनिर्वासन के बाद मैं स्वदेश लौटने की तैयारी कर रहा था। उसी सिलसिले में मैं पटना पहुँचा था जहाँ से ३० दिसम्बर को काठमाण्डो जाने का मेरा कार्यक्रम निश्चित हो गया था। लेकिन काठमाण्डो जाने के पहले मैं जैसे भी हो रेणु से मिलना चाहता था। पटना में अपने कुछ मित्रों से उसके बारे में पूछने पर मुझे पता चला कि वह एक स्थानीय अस्पताल में इलाज के लिए दाखिल हुआ है। उस समय रात के दस बज चुके थे। मैं उतावली में उसी समय उससे मिलने उस अस्पताल की ओर दौड़ पड़ा। ऐसे कुसमय में रोगी से मिलना अनुचित है, यह जानता था; पर दूसरे दिन प्रातःकाल ही काठमाण्डो के लिए प्रस्थान करना था इस लिए रेणु से मिलने का समय टालने की कोई गुंजाइश न थी।

अस्पताल में शय्यालीन रेणु को देखा। वह एक कंकाल बना हुआ था। डाक्टर ने बताया कि वह कुछेक जानलेवा रोगों से ग्रस्त है, लेकिन मेरे लाख मना करने पर भी रेणु उठ बैठा और मेरे पाँव छूकर गोया कुछ खोयी चीज पाकर गदगद हो गया। उसने कहा कि 'मैं बीमार हूँ। अतः फिलहाल नेपाल के प्रजातान्त्रिक संघर्ष में आपको सहयोग नहीं दे सकता। लेकिन मैं जल्द ही स्वस्थ होऊँगा। तब सारनाथ जाकर सुशीला भाउजू (भौजी) के साथ रहूँगा और उनकी सेवा करूँगा।' तब वहाँ उपस्थित २-४ युवकों से मेरा परिचय कराते हुए उसने कहा कि 'आप लोगों को कोइराला से प्रेरणा लेनी चाहिए। एक तो हम हैं कि अपने राजनैतिक अधिकारों के

संघर्ष में मरने से डरते हैं और दूसरे कोइराला हैं कि उस संघर्ष का बीड़ा उठाकर मृत्यु का आह्वान स्वीकार कर काठमाण्डो जा रहे हैं।' उसने मुझसे कहा कि उसकी अभिलाषा मेरे सारे लेखों का अनुवाद हिन्दी में करने की है। यहाँ एक बात बतला दूं : वह मेरे एक नेपाली उपन्यास 'नरेन्द्र दाई' का अनुवाद हिन्दी में कर चुका था और उसके प्रकाशन की व्यवस्था कर रहा था कि आपात्स्थिति लागू हो गयी थी।

मई के आरम्भ मे राजकाज-अपराध-कानून के तहत आरोपित कुछ अभियोगों के लिए जब मुझे सर्वोच्च अदालत में पेश किया जा रहा था तो वही अदालत में मुझे 'दिनमान' की एक प्रति हठात् मिली जिसके आवरण पर रेणु की तस्वीर छपी थी। तस्वीर देखते ही मैंने वह अंक लपककर उठा लिया लेकिन जब समाचार पढा तो सन्न हो गया। वह रेणु की मृत्यु के विषय मे था। उसकी मृत्यु से मुझे लगा कि मेरी एक बड़ी चीज खो गयी है। कोई दूसरा समय होता तो मैं चाहता कि उस दुख को मैं मौन रहकर झेलूं। लेकिन मैं अदालत मे था जहां मुझे अपनी ओर से सफाई देनी थी और अपने वकीलों तथा सरकारी पक्ष के वकीलों की बहस सुननी थी। मुझे जबरन प्रकृतिस्थ होना पडा। कोई भी अनुमान कर सकता है कि इसके लिए कितना आत्मसंघर्ष करना पडा होगा।

मेरे लिए रेणु मरा नही है। वह मेरे हृदय मे जीवित है, हम कोइराला-परिवार के सदस्यो के हृदय में जीवित है, *हम प्रजातन्त्र के सारे* नेपाली या भारतीय सिपाहियों के हृदय मे जीवित है। रेणु मर गया। लेकिन रेणु जिन्दा है, अपनी जिन्दादिली के लिए, अपने क्रान्तिकारी विचारों के लिए, तानाशाही के विरुद्ध संघर्ष के लिए, अपनी जिजीविषा के लिए, अपनी सिसृक्षा के लिए···

नेपाली क्रान्ति-कथा

एक

विराटनगर, ईस्टर्न कमाण्ड का हेडक्वार्टर, पूर्वी मोर्चा···

अक्तूबर १६५० की एक सुबह, मुक्ति की सम्भावना का मधुर संदेशा दे गयी, पशुपतिनाथ मन्दिर के प्रागण में वज्रनिनाद-स्वर मे जयध्वनि हुई—"जय, पशुपतिनाथ की जय !"

जयध्वनि या मेघगर्जन ? मुक्ति की सूचना लेकर यह जयध्वनि मँडराती रही—पहाड़ों मे, तराइयो मे, नगरों और गाँवों में। राणाशाही के बन्धन मे युगों से जकडी हुई धरती—नेपाल की—विहँस पडी। देश के कोने-कोने में छायी हुई उदासी दूर हो रही है।

मुक्तिसेना के सिपाहियों के मुखमण्डल पर सर्वदा एक अपूर्व-आभा और ओठों पर मनमोहक मुस्कराहट अंकित रहती है। विजयादशमी के दिन गुरुजनों के चरण छूकर नमस्कार करते समय इस बार ये इतना प्रसन्न क्यों हैं ? ···माँ, इस बार रक्त का टीका लगा दो···पिताजी, आशीर्वाद दीजिए—देश की मुक्ति के लिए अपने को उत्सर्ग कर सकूँ···जय हो, विजय हो। बडे-बूढों की आँखों मे प्रसन्न-आँसू ढलमलाते हैं—क्या हो गया है इन नौजवानों को ? ···यो कस्तो पागलपन ?

मुक्तिसेना का एक-एक सिपाही—तैयार—प्रतीक्षा कर रहा है।

और भी कई दिन प्रतीक्षा में बीते। झिलमिलाती हुई दीपावली की रात आयी। विराटनगर के अधिकाश घरों में इस बार 'दीपावली' और 'भाई दूज' पर्व एक ही साथ मनाये जा रहे हैं। भाइयों ने जिद्द पकड़ी है—

"इस बार दो दिन पहले ही 'टीका' लगा दो दीदी !"

शंखध्वनि हुई। दीपों की माला जगमगायी। 'भाई-टीका' देते समय स्नेहमयी बहनों ने अपने-अपने भाइयों की आंखों में न जाने कैसी चिनगारी देखी कि उनके मुँह से आशीर्वाद के ये दो शब्द स्वयं ही निकल पड़े—'जय नेपाल'।

नेपाली वधुओं ने अपने-अपने पतियों की 'खुकरी' को सर से छुलाकर विदाई दी—'जय नेपाल'।

मुक्तिसेना की पहली टुकड़ी, रात के सन्नाटे में—तराई, नदी-नाले और ऊबड़-खाबड़ खेतों को लाँघती हुई—विराटनगर शहर की ओर बढ़ी। गेरिला-युद्ध का श्रीगणेश हुआ। टुकड़ी के सभी मुक्ति-सैनिकों के मन में फौजी बैंड के ताल पर, एक ही गीत गूंज रहा है—नेपाली ! नेपाली !! अगि बढदै-बढदै जाऊ—क्रान्ति झण्डा ले···ड्रम ड्रम ड्रम।

इनके प्रत्येक पदचाप पर धरती पुलक-पुलक उठती है। शहीद शुक्रराज, कृष्णप्रसाद कोइराला तथा अनगिनत-अनाम-अमर शहीदों की आत्माएँ शान्त हुई हैं—पहली बार। नक्षत्रखचित आकाश में खलबली मची हुई, मानो···

हाल्ट !

विराटनगर शहर के बाहर एक क्षण के लिए टुकड़ी रुकी। अन्तिम निर्देश : *ट्रेजरी, मालखाना और जेल पर—एक भी गोली खर्च किये* बगैर ही—निःशब्द कब्जा करना होगा। आवश्यकता पड़ने पर संगीन और रिवाल्वर से ही काम लेना होगा। यह हुआ पहला कार्यक्रम। दूसरा काम : मोरंग जिला के गवर्नर उत्तमविक्रम राणा के निवासस्थान पर धावा बोलकर, गवर्नर तथा अन्य फौजी अफसरों को गिरफ्तार करना। इस धावे में हम खुलकर अपने हर हथियार का इस्तेमाल करेंगे।

टुकड़ी को दो हिस्सों मे बाँट दिया गया।

गिरिजा और विश्वबन्धु के नेतृत्व में एक दल स्कूल के मैदान मे जा उपस्थित हुआ। दूसरे दल के दलपति हैं तारिणी प्रसाद और गेरिला-युद्ध के प्रशिक्षक भोला चैटर्जी। प्रथम दल को—ट्रेजरी, जेलखाना और सरकारी अफसरों के कैम्प पर छापा मारकर कब्जा करना है···द्वितीय दल, अस्त्रागार,

फौजी बैरक पर चढ़ाई करेगा।

मालखाना (अस्त्रागार) का सन्तरी मच्छरों के मारे परेशान है। वह 'भानुभक्त-रामायण' की पंक्तियों को गुनगुनाता हुआ बरामदे पर टहल रहा है—'लौ लंकापति तिम्रो यमदूत आयो···' अचानक, टार्च की तेज रोशनी उसकी आँखों को चौंधिया देती है। सावधान होकर वह जब तक राइफल सँभाले, गेरिलो की चमकती हुई शाणित संगीनें उसे चारों ओर से घेर चुकी थी— "चुप, न कराउ···चिल्लाओ मत।"

सन्तरी ने मुस्कराकर हथियार सुपुर्द कर दिया। लगा, वह पहले से ही इसके लिए तैयार था।

अस्त्रागार में रक्षित राइफलों और बुलेटों के ढेर देखकर गेरिले किलक पड़े। इस्पात, ताँबे और निकेल के अस्त्र-शस्त्रों का अम्बार? लेकिन, उधर ट्रेजरी की बड़ी तिजोरी खुल नही रही है। चाबी बड़े हाकिम यानी गवर्नर के पास है।

"टूट नही सकती तिजोरी?"

"जोरों की आवाज होगी।"

"गिरफ्तार सन्तरियों पर नजर रखो।"

"मालखाना का 'माल' सँभालो।"

ऐसी घड़ी में भी हँसानेवाली कोई ऐसी घटना घट सकती है कि आदमी हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाये।

"अन्धकार में यह कौन है···एकदम नंगा?"

"एकदम नंगा नहीं, अण्डरवियर है।"

"परम भूधराकार शरीरा···?"

खिलखिलाहट सुनकर डाँट पड़ी—"ए! चुप···एक शब्द नही।"

जोगबनी के भावुक गुरुजी फेंकन चौधरी शुरू से ही कोइराला-परिवार के भक्त और नेपाली कांग्रेस के सक्रिय-सहायक हैं। गेरिलों ने 'जय नेपाल' कहकर मार्च किया तो आप भी निहत्थे साथ चल पड़े। टुकड़ी के संचालक भोला चैटर्जी ने आपत्ति की—"सुफेद खादी की धोती और यह सुफेद गाँधी टोपी? घने अन्धकार में भी गोली ठीक आपके सिर मे लगेगी।" किन्तु गुरुजी ने मैथिली-भाषा में ही कहा—"जब गोलिये खाये लेल जायत

छौ त फेर माथ में लागोक चाहे पैर में—एक्के बात···"

मालखाना मे समस्या खडी हुई—राइफल तो दो-दो या तीन-तीन भी लटकायी जा सकती हैं, कन्धे से, किन्तु इतने बुलेट ? कोई बोरी या झोली भी नही—"···अब कसरी के गर्ने···कैसे क्या हो ?"

"हे-हे लियौ, समस्याक समाधान !"—कहकर गुरुजी ने अपनी धोती खोल दी, "बाँधिए गठरी। इससे भी नहीं हो तो लीजिए, इस कुर्ते का झोला बना देता हूँ।"

जेल का सन्तरी सतर्क हो गया, शायद ? वह रह-रहकर विकट और विकृत स्वर मे चिल्लाता है—'खबरदार, होय खबरदार !' इतना ही नही, वह अब निशाना लेकर तैयार है। दलपति ने ताड लिया। बस, सन्नाटे को चीरती हुई मुक्तिसंग्राम के सिपाही की 'पहली गोली' दगी—ठाँय। रिवाल्वर की गोली ने सन्तरी को सुला दिया।

फिर, सभी ओर चुप्पी। घुप्प अन्धकार।

सभी काम 'बेखटके' हो रहे हैं। जेल का कपाट खुला। जेल के अन्दर की काल-कोठरियाँ खुली। भगदड़, कोलाहल। और, लाख मना करने के बावजूद शुरू हुई जयध्वनि और नारे···

'कोइराला-निवास' के पूरब, मैदान में—अन्धकार में ही सारी घटनाएँ घट रही हैं। उन्नत सिर 'कोइराला-निवास' मानो सबकुछ देख रहा है···कोइराला-निवास। जहाँ साठ-पैंसठ साल पहले एक महामानव ने एक विद्रोह की पहली चिनगारी जलायी थी। जिसके प्रत्येक कमरे मे—न जाने कब से नेपाल की मुक्ति के सैकड़ों सपने देखे हैं, इसके निवासियों ने। और, आज जिसका प्रत्येक सदस्य मुक्तिसंग्राम का सशस्त्र सैनिक है।

'कोइराला-निवास' के उत्तर-पूर्व में है—उत्तमविक्रम राणा का निवासस्थान। विशाल मैदान के बीच ऊँची चारदीवारी से घिरा दुमंजिला बंगला। प्रवेशद्वार पर कई पुराने, ऊँचे पेड़···

अचानक, एक पेड़ की फुनगी से, 'सर्च-लाइट' की रोशनी सामने के मैदान के अन्धरहस्य को खोल गयी। मुक्तिसैनिकों के दोनों दल इसी मैदान में एकत्र हैं···

"लेट जाओ सभी। रेंगते हुए आगे बढ़ो।"

सुनिश्चित गोरिल्ले रेंग-रेंगकर आगे बढने लगे। एक बार सर्चलाइट की रोशनी फिर नाच गयी, मैदान में।

—ट-ट-ट-ट-; ट-ट-ट-ट···

राणाशाही-ब्रेनगन आग उगलने लगी—अविराम।

पूरब, फौजी बैरक में खतरे का बिगुल आर्त्तनाद कर उठा।

विराटनगर शहर कच्ची नींद से अचकचाकर जगा। फिर, घण्टों सिर्फ़ गोलियाँ बोलती रहीं—टूट ठाँय-ठाँय···धाँय-धाँय। ट-ट-ट-ट-ट-ट··· ठाँय-ठाँय···

—बिकू! लेट जाओ भैया। लेटे रहो।

—फ्लास्क से पानी ढालकर बिकू को पिला दो।

—निशाना—पेड़ पर···

—सुँ-ई-ई···ठाँय। सुँ-ई-ई···ठाँय-ठाँय···

राणाशाही की धाराप्रवाह गोली-वर्षा का जवाब, मुक्तिसेना की बन्दूकें तुतला-तुतलाकर दे रही हैं, मानो—'हम डटे हैं।'

—किसे गोली लगी? राइफल ले लो उससे।

—गिरिजा को कारतूस चाहिए···

सर्चलाइट की रोशनी, काली नागिन की लपलपाती हुई जीभ की तरह, रह-रहकर अन्धकार को चीरकर नाच जाती है। अब, ऐसा लगता है कि एक भी मुक्ति-सैनिक बचकर नहीं लौटेगा। अब तक सामने से ही गोली की वर्षा हो रही थी। इस बार पीछे से बैरक के फौजियों ने फायरिंग शुरू कर दी है···

मुक्ति-संग्राम की इकलौती स्टेनगन धुआँधार, जवाबी फायरिंग करती हुई गर्म हो गयी है। जलते हुए बारूद की उत्कट गन्ध सारे वायु-मण्डल में फैलती जा रही है।

डेढ़ इंच की गोली—थ्री-नाट-थ्री की—सनसनाती हुई गिरिजा की कनपटी के पास से गुजर गयी। मौसेरा भाई बिकू चिल्लाया—"गिरजा, सिर धरती पर···" किन्तु दूसरी गोली बिकू की जाँघ को चीरती हुई धरती में धँस गयी। सामने की पंक्ति में लेटकर राइफल चलानेवाले बहादुर साथी बलबहादुर की निष्प्राण देह लुढ़ककर गिरिजा को ढँक लेती है।

ग्रमर शहीद कृष्णप्रसाद कोइराला का सबसे छोटा बेटा, नेपाली कांग्रेस के सभापति मातृका प्रसाद का ग्रौर मुक्तिसेना के ईस्टर्न कमांड बी० पी० कोइराला का सबसे प्यारा छोटा भाई गिरिजा देख रहा है—गोलियों से बलबहादुर की लाश छलनी हो रही है···ग्रब शायद उसकी बारी हो···

—ट-ट-ट-ट-ट-ट-ट; ट-ट-ट-ट-ट-ट-ट···

मुक्तिसेना के दलपति ने पीछे हटने का ग्रादेश दिया, किन्तु पीछे हटा जाये कैसे ? लगता है, चारों ग्रोर से गोलियाँ चल रही हैं।

उत्तमविक्रम के फौजियों ने रात-भर फायरिंग जारी रखी। डेढ़-दो घण्टे तक मुकाबला करने के बाद गेरिले पीछे हट गये।

विराटनगर से पूरब, सिंघिया नदी के किनारे सभी गेरिले एक-एक कर एकत्र हुए। एक साथ नहीं लौटा। वीर बलबहादुर शहीद हो गया। तीन मुक्ति-सैनिकों को गोली लगी है। एक की ग्रवस्था चिन्ताजनक है। तीनों की मरहम-पट्टी की गयी।

घायलों को लादकर पूर्वनिश्चित योजना के ग्रनुसार सभी रंगेली बाजार की ग्रोर चल पड़े—निःशब्द।

पराजय की ग्लानि, पैर पीछे हटाने की लज्जा ग्रौर मुक्तिसेना की सारी चेष्टाग्रों को ग्रपमानित करती हुई राणाशाही-ब्रेनगन की ग्रावाज —ट-ट-ट-ट-ट-ट-ट—मानो, मुँह चिढा रही हो—वाह रे पटाखेबाजो !

शहीद बलबहादुर, जो १९४६ के ऐतिहासिक मजदूर-ग्रान्दोलन मे, सत्याग्रहियों में नाम लिखाने के बाद ग्रचरज से पूछ बैठा था—"यह कैसी लड़ाई है, बाबा ? राणा का सिपाही हमको गोली से मारेगा ग्रौर हम सिर्फ 'जिन्दाबाद' बोलेगा ? नही मरती होना है, ऐसी लड़ाई में···"

इस बार जब उसे मालूम हुग्रा कि बन्दूक का जवाब बन्दूक से दिया जायेगा तो वह हँसता हुग्रा ग्राया—"मुक्तिफ़ौज में मेरा नाम लिख लिया जाये।"

एक बूढ़ी माँ ग्रौर पांच वर्ष के एक पुत्र को नेपाल के किसी पहाड़ी गांव मे छोड़कर—हँसता हुग्रा चला ग्राया बलबहादुर। मरते-मरते उसने कई साथियों के प्राणो की रक्षा की। कल शाम को चाय पीते समय उसने एक पहाड़ी गीत सुनाया था जिसका भावार्थ इस प्रकार है : 'युद्ध के

मैदान में मरनेवाले सीधे स्वर्ग पहुंचते हैं ? मेरी राह रोककर कौन खड़े हैं ? पिता ? माँ ? स्त्री ? पुत्र ? मैं किसी को नहीं पहचानता। सभी हट जाओ मेरी राह से। मेरी आत्मा सीधे स्वर्ग पहुँचने के लिए मचल रही है।'

उसके साथी नरबहादुर के हाथ में गोली लगी है। मैदान से लड़ने में उसे देर हो गयी। ब्रेनगन की गोलियों की वर्षा के बीच वह अपने बचपन के साथी बलबहादुर की मृत देह को बहुत देर तक ढूँढता रहा। उसने कहा था—यदि मैं लड़ाई मे काम आ जाऊं तो मेरी खुकरी मेरी माँ के पास पहुंचा देना—एकलौते बेटे के लिए अमूल्य धन।

सभी मुक्ति-सैनिको के अन्दर एक तूफान चल रहा है। सभी चुप हैं। चुपचाप चल रहे हैं, ओस से भीगी हुई पगडण्डी पर।

एक साहित्यिक और रसिक मुक्ति-सैनिक इस असह्य चुप्पी को तोड़ता है—"आज एक कहावत का जन्म हुआ : जो जीते सो गोलन्दाज, जो हारे सो पटाखेबाज !"

बात वाजिब जगह पर जाकर लगी। जले पर जानबूझकर नमक छिड़कना इसी को कहते हैं—"जनाब ! अपनी शायरी रखिए अभी !"

"मैं शायरी करता हूँ ? मैं पूछता हूँ, भागने का हुक्म क्यों दिया गया ?"

"भागने का हुक्म ? कैसा जंगली है ? 'रिट्रीट' को भागना बोलता है ? अपने बहादुर साथियों को 'पटाखेबाज' कहता है ?"

"रिट्रीट ही सही। किसने हुक्म दिया पैर पीछे हटाने का ?"

"क्यों ? मैंने।"

"तो, इसी स्टेनगन से सभी साथियों को यहीं समाप्त कर दीजिए। हम किस मुँह से लौटकर जायेंगे ?··· मेरा जी करता है, इसी रिवाल्वर से अपना काम तमाम कर लूँ।"

"सेंटिमेंटल फूल।"

हठात्, कड़कता हुआ फौजी कमान—"गेरिलाज ऑफ नेपाल लिबरेशन आर्मी—अटेन्शन !"

गेरिल्ला-युद्ध का शिक्षक भोला चैटर्जी कहता है : हम पराजित नहीं

हुए हैं। इतने अस्त्र-शस्त्र, गोला-बारूद, कारतूस हमे प्राप्त हुए। दो घण्टे तक हमने दुश्मन के ब्रेनगनों का मुकाबला किया···

कुछ भी कहे भोला चैटर्जी। मनोबल नाम की चीज, ज़रा-सी बात मे बनती और बिगड़ती है···

'बेस कैम्प' से 'बेतार-संवाद' प्रेषित करते समय ऑपरेटर लम्बी और ठण्डी सांस लेता है—पहला ही सवाद उत्साहमंजक ?

संवाद भेजने के बाद ऑपरेटर लामा दुश्मन के 'बेतार-सन्देश' 'इंटरसेप्ट' करने मे व्यस्त हो जाता है···उत्तमविक्रम राणा नेश में झूमता हुआ सन्देश दे रहा है, प्रधान मन्त्री ('तीन सरकार') मोहन शमशेर जंगबहादुर राणा को। दिल खोलकर हँस रहा है उत्तमविक्रम। हजोर यो बोलाहे को काग्रेसी कुत्ता हरू···इन पागल (काग्रेसी) कुत्तों के लिए हमारे बैरक के जवान ही काफी हैं। चिन्ता न करें। सब ठीक-ठाक है···

विराटनगर के निवासियों ने 'दुहाई पशुपतिनाथ' रटकर रात काटी। भोर को राणाशाही ब्रेनगन चुप हुई तो फौजी जीपों की गुर्राहट, फौजियों की भारी बूटो को मड़भड़ाहट और क्रुद्ध फौजी अफसरों की कर्कश कण्ठ-ध्वनियाँ—सब मिलकर नगर की गली-गली को कँपाने लगी—मटमट भटं-मर्र—कड़प-कड़प, कड़प-कड़प···ए-बा-ठा-न ! बा-य-ने-ट कि-का !! ···लोड ! फायर !

उत्तेजित फ़ौजियो को आम हुक्म दे दिया है कर्नल उत्तमविक्रम राणा ने। हर घर को घेरकर तलाशी ली जा रही है। मारपीट, लूटपाट और गिरफ्तारी···औरतों और बच्चों का सम्मिलित रुदन, घायलो की चीख-पुकार से आकाश भर रहा है। सड़को पर अमानुषिक अत्याचार के हृदयविदारक दृश्यों को देखकर सुबह का सूरज सिहर-सिहर जाता है।

नेपाली काग्रेस के, छोटे-बड़े सभी सदस्यों के नाम 'मौत का परवाना' जारी कर दिया गया है—"देखते ही गोली मार दो !" किन्तु, दोपहर तक सारे नगर को छान डालने के बाद भी नेपाली कांग्रेस का कोई सदस्य नही पकड़ा गया। एक बच्चा भी नही।

कर्नल ने कहा—"उनकी औरतों से कहो, अपने-अपने घरवालों को दो दिन के अन्दर हाजिर करें। नही तो औरतो को ही 'धुन' दिया जायेगा

अर्थात् कैद किया जायेगा ''सबकुछ किया जायेगा।"

परिवार के बच्चों और बीमारों को रात में ही निरापद स्थान में भेजने के बाद, 'सानो आमाँ, (श्रीमती दिव्या कोइराला) अकेली बैठी हैं, 'कोइराला-निवास' के एक कमरे में—अपने इष्टदेव के विग्रह के सामने। किन्तु, रह-रहकर 'जाप' में बाधा पडती है। ध्यानमन्दिर में 'परमगुरु' की प्रतिमा आज प्रतिष्ठित नहीं हो पा रही। बार-बार गिरिजा का मुस्कराता हुआ मुखड़ा आँखों के आगे मूर्त्त हो जाता है। कानों के पास उसकी मीठी पुकार प्रतिध्वनित हो जाती है—आमाँ ! म आयें··· कौन ? किसने पुकारा ? को हो ?···कोई नहीं ? भ्रम, या मेरा बेटा रात की लड़ाई में देश की मिट्टी को 'प्यारा' हुआ ?

माँ का हृदय हाहाकार कर उठता है। वह दौड़ी हुई परमगुरु स्वर्गीय पति, कृष्णप्रसाद कोइराला की तसवीर के पास आती है और धडाम से गिर पड़ती है—"बल दो प्रभु ! शक्ति दो··· हुजूर ! तुम देखते रहना—तुम्हारे सभी बच्चे-बच्चियाँ लड़ाई के मैदान में है।"

सानो आमाँ सुनती है, वे कह रहे हैं—"तुम्हें बार-बार अपने बच्चो की ही याद क्यों आती है ? नेपाल-जननी के इतने बच्चे अपनी जान देने आये हैं। उनकी याद नही आती ?"

"आती है हुजूर, आती है, नही तो, यहाँ बैठी क्यों हूँ ?"

'कोइराला-निवास' के चारों ओर घेरा डालकर बैठे हुए सिपाहियों को अचरज होता है—निवास के अन्दर पाँव रखने का साहस किसी अफ़सर में नही···कौन आये ? वहाँ बैठी गुर्रा रही होगी—सिंहनी माँ ! १६४६ के मजदूर-आन्दोलन के समय की झिड़कियाँ अफसरों को याद हैं —"लाज नहीं आती ? बड़े अफसर हो ? संसार के किसी सभ्य देश के नगण्य-नागरिक के सामने भी सिर ऊँचा कर सकोगे कभी ? स्त्रियो से बात करना नहीं जानते ? कैसी शिक्षा दी है तुम्हारे राणा-पिताओ ने ?"

"सानो आमाँ। सानो आमाँ खोया ? ···कहाँ है माताजी ?"

रोती, छाती पीटती औरतो की टोली आयी—"खोय, मेरो छोरो (बेटा) खोय ? मेरा लोग्ने (पति) खोय ? सानो आमाँ !"

बताओ, माताजी ! मेरा बेटा कहाँ है ? कहाँ है मेरा स्वामी ? ···

माताजी, तुम्हारे लड़कों ने मेरे भोले-भाले भाई को बहकाकर हमारा सत्यानाश कर दिया···फौजियों के हाथ से हमें कौन बचायेगा ? कौन हमारे सतीत्व की रक्षा करेगा ?

पाँच-पाँच शेर बच्चों की माँ—नेपाल की इस महिमामयी माता का गला भर आया—"तुम मुझसे पूछने आयी हो। लेकिन, मैं किससे पूछूँ कि मेरे बच्चे कहाँ है ? कौन बतायेगा कि मेरे बच्चे जीवित हैं या काल के गाल में चले गये ?···यह देश, नेपाल-माता भी यही सवाल पूछती है—कौन बचायेगा मुझे ? मैं पूछती हूँ, क्या तुम्हारे घर में कलछी, छनौटा, सड़सी, दाब, खुकरी, कुल्हाड़ी, कुदाल कुछ भी नही ? सेफ्टीपिन और बाल मे खोंसनेवाले काँटे तो हैं···"

औरतों की टोली में, दनुजदलिनी दुर्गा आकर खड़ी हो गयी मानो। नेपाल की ललनाएँ प्रतिज्ञा करती हैं : 'राणाशाही जुल्म और अत्याचार का डटकर मुकाबला करूँगी। सिर नही झुकाऊँगी।'

थकी-हारी, मुक्तिसेना की पहली टुकड़ी विराटनगर से सात कोस पूरब रँगेली बाजार मे विश्राम कर रही है। रँगेली की जनता के उत्साह, आतिथ्य और देशभक्ति के भाव से मुक्तिफ़ौजियों को अपार बल मिला है।

'बेस-कैम्प' से सन्देशवाहक आया है···रात के संघर्ष में, एक दर्जन से भी अधिक राणाशाही फौजी मारे गये हैं···अन्धाधुन्ध गिरफ्तारियाँ हो रही हैं। सभी मिलें बन्द हैं। सारा शहर वीरान है।

और सबसे उत्साहवर्धक समाचार : हेडक्वार्टर से बेतार संवाद आया है—मित्र-देश से आनेवाला अस्त्र-शस्त्र इस मोर्चे पर—यानी ईस्टर्न कमाण्ड मे शीघ्र ही पहुँचनेवाला है। सिंगापुर, मलाया और बर्मा के प्रवासी नेपाली, गुर्खे सैकड़ों की संख्या मे इस मुक्तियुद्ध में शरीक होने के लिए आ रहे हैं।

हिमालय एयरलाइंस का विशेष वायुयान मित्र-देश से चल चुका है। उसे कहाँ उतारा जाये ? हवाई जहाज़ कुछ ही क्षण मे भारत पहुँच जायेगा। हिमालय एयरलाइंस के कर्त्ता-धर्त्ता महावीर शमशेर कलकत्ते में परेशान हैं। बार-बार वह सुवर्ण शमशेर से पूछ रहे हैं—"हवाई जहाज

कहाँ उतारा जाये ?" सुवर्णजी, महावीर शमशेर को समझाते हैं—"पटना से अभी देवेन्द्र बाबू का ट्रंक आयेगा···लीजिए, आ गया ट्रंक···"

मित्र-देश से 'सामान' लेकर आते हुए विशेष वायुयान को 'गुप्त-बेतार-यन्त्र' से सूचना दी जा रही है : रोबट···रोबट···दिस इज़ पीटर कालिंग रोबट···हैलो रोबट···यस···डाइवर्ट, टवार्ड्स···डाइवर्ट वेस्ट पैटना स्ट्राइप—ओवर।

विशेष वायुयान में बैठा मुक्ति-सैनिक नक्शे पर निगाह दौड़ा रहा है। वह पूछता है : हैलो पीटर पीटर···वेस्ट ऑफ पैटना···डू यू मीन विहटा? ···ओवर।

दो

'बेस-कैम्प' से आये हुए सन्देशवाहक ने और भी कई महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दीं : 'बी० पी०' गोरखपुर की ओर—नेपाल-भारत-सीमा के इलाके का भ्रमण करके पटना लौट आये हैं। सुवर्णजी कलकत्ता में बैठकर काठमाण्डो की गतिविधि परख रहे हैं, अस्त्र-शस्त्र का प्रबन्ध कर रहे हैं। गणेशमानसिंह को जिस उद्देश्य से काठमाण्डो भेजा गया था—उस योजना को कार्यान्वित करने के लिए, फिर किसी साहसी साथी को भेजना आवश्यक है। महाराजाधिराज से सम्पर्क स्थापित करने के पहले ही गणेशमानजी गिरफ्तार हो गये। कल से नेपाल कांग्रेस की आवश्यक और विशेष बैठक हो रही है।

सबकुछ सुनकर भग्न मनोबल गेरिलों की रक्त-धमनियों में फिर उष्ण-लहरी आयी। तुरन्त, 'एक्शन-कमेटी' बैठी। तुरन्त फ़ैसला लिया गया—"आज रात को ही पूर्वी-तराई के दूसरे प्रमुख नगर 'झापा' पर छापा···"

दोपहर के भोजन के बाद, केशवप्रसाद कोइराला के नेतृत्व में मुक्ति-सेना के सिपाहियों ने झापा के लिए कूच किया।

तराई के पशु-पक्षियों ने अचरज से देखा—ये बन्दूकवाले किस जानवर के शिकार मे निकले हैं? सरपट दौड़ रहे हैं तराई के बीहड़ पथ पर? एक मूर्ख बाघ से नहीं रहा गया, शायद। अचानक गुर्राकर झपटा। गेरिलों की गति में बाधा पड़ी, जरा। फिर, पलक मारते ही रास्ता साफ

हो गया। तराई के पशु-पक्षियों को फिर अचरज हुआ : ये कैसे शिकारी हैं ? मृत शिकार को यों ही उपेक्षित, असुरक्षित छोड़कर चले गये।

विराटनगर की चढाई की उड़ती हुई खबर अफवाहों के रूप में झापा तक पहुँच चुकी थी। दिन-भर उत्तेजना और आशंका-भरी बातें कह-सुनकर झापा के नागरिक रात को गहरी नींद में सोये हुए थे। स्थानीय सरकारी अधिकारियों, फौजी अफसरों को विश्वास है, यह सारी गड़बडी और 'गोलमाल' विराटनगर तक ही है। यहाँ कोई खतरा नही।

नेपाली कांग्रेस के स्थानीय कार्यकर्त्ता से आवश्यक सूचना प्राप्त करने के बाद टुकड़ी के नायक के० पी० कोइराला ने एक गेरिले को चुपचाप कोई आदेश दिया। गेरिला धरती पर पेट के बल लेटकर रेंगने लगा—रेंगता हुआ चला गया, ट्रेजरी तक।

तराई के घने अन्धकार मे—पेड़ की फुनगियों पर कैसी लाली छा रही है ? लाली बढ़ती ही जाती है···आग ?

आग ! आग लगी है आग···! !

तुमुल कोलाहल-कलरव के बीच झापा ट्रेजरी धू-धूकर जल रही है। अब बैरक मे भी आग लग गयी ? कैसे लगी आग ? आग, आग ! दौड़ो—बुझाओ—बचाओ ! ! !

जय नेपाल !

जनता रुक गयी। जनता समझ गयी, यह जनक्रान्ति की आग है। इसको बुझाने के बदले इसमें घी डालना ही जनता का पुनीत कर्त्तव्य है। भाइयो ! यह राणाशाही मेधयज्ञ है—आहुति डालो इसमें। सदियों से नेपाल की छाती पर बैठकर रक्त चूसनेवाली राणा सरकार का नाश हो।

झापा का बड़ा हाकिम (गवर्नर) क्या करे ? पहले आग बुझाये या पहले···? पहले आगे बुझाओ ! हुक्म हुआ।

राणाशाही पलटन के जवान, राइफल रख, बालटी और घड़े लेकर दौड़े आग बुझाने। आग बुझानेवाले और आग लगानेवाले—एक देश के लोग। एक ही बोली उनकी। इसलिए आग लगानेवालों की बात उनकी बुद्धि मे तुरन्त आ गयी—नही ! इस आग को बुझाना सचमुच पाप है। आग बुझानेवाले कई सिपाहियों ने बालटी रख दी—"दाजु भाई हो !

देशवासियो ! मत करो प्रतिरोध। इस बर्बर, जालिम सरकार की रक्षा हम क्यों करें ?—चलो, चलो !! जो घर जारे अपना, चले हमारे साथ।

राणा के इन पलटनों ने एक स्वर में कहा—जय नेपाल !!

अस्त्रागार से अस्त्र-शस्त्र और ट्रेजरी से खजाना निकालने में इन्हीं नये गेरिलाओं ने आगे बढ़कर सहायता की।

आकाश को छूती हुई, लपलपाती लपटें।

फायर ! बड़ा हाकिम अपनी मूर्खता पर बौखलाया—सामने की झाड़ी के उस पार !

इसके बाद शुरू हुआ दोनों ओर से गोलियों का आदान-प्रदान। दोनों ओर से एक खास तर्ज और ताल पर गोलियाँ दगने लगीं। कल रात की लड़ाई और आज की लड़ाई में कुछ अन्तर है। आज मुक्तिसेना के जवान अधिकारपूर्वक अस्त्र-संचालन कर रहे हैं। कल दुश्मन के पास ब्रेनगन थी। आज गेरिलों के पास स्टेनगन और मौजर हैं। इसलिए आज की लड़ाई का सुर-ताल भिन्न है।

गेरिले रात-भर डटे रहे। रात-भर ही नहीं—दूसरे दिन भी वे घेरा डाले रहे। तीसरे पहर दलपतियों ने अपने साथियों को 'रिट्रीट' करने का संकेत दिया और तब देखा गया कि दशरथ के एक हाथ की हड्डी चकनाचूर हो गयी है, किन्तु वह राइफल थामे हुए है। बनारस विश्वविद्यालय का छात्र दशरथ चौधरी अपने मित्र विश्वबन्धु के लिए, विश्वबन्धु के देश की मुक्ति के लिए जान दे सकता है। जान देने के लिए ही वह आया है।

दो मुक्तिसेनानी के प्राण यहाँ की धरती की गोद में भी जुड़ाये। 'बेस-कैम्प' में लौटकर मुक्तिसेनानियों ने सुना—हेडक्वार्टर से बेतार सन्देश आया है : कल ही वर्किंग कमेटी की आवश्यक बैठक है। मित्र-देश से आये हुए अस्त्र-शस्त्र को हर मोर्चे पर पहुँचाने की शीघ्र ही व्यवस्था हो रही है। सुवर्णजी, सूर्यप्रसाद उपाध्याय, बी० पी० और महेन्द्रविक्रम शाह—विभिन्न अंचलों का दौरा समाप्त करके आज ही हेडक्वार्टर पहुँच रहे हैं। मलाया, बर्मा, सिंगापुर और कोहिमा के मोर्चों पर लड़ते हुए अनेक अनुभवी गुर्खों ने स्वेच्छापूर्वक इस संग्राम में भाग लेने की इच्छा प्रकट की है। पूर्वी मोर्चे के दलपतियों के साथ 'प्रचार-अधिकारी' की भी बुलाहट है,

हेडक्वार्टर में — विशेष बैठक के सामने 'विराटनगर-झापा' की छापामारी की रपट प्रस्तुत करने के लिए

बिकू तथा अन्य घायल साथियों को पटना भेज दिया गया है। दलपतियों के साथ पूर्वी मोर्चे के प्रचार-अधिकारी धड़कते हुए दिलो से हेडक्वार्टर की ओर चल पड़े—पता नही, 'हाई कमान' का क्या रुख हो। सभापतिजी और देवेन्द्रबाबू तो अप्रसन्न नहीं हैं, किन्तु सुवर्णजी और बी० पी० ?

नवम्बर १९५० !! नेपाल के इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगा।

पटना के दैनिक पत्रों में विरानटगर और झापा की चढ़ाई के समाचार पढ़कर, नेपाली कांग्रेस के सभापति मातृका प्रसाद कोइराला के अभिनन्दन और जनक्रान्ति के समर्थन मे—पटना के प्रवासी नेपालियों ने एक विशाल सभा का आयोजन किया। और, जब सभा समाप्त हुई तो सैकड़ो प्रवासी नेपाली मुक्तिसेना मे नाम लिखा चुके थे—छात्र, डाक्टर, व्यापारी, बुद्धिजीवी, पत्रकार, श्रमजीवी—सभी वर्ग के नेपाली।

विराटनगर और झापा पर चढ़ाई के इस चमत्कारपूर्ण प्रभाव को देखकर स्वयं विराटनगर और झापा के दलपतियों को भी अचरज हुआ। प्रचार-अधिकारी साहित्यिक गेरिला ने मुस्कराकर अपनी गलती स्वीकार की —"कामरेड चैटर्जी, आपने ठीक ही कहा था, संघर्ष असफल नही होता कभी।"

नहीं, कोई अप्रसन्न नहीं। एक-एक सभी शीर्षस्थ नेता आये। कमाण्डर-इन-चीफ़ मेजर सुवर्ण शमशेर, ईस्टर्न कमाण्ड के चीफ़ बी० पी० कोइराला—सभी प्रसन्न हैं। काशी में भी प्रवासी नेपालियो ने इस संवाद को सुनकर एक बड़ी सभा की। वहाँ भी भरती हुए हैं सैकडों नेपाली युवक।

"घाइते साथी हरु कस्तो···घायल साथियो का क्या हाल है ?"—सुवर्णजी ने पूछा।

"दुश्मन को एक दिन भी चैन मत लेने दो—गेरिला-युद्ध की यह पहली शर्त है। और, तराई से लेकर पहाड़ियों के एक-एक गाँव तक मुक्तिफ़ौज का सन्देश जितना शीघ्र हो पहुँचाने की व्यवस्था, धुआँधार प्रचार···"

अचरज की बात ! जिस नेपाल में राणाशाही की नजर में 'हिन्दी टाइपराइटर मशीन' रखना जुर्म हो और उसकी सजा आजीवन कारावास, गांधीजी से मुलाकात करने की सजा कठोर कालकोठरी की यातना (और···एक बार एक कृषि-विशेषज्ञ ने 'मकई की खेती' शीर्षक अपने लेख मे एक ऐसी पंक्ति लिख दी कि उसे भयानक खूंखार व्यक्ति समझकर राणाशाही ने उसको तुरन्त गिरफ़्तार करके जेल मे डाल दिया। वह पंक्ति है : "यह दुख की बात है कि नेपाल के सभ्य और श्रेष्ठवर्ग के लोग 'विदेशी कुत्ते' पालने मे जितनी दिलचस्पी लेते हैं उसका शतांश भी यदि 'देसी खेती' में···")—उसी नेपाल मे आधुनिक 'साज-सरंजाम' से लैस 'मुक्ति-युद्ध' के गेरिलें मैदान मे उतर पड़े हैं—वायरलेस, वायुयान, आटोमैटिक अस्त्र-शस्त्र।

गेरिले दलपतियों को लेकर नेपाली मुक्तिसेना का 'बौनेनजा' उड़ा—पूर्वी मोर्चे की ओर झापा, रँगेली, विराटनगर, धरान, धनकुट्टा, सप्तरी, महोत्तरी, राजविराज की आबादी मे—आकाश से इन परचो को बरसाना होगा···मुक्तिसेना के सर्वाधिनायक तथा नेपाली कांग्रेस के सभापति का सन्देश···देशवासियो के नाम, राणाशाही के निरीह सिपाहियों के नाम—"दाजू भाई हो। तपाई को कर्त्तव्य···आपका कर्त्तव्य···आपकी अग्नि-परीक्षा की घड़ी।"

नेपाली कांग्रेस के हेडक्वार्टर पटना में बहुत रात तक कार्यकारिणी बैठी रही। सभी न जाने क्यो तनिक चचल हैं।

सुवर्णजी ने सोने के पहले 'बेतार यन्त्र' के ऑपरेटर से दरयाफ्त किया—"कोई संवाद नही है ?"

"जी नही।"

"यह संवाद कलकत्ता भेज दो। और, देखो। काठमाण्डो को जगाये रखो। बीच-बीच मे मैसेज के लिए पूछो।"

६ नवम्बर की वह रात !!

उधर, 'काठमाण्डो पैलेस', 'नारायणहिटी-दरबार' की एक दीवार पर एक धुंधली 'सिलुएट' (छाया) उभरती है—चंचल छाया। कई छायाएँ स्त्री-पुरुषों की। उत्सुक-आकुल-आतंकित प्रतीक्षा के भाव, सभी छायाओं के

कम्पन से स्पष्ट है। सारा वातावरण थमा-थमा सा। रुकी-रुकी-सी घड़ी। फिर, एक संकेत-भरी सिसकारी हवा में हौले-हौले सिहरन की सृष्टि कर गयी। छायाएँ सतर्क मुद्रा में इधर-उधर ताकती हैं?

पशुपतिनाथ मुस्कराये। दक्षिणकाली ठठाकर हँस पड़ी!! सोया हुआ मोहन शमशेर—कोई भयानक सपना देखकर चीख पड़ा??

फिर, सबकुछ 'फेड-आउट?…'

रात का तीसरा पहर। जमा देनेवाली सर्दी और हिमपात में भी—काठमाण्डो-स्थित नेपाल कांग्रेस के 'गुप्त बेतार केन्द्र' के ऑपरेटर की देह में एक अजीब-सी गर्मी दौड़ गयी है। वह पागलों की तरह 'पटना' को बुला रहा है, 'फ्रिक्वेन्सी' अदल-बदलकर पुकारता जा रहा है—"हैलो वाल्ट डिजनी-वाल्ट डिजनी-डिजनी—इलियट कालिंग वाल्ट डिजनी—येस—ग्रेट न्यूज़—'ठुलो खबर'—हाँ—महाराजधिराज त्रिभुवन—किंग त्रिभुवन—किंग—'के' फार काठमाण्डो, 'आइ' फार इंडिया—एन फार नेपाल—'जी' फार गैन्जेज—अपने पूरे परिवार के साथ इंडियन-एम्बेसी मे चले गये हैं—सकुशल। मोहन शमशेर पागल हो गया है। क्राउन प्रिन्स के तीन-वर्षीय पुत्र को आज ही रात गद्दी पर बैठाने की बात सोच रहा है—प्राइममिनिस्टर के भाई-भतीजे इंडियन-एम्बेसी पर चढ़ाई करने की सलाह दे रहे हैं। काठमाण्डो की हर सड़क पर फौजी तैनात हो रहे हैं—बस, अभी इतना ही। जय नेपाल—ओवर।"

पटना-स्थित गुप्त बेतार केन्द्र का ऑपरेटर परेशान है। सभी उसके सिर पर सवार हैं—एम० पी०, बी० पी०, सुवर्णजी, देवेन्द्र बाबू, सुशीला कोइराला—संवाद सुनकर सभी दौड़ आये हैं। काठमाण्डो से और भी कई बातें पूछनी हैं—"हैलो इलियट…वाल्ट डिजनी कालिंग इलियट…।"

कोई जवाब नहीं?

"स्थानीय संवाद-सूत्रों से पूछो।"

"हैलो पी० टी० आई? काठमाण्डो की कोई खबर…?"

"कौन? देवेन्द्र बाबू? अरे, ग्रेट न्यूज! गजब खबर!!…"

तत्क्षण—ब्राह्मवेला में—वर्किंग कमेटी बैठ गयी। दिल्ली के मित्रों को ट्रंक की लम्बीघण्टी घनघनाकर जगाया गया—"क्यों भाई, दिल्ली का

क्या रुख है ?"

"किंग को लाने की व्यवस्था की जा रही है।"

"कोई विशेष संवाद ?"

"सरदार का बयान सूरज उगने के पहले ही पर साया हो जायेगा। बयान नहीं, बम हैं बम ! !"

मुक्तिसेना के प्रचार-अधिकारी को दो घण्टे के का एक 'प्रोफाइल' प्रस्तुत कर संवादसूत्र को देना है—कहाँ से शुरू किया जाये ?—किस शैली में प्रस्तुत याद आती हैं, स्वर्गीय कृष्णप्रसाद कोइराला (जो सारे के नाम से पुकारे जाते थे) के मुँह से सुनी हुई अने आमाँ—दिव्या कोइराला की बातें—निर्वासित जी

वह, यानी प्रचार-अधिकारी—देशबन्धु ि वाणी को चरितार्थ होते देख रहा है। बचपन की व निर्वासित 'पिताजी', अपने छोटे पुत्र (बालक बी० पी मे देशबन्धु चितरजन दास के अतिथि हैं। अपने देश ने मार्ग ढूँढ रहे हैं—कृष्णप्रसाद कोइरालाजी। कहा था—"कोइरालाजी, आप चिन्ता न करें। विश्वेश्वर—जो एक सेकेण्ड भी चैन से नहीं बैठ करता रहता है, सैकड़ो पेचीदे प्रश्न पूछता है—और ज के खतरनाक आपरेशन को मुस्कराते हुए सह स समय एक बार 'इस्स' भी नही किया जिसने—वह नि अपने देश की बर्बर सरकार का 'तख्ता' पलटेगा। बैठा

सचमुच, बी० पी० कभी चैन से नहीं बैठा। क दो बार क्रान्तिकारी कार्यकलापों से सम्बन्ध रखने के में अंग्रेजी सरकार द्वारा नजरबन्द हुआ। कालेज की बिहार सोशलिस्ट पार्टी का सक्रिय सदस्य—१९४ हजारीबाग सेन्ट्रल जेल में तीन साल तक नजरबन्द। कण्ठ में असाध्य रोग कैंसर लेकर। बम्बई मे, 'टाटा जब तक चिकित्सा होती रही, बिछावन पर लेटे-ले

कांग्रेस के संगठन की योजनाएँ बनाता रहा। और, जीवनी शक्ति की जय हुई। असम्भव, सम्भव हुआ। डाक्टरों ने स्वीकार किया—"प्रबल इच्छा-शक्ति ने रोग को रोकने मे सहायता दी है। जड़ से यह दूर न भी हो, कोई बात नहीं। अब प्राण पर कोई संकट नही···"

"मतलब ? मैं काम कर सकता हूँ ?"

डाक्टरों का जवाब—"जी, थकानेवाला कोई काम नही।"

विश्वेश्वर मुस्कराया था, डाक्टरो की राय सुनकर—"थकानेवाला कोई काम नहीं ?···"

'कैंसर इन्स्टीच्यूट' से निकलते ही बी० पी० ने सभी मुक्तिकामी प्रवासी नेपालियो का—नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के लिए आह्वान किया। फलतः कलकत्ते में नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म हुआ। और, इसके डेढ़ माह बाद ही नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेस के सभापति विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला विराटनगर जूट मिल्स, काटन मिल, मैच फैक्टरी के दस हजार मजदूरों की ऐतिहासिक हड़ताल—राणाशाही नेपाल मे पहली हड़ताल—का संचालन करते हुए नेपाल की राणाशाही द्वारा गिरफ्तार हुए। जेल में फिर पुराना रोग उभरा। भीषण रूप धारण किया कण्ठनली के कैंसर ने। महात्मा गाधी ने तत्कालीन प्रधान मन्त्री के नाम अपील की। मुक्त हुए, तीन महीने बाद ही छद्मवेश में काठमाण्डो उपत्यका मे—पाटन, भातगाँव, कीर्तिपुर नगरों में—छिप-छिपकर प्रचार करते रहे। फिर गिरफ्तार। कई महीने की नजरबन्दी के बाद पुन: कारामुक्त। सारे देश में करबन्दी आन्दोलन और सत्याग्रह-संग्राम का बिगुल···

और, अब सशस्त्र संग्राम—आल नेपाल लिबरेशन आर्मी के ईस्टर्न कमाण्ड के चीफ के रूप में—एक्शन कमेटी—में ऐतिहासिक प्रस्ताव पारित कर रहे हैं—"कल ही पीरगंज इलाके में हेडक्वार्टर शिफ्ट किया जाये—और शीघ्र ही बीरगंज पर चढ़ाई का आयोजन—नेपाल की जनता मे, खास कर राणाशाही फ़ौज को—महाराजाधिराज के इस नाटकीय पलायन का कारण, विस्तारपूर्वक समझाकर—विद्रोह के लिए—मुक्तिसेना में सम्मिलित होने के लिए आह्वान···"

आल इण्डिया रेडियो से लौहमानव सरदार पटेल की—बेलौस और

कटु सत्यवाणी प्रसारित हो रही है—"भारत सरकार महाराजाधिराज त्रिभुवन वीरविक्रम शाह देवज्यू को ही नेपाल का नरेश मानती है—मोहन शमशेर द्वारा घोषित, शिशु महाराजाधिराज को कोई पागल ही मान्यता दे सकता है—और, भारतीय वायुसेना का एक वायुयान, महाराजाधिराज को सपरिवार निरापद भारत में ले आने के लिए भेजा जा रहा है। इस कार्य में किसी भी प्रकार के व्याघात को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा।"

मोहन शमशेर—'तीन सरकार'—ने इस समाचार के समय काठमाण्डो बिजलीघर को बन्द करवा दिया। किन्तु, 'बैटरी सेट' पर सरदार का यह सन्देश—नेपाल के कोने-कोने में—मुक्तिकामी नेपालियों के दिलो मे प्रसन्नता की लहरों की सृष्टि करता हुआ—घोषित होता रहा।

घटनाएँ अब जल्दी-जल्दी घटने लगी !!

सभी शीर्षस्थ अपने-अपने क्षेत्र की ओर उड़े !!

तीन

थिरबममल्ल···

मुक्तिसेना के प्रचार-अधिकारी के सामने एक नेपाली युवक की तस्वीर है—प्रियदर्शन, उन्नत प्रशस्त ललाट, उदार-प्रसन्न मुखमण्डल।

मुक्तिसेना के प्रायः सभी छोटे-बड़े नायकों के संक्षिप्त जीवन-वृत्त उसने तैयार कर लिये हैं। फौजी-युनिफार्म में सभी के फोटो पहले ही आ चुके हैं। किन्तु, आज पश्चिमी मोर्चे से मुक्तिसेना के सर्वाधिनायक जनरल सुवर्ण का विशेष संवाद आया है। आदेश है: सभी संवाद-सूत्रों को थिरबमल्ल का 'मैटर' शीघ्र दे दिया जाये। आज ही—एंड डोंट एनाउन्स 'वेदर रिपोर्ट एंड फोरकास्ट' अर्थात् मुक्तिसेना के मूवमेंट और गतिविधियों के बारे में कोई संवाद मत दो।

थिरबममल्ल का 'मैटर' दो-तीन पंक्तियों से ज्यादा और क्या हो सकता है कि यह तेइस-वर्षीय युवक जनरल सुवर्ण का भगिना है और उसने देहरादून सैनिक विद्यालय में फौजी तालीम पायी है तथा अपने मामा तथा अन्य आत्मीयजनों के साथ पिछले कई वर्षों से कलकत्ते में निर्वासित जीवन व्यतीत कर रहा है···नेपाल की मुक्ति के लिए छटपटा रहा है! मल्ल: पैतृक उपाधि, नाम: थिरबम। उम्र: २३···अपने मामा की तरह धीर, गम्भीर और मितभाषी।

'वेदर रिपोर्ट एंड फोरकास्ट'? प्रचार-अधिकारी का कलेजा अचानक धड़कने लगा। खुशी से···तो, क्या···तो, इसका मतलब अगला

एक्शन···अगले एक्शन के लिए···नहीं-नहीं···मुझे यह सब कुछ नहीं सोचना चाहिए यानी किसी संवाद से न प्रसन्न होना चाहिए और न दुखी। कानो के पास एक चेतावनी बार-बार प्रतिध्वनित हो जाती है: 'अपने दिल, दिमाग और मन के दरवाजों पर लटकते हुए तालो को भी बार-बार खीचकर देखते रहना···किसी गोपनसंवाद का एक ही शब्द तुम्हारी असावधानी से बाहर निकलकर एक ही साथ सैकड़ों मुक्तिसैनिकों का सफाया कर दे सकता है। सदा सतर्क, सावधान!!

नेपाल के कोने-कोने से संवाद और समाचार आ रहे हैं—सभी तैयार हैं, सारा देश तैयार है—राणाशाही से जूझने के लिए। प्रचार-अधिकारी समाचारों के आधार पर 'स्टोरी' तैयार कर रहा है···अभी तुरन्त यह तराई अचल के ऊपर···आकाश से हजारों पर्चे गिराकर आया है—"जनता तैयार रहे···उसके नगर और गांव में मुक्तिसेना शीघ्र ही पहुंच रही है···जनता का कर्त्तव्य···महाराजाधिराज को, राणाशाही के बन्धन से मुक्त नेपाल की पावन धरती पर शीघ्र ससम्मान वापस ले आना··· जय नेपाल! जय नेपालनरेश!!

"यह कोइराला क्या है? कामरेड जैसा कोई शब्द?"

नेपाल कांग्रेस के प्रधान-कार्यालय-कैम्प में देशी-विदेशी पत्रकारों की एक छोटी-सी भीड़ जम गयी है, भीड़ लगी रहती है, हमेशा। कोई नयी खबर? ताजा समाचार? ···अगला क़दम?

सभी बड़े नेता और नायक—महाकाल से मेची तक—नेपाल के विभिन्न अंचलो के दौरे पर हैं। अतः बी० पी० के बाल्यबन्धु तथा नेपाली कांग्रेस के अन्यतम सक्रिय सहायक देवेन्द्रप्रसाद सिंह को घेरकर ये तरह-तरह के सवाल पूछ रहे हैं। देवेन्द्र बाबू मुक्तिसेना-प्रचार-अधिकारी को पत्रकारों की मण्डली के सभी सदस्यों से परिचय कराते हुए कहते हैं—"अगले कदम के बारे में हम कुछ नहीं बता सकेंगे। आपके और सारे सवालों के जवाब, मुझे उम्मीद है, यह सही-सही दे सकेगा।"

प्रचार-अधिकारी सबसे पहले पूर्वी मोर्चे से आये हुए टटके समाचारों की 'स्टोरी' प्रस्तुत करता रहा है—"विराटनगर के गवर्नर उत्तमविक्रम राणा ने सभी सुरक्षात्मक व्यवस्था पूरी कर ली है। उन्होंने अपने निवास

को एक सुरक्षित किले में बदल दिया है। दीवार के चारों ओर गहरी खाइयाँ खोद दी गयी हैं। बैरक गोसवारा, माल, अमीनी कचहरियाँ, बाजार आदि प्रमुख स्थानों के आस-पास ट्रेंचों का जाल बिछा दिया गया है। पहाड़ के रास्ते—धनकुट्टा होकर—काठमाण्डो से राणा-सैनिकों की कई टुकड़ियाँ विराटनगर पहुँच चुकी हैं। सूरज डूबने के दो घण्टा पहले से ही 'कर्फ्यू' लागू हो जाता है। विराटनगर से जोगबनी तक जानेवाली सड़कों पर कई 'चेकपोस्ट'…।"

प्रचार-अधिकारी हर सवाल को घुमा-फिराकर 'पूर्वी मोर्चे' की ओर मोड़ देता है। बात दिल्ली की हो या काठमाण्डो की—उसको वह किसी तरह विराटनगर तक पहुँचा देने की चेष्टा करता है। पिछले दिन से ही वह सभी का ध्यान पूरब की ओर 'डाइवर्ट' कर रहा है। आज से सभी अखबारों में इसी तरह के संवाद प्रकाशित हुए हैं। सभी की निगाहें, नेपाल के नक्शे के पूर्वी हिस्से पर केन्द्रित हैं। कलकत्ता के पत्रकारों का एक दल जोगबनी पहुँच चुका है।

"दिल्ली के अखबारों में महाराजाधिराज त्रिभुवन की तस्वीरें—कनाट प्लेस में खरीदारी करते हुए—छपी हैं…" एक पत्रकार बोला।

प्रचार-अधिकारी ने तुरन्त समाचार दिया :

"महाराजाधिराज त्रिभुवन के सकुशल भारत पहुँचने का समाचार पाकर मोरंग जिले के गाँव-गाँव में दीपावली मनायी गयी। विराटनगर तथा धरान-धनकुट्टा के मन्दिरों में विशेष पूजा…जोगबनी में छात्राओं ने 'चिरायुं रहुन—चिरायुं रहुन श्री पाँच प्रभुज्यु चिरायुं रहुन…सूर्यचन्द्र झैं अटल रहुन प्रभु छाओस कीर्ति महान'—समवेत स्वर में गाते हुए एक विशाल जुलूस…"

पत्रकारों के प्रश्न :

"अधिकांश गेरिल्ला दलपतियों के नाम के साथ कोइराला जुड़ा हुआ…यह कोइराला क्या है ? कामरेड जैसा कोई शब्द ?"

"कोतपर्व नेपालियों का कैसा पर्व है ?"

"सुवर्ण शमशेर किस वर्ग के राणा हैं ? 'ए' या 'बी' या 'सी' ?"

इसके अलावा कई चिढ़ानेवाले प्रश्न। प्रचार-अधिकारी तनिक भी

अप्रतिभ नहीं होता। पिछले चार-पाँच वर्षों के अनुभवों से वह जान चुका है कि कौन-कौन-सी 'न्यूज एजेंसी' और 'पत्रिका' और पत्रकार नेपाली कांग्रेस के प्रति सहानुभूतिशील हैं और किन पत्रों, संवादसूत्रों और संवाददाताओं को राणा सरकार के भारतीय एजेंटों ने 'धर्मभ्रष्ट' कर दिया है। वह एक ऐसे 'श्रमजीवी पत्रकार' को भी जानता है जो पिछले चार-पाँच साल में 'कोइराला' शब्द को भी कभी सही-सही न लिख सका, न बोल सका—'कोरेला' अथवा 'कोरियाला' या 'कोयलावाला' या 'कोलियारा'…एक साहब हैं जो बी० पी० के सोशलिस्ट होने के कारण नेपाल के जन-आन्दोलन और मुक्ति की सारी प्रचेष्टाओं को 'सोशल डेमोक्रेटों' और साम्राज्यवादियों का व्यक्तिगत 'मामला' मानते हैं, नेपाली कांग्रेस के हर कदम को 'अप्रगतिशील' और 'रिएक्शनरी' घोषित करते हैं और शाम को थ्री-एक्स-रम के मात्र एक पेग के बाद ही उनके सिर पर 'विश्व का एकमात्र हिन्दू राष्ट्र' का भूत इस कदर सवार हो जाता है कि 'मार्क्सिस्ट' बोली छोड़कर अवधूतों की भाषा में बातें करने लगते हैं, अतः प्रचार-अधिकारी सतर्क और गम्भीर होकर सवालों के जवाब दे रहा है, एक-एक कर:

"कोइराला, नेपाल के उपाध्याय ब्राह्मणों की एक उपाधि है। यों, नेपाल में अर्जुनवृक्ष को कोइराला…अर्जुनवृक्ष नहीं देखा कभी? पटना में ही कई पेड़ हैं…आयुर्वेदिक निघण्टु के अनुसार जिसको कुटज और जिसके बीज को 'इन्द्रजौ'…जी हाँ, एक वनौषधि जिसके सफेद फूलों के गुच्छ में बकाइन के फूल जैसी कटु-मधु मृदु मन्द-मन्द गन्ध होती है…उत्तर विहार और मोरंग की तराई में जिसको 'कोरैया फूल' कहते हैं…महाशय, इसके उपाधि बन जाने के पीछे भी ठीक बाटलीवाला, बन्दूकवाला, अथवा नेहरू या लोहिया की तरह…मैंने स्वयं डाक्टर लोहिया को 'पब्लिक-मीटिंग' में प्रसंगवश कहते सुना है—'मेरे पूर्वजों में कोई लोहे का कारोबारी रहा होगा जिसके प्रताप से यह 'लोहिया' उपाधि चल पड़ी हो।' सम्भव है, किसी उपाध्याय-पण्डित के दरवाजे पर या पिछवाड़े में कोइराला का पेड़ रहा हो और वह 'कोइरालावाला पण्डित' के रूप में तथा उसके वंशज 'कोइराला' के रूप में प्रसिद्धि पा गये हों…"

आफिस सेक्रेटरी ताजा 'संवाद' दे गया—"जोगबनी बेस-कैम्प में

गोरिल्लाओं ने धूमधाम से 'कृष्णप्रसाद कोइराला स्मृतिदिवस' का पालन फौजी ढंग से किया। सलामी दागी गयी, बिगुल पर मातमी धुन बजा···"

"अब कोतपर्व···यह कोई पावन-पर्व नहीं, एक नारकीय और जघन्य कुकृत्य का नाम है। 'तीन सरकार' अर्थात् प्रधानमन्त्री की गद्दी को हथियाने के लिए *निकटतम अथवा भावी उत्तराधिकारी की छल-बल-कपट-कौशल* से हत्या करके जंगबहादुर राणाओं ने प्राय: 'रक्तरंजित कोतपर्व' का पालन किया है···जी, मैं यह नहीं कह सकता कि अंग्रेजी के 'कू' (तख्तापलट) से इसका कोई सम्बन्ध है। सम्भव है, हो भी। किन्तु कोतपर्व की अनेक कहानियाँ मैंने सुनी हैं—सपरिवार भोज में निमन्त्रित करके भोजन-पान में जहर मिलाने से लेकर सीधे खुकरी से हमला करके सारे परिवार को 'काँचिगल'···अर्थात् कत्लेआम के अनेक उदाहरण मिलते हैं।···भाई ने भाई को मारा, पिता ने पुत्र को मौत के घाट उतारा, पुत्र ने पिता की जान ली और माँ ने अपनी कोख के बेटे का गला घोंटकर 'कोतपर्व' मनाया···इस बार एक 'महाकोतपर्व' असफल हुआ है। अगर महाराजाधिराज त्रिभुवन एक मिनट भी देर कर देते तो मोहन शमशेर और उनके भाई-भतीजे मिलकर श्री-५ वीरविक्रम शाह देव के वंशवृक्ष को निश्चय ही निर्मूल···अभी काठमाण्डो में धूमधाम से 'जश्न' मनाया जाता होता, शराब की नदियाँ बहती होतीं और सार्वजनिक रूप में जुआ खेलने के लिए सात दिनों की सरकारी छुट्टी की घोषणा हो चुकी होती···मारा, मारा—*'तीया' दाँव हमारा !!"*

पी०टी०आई० के दफ्तर से फोन आया है—दिल्ली से तीन सौ भारतीय सैनिक वायुयान के द्वारा—इंडियन एम्बेसी की रक्षा के लिए—काठमाण्डो जा रहे हैं, अभी-अभी···

"अब पिताजी के बारे में···" प्रचार-अधिकारी अपने दोनों हाथों को जोड़कर श्रद्धा और भक्तिपूर्वक अपने कपाल से छुवाता है—"भारत का बच्चा-बच्चा मोहनदास कर्मचन्द गांधी को 'बापू' कहता है न···ठीक उसी तरह, नेपाल का प्रत्येक चैतन्य नागरिक कृष्णप्रसाद कोइराला को 'पिताजी' ···नेपाली क्रान्ति के जनक स्वर्गीय कृष्णप्रसाद कोइराला ने राणाशाही के विरुद्ध क्रान्ति की पहली चिनगारी जगायी और अपनी जान देकर उस

आग को जलाये रखा। १९४२ में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के सिलसिले मे इधर (भारत मे) 'बापू' आगाखाँ के राजभवन मे नजरबन्द थे और उधर (नेपाल मे) 'पिताजी' काठमाण्डो की एक कालकोठरी मे। बन्दी अवस्था मे ही उनकी मृत्यु हुई…कहने का लोभ संवरण नही कर पा रहा हूँ कि जिस दिन 'पिताजी' गिरफ्तार हुए थे, मैं 'कोइराला-निवास' मे ही था। चरण स्पर्श कर प्रणाम करने गया तो उन्होंने हाथ की हथकड़ी दिखला हँसते हुए पूछा था—'हाउ डू यू लाइक इट…?' जी हाँ, 'भारत छोड़ो' आन्दोलन के सिलसिले मे ही—भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम में सक्रिय सहायता करने और सहानुभूति रखने के जुर्म में—राणाशाही ने उन्हें नजरबन्द करके—अग्रेजी सरकार के हुक्म का वफादारी से पालन किया…एक लम्बी कहानी है…"

"रुकिए मत…कीप आन टेलिंग…थामावेन ना मशाय,"—पत्रिका का प्रतिनिधि कहता है—"अद्भुत एवं आश्चर्यजनक…महत्‌जीवन-कथा…"

"कहानी लम्बी है। मैं पिताजी के जीवन की एक झाँकीमात्र ही दे सकूँगा…आज से चालीस-पैंतालीस साल पहले की बात है…

'नेपाल के तत्कालीन 'तीन सरकार' चन्द्र शमशेर जंगबहादुर राणा इंगलैण्ड गये थे। वहाँ अपने सम्मान मे आयोजित एक भोज-सभा में भाषण देते हुए उन्होने अग्रेज राजनेताओं को एक कीमती सलाह देने की 'कृपा' की ('तीन सरकार' जो कुछ करें, उनकी प्रत्येक क्रिया—खाना-पीना-सोना—के साथ 'कृपा' शब्द जोडकर नही बोलने या लिखनेवाले को तुरन्त चालान कर देने का हुक्म है, हुक्मीराज नेपाल मे…हुक्मीराज अर्थात् जहाँ 'तीन सरकार' के मुँह से निकला हुआ कोई भी हुक्म कानून का रूप ले लेता है)…'महानुभावो, आप लोगों ने हिन्दुस्तान के हर शहर मे कालेज और हर गाँव में स्कूल खोलने की अबाध अनुमति दे दी है और आप यह आशा भी रखते हैं कि हिन्दुस्तान के लोग 'स्वराज्य' की माँग न करें…मेरे देश मे देखिए! स्कूल-कालेज की बात दूर—एक पाठशाला तक खोलने की इजाजत हम नही देते। मेरे देश में, मेरे परिवार यानी राणाओं के बच्चे की पढाई के लिए स्थापित 'दरबार स्कूल' के अलावा कोई 'चटसार' तक

नहीं···सुख और चैन से शासन करना है तो प्रजा को मूर्ख बनाकर रखिए···'

"युवक कृष्णप्रसादजी को, उनके एक उदार अंग्रेज मित्र ने पत्र लिखकर इस 'भोजभाषण' की सूचना दी है। उसने लिखा है—'तुम्हारे 'तीन प्रभु' की इस कीमती सलाह को सुनकर कई मान्य सदस्य बहुत मुश्किल से अपनी हँसी को रोक पाये थे ···'

"कोइरालाजी पत्र को पढ़कर उत्तेजित, पिंजड़े में बन्द बाघ की तरह छटपटाते रहे। उनका गौर दिव्य 'मनुहार' अपमान से सांवला हो गया है। कई दिनों तक इसी अवस्था में रहने के बाद उन्होंने दो पंक्तियों का एक 'विनती-पत्र' तीन सरकार की सेवा में भेजने के लिए तैयार किया··· 'निवेदन है, मैंने नेपाल मे शिक्षा-प्रचार का व्रत लिया है। अत: मुझे अभी मोरंग जिला की तराई और पहाड़ियो के गाँवों में पाठशाला खोलने की अनुमति देने की कृपा करें। शिक्षा-प्रचार के लिए मैं अपना धन-जन और जीवन समर्पित कर दूंगा।'

"'विनतीपत्र' का कोई उत्तर नही आया। श्री-तीन-सरकार चन्द्रशमशेर जंगबहादुर राणा ने कृपा नही की। कोई सरकारी चिट्ठी नही मिली। किन्तु सरकारी रुख का पता चल गया। मोरंग के गवर्नर ने चुपचाप आकर बतलाया—'तीन सरकार की 'कोपदृष्टि' कोइराला-निवास पर पड़ गयी है।' सुनकर वे मुस्कराये और अपनी नववधू से कहा—'दिव्या, तुमने भी व्रत लिया है न ? तैयार हो जाओ।'

"दशहरा के अवसर पर, प्रत्येक वर्ष 'कोइराला-निवास' से 'तीन प्रभु' की सेवा मे स्वस्ति की डाली भेजने की भी पुरानी प्रथा चली आ रही थी। उस बार कृष्णप्रसादजी ने 'डाली' में रखवाया—रेशमी वस्त्र के स्थान पर एक गरीब नेपाली का सहस्रछिद्रवाला 'सरवाल' (नेपाली पाजामा) और स्वर्ण-मुद्राओ की थैली मे एक कानी कौडी भी नहीं। मात्र, कागज का एक पुर्जा, जिस पर लिखा था—'महाप्रभु ! आपकी प्रजा को एक जून पेट-भर भोजन भी मयस्सर नही। कपड़े के नाम पर, लज्जा-निवारण के लिए एक हाथ की लंगोटी तक नहीं···विद्या-बुद्धि से हीन वे···'

"तुरन्त सरकारी हुक्म आया—'इस पागल पण्डित-दम्पति को पिंजड़े

में बन्द करके—पहाड़ी रास्ते से काठमाण्डो भेजो। मोगलान (हिन्दुस्तान) होकर नहीं। इसकी सारी सम्पत्ति जब्त कर लो।'

"विराटनगर के गवर्नर चुपचाप आये, रात में। अनुनय-भरे स्वर में भरे गले से गिड़गिड़ाकर उन्होंने प्रार्थना की—'आप जिद्द मत पकड़ें, कृपया। आपके गिरफ्तार होने का क्या अर्थ है, जानते हैं? नेपाल में प्रकाश की पहली किरण को हमेशा के लिए बुझा देना…यह तर्क करने का समय नहीं। आज रात ही, अभी ही—सीमा पार करके आप दोनों 'मोगलान' चले जाइए…मेरी विनती है…'

"पति-पत्नी ने तराई की पगडण्डी पकड़ी। आकाश का एक तारा टूट-कर गिरा और राह दिखा गया…बीस वर्षों तक विदेश में, हिन्दुस्तान और मारिशस के नगर नगर में भटकते रहे—निर्वासित कोइराला-दम्पति! तीन सरकार ने बार-बार वायसराय से निवेदन किया—कोइराला को तुरन्त गिरफ्तार करके नेपाल भेज दिया जाये। वायसराय ने जब-जब कोइराला-दम्पति के विरुद्ध कार्रवाई करनी चाही—सर तेजबहादुर सप्रू और मोतीलाल नेहरू जैसे प्रसिद्ध विधि-विशेषज्ञों ने उन्हें निरस्त किया…' चन्द्र शमशेर के बाद भीम शमशेर प्रधानमन्त्री हुए तो सबसे पहले उन्होंने कृष्णप्रसाद कोइराला को स्वदेश वापस बुला भेजा। जिस गवर्नर ने कृष्ण प्रसाद को चुपचाप 'मोगलान' की सीमा में भगा दिया था—उनका नाम मृगेन्द्र शमशेर था और वह भीम शमशेर के पुत्र थे। और, सुवर्ण शमशेरजी मृगेन्द्र शमशेर के पुत्र हैं…भीम शमशेर ने उन्हें शिक्षा-प्रचार की अनुमति ही नहीं, सरकारी सहयोग का वचन दिया, बाजाब्ता 'लाल' मोहर लगाकर …कोइराला-दम्पति स्वदेश वापस लौटे। सबसे पहले, विराटनगर में आदर्श विद्यालय की स्थापना…फिर पहाड़ और तराइयों में घूम-घूमकर पाठशालाएं खुलवाते रहे…स्मरण रहे, नेपाली कांग्रेस के सभापति और ईस्टर्न कमाण्ड के चीफ—बी०पी० के अलावा, मोर्चे के दो सौ छापामारों में, डेढ़ सौ उसी आदर्श विद्यालय में शिक्षा पाये हुए छात्र हैं…'फिदवी' भी उसी विद्यालय का एक नगण्य…सो, ऐसे थे नेपाल के पिताजी और, भीम शमशेर के पौत्र सुवर्ण शमशेर—नेपाल की गद्दी के सीधे हकदार—न जाने कितने 'कोतपर्वों' से बाल-बाल बचकर—अब कलकत्ता में निर्वासित-

जीवनयापन कर रहे हैं। जघन्य 'कोतपर्व' के बदले सशस्त्र क्रान्ति की तैयारी मे—नेपाल में जनतन्त्र लाने के लिए—लगे हुए हैं। सर्वस्व होम करने का संकल्प करके बैठे हैं।"

एक स्थानीय संवादसूत्र के अधिकारी का सवाल—"लेकिन, नेपालियों के मुक्ति-संग्राम में आप···यानी···आप या देवेन्द्र बाबू···अथवा कोई भी भारतीय क्यों सक्रिय भाग ले···मतलब, आप लोग क्यों···?"

प्रचार-अधिकारी, इसका कोई सीधा जवाब देने के बदले सवाल करता है—"महाशय, आपने पहले यह क्यों नही पूछा कि कृष्णप्रसाद कोइराला ने, भारतीय स्वतन्त्रता-आन्दोलन में भाग लेकर, क्यों अपनी जान दे दी ?···उनके पुत्रों ने क्यो जेल-यातना का वरण किया—भारत की आजादी की लड़ाई मे ?"

'बेस-कैम्प' से एक एस० ओ० एस० आया—"हैंडग्रेनेड फेंकने की ट्रेनिंग लेते समय काँछी मैंयाँ बुरी तरह जख्मी हो गयी हैं। तुरन्त—'एला-फाई प्लेन' भेजिए···"

तीन बजे भोर को एक मीठा सपना देख रहा था—प्रचार-अधिकारी, कि वायरलेस ऑपरेटर ने झकझोरकर जगा दिया—'जय नेपाल'। वेस्टर्न फ्रंट से समाचार आ रहा है—"वीरगंज लिबरेटेड···कैप्चर्ड···"

देवेन्द्र बाबू, सुशीला कोइराला तथा अन्य साथियो से घिरा हुआ ऑपरेटर दनादन कागज पर लिखे जा रहा है। ट्रांसमीटर से 'बीप-बीप ···बी···प···बीप-बी···' ध्वनि निकल रही है—"जनरल सुवर्ण ने वीरगंज पर चढ़ाई के लिए तेईस-वर्षीय युवक थिरबममल्ल को मुक्तिफौज का परिचालक नियुक्त किया···थिरबममल्ल की सेना ने बारह बजे रात को वीरगंज पर हमला किया···राणा के फौजियों ने मुकाबला किया। किन्तु वे अधिक देर तक टिक नही सके। वीरगंज के गवर्नर ने आत्म-समर्पण कर दिया है। जनरल ने तेजबहादुर को वीरगंज का मिलेटरी-गवर्नर नियुक्त किया है।"

"बीप···बीप···बीप···थिरबममल्ल भीषण रूप से घायल···उनकी देह में दुश्मन के सात बुलेट···रक्सौल के डंकन अस्पताल मे मुक्तिसेना के इस वीर योद्धा ने 'वीरगति' पायी···बी···बीप···बीप···"

"आह!"

ऑपरेटर ने फिर सन्देश 'डिकोट' करके प्रचार-अधिकारी के सामने रख दिया—"डोंट ग्रनाउन्स मल्लाज डेथ न्यूज···थिरबममल्ल की मृत्यु के संवाद को अभी प्रकट मत करो···"

आफिस सेक्रेटरी किंकर्त्तव्यविमूढ होकर खड़ा है। वह क्या करे? दफ्तर के ऊपर 'विजय' का झण्डा फहराये अथवा झण्डा झुका दे?

मुक्तियुद्ध—मुक्तिफौज, मुक्ति, मुक्ति···

सभी भाषाओं के दैनिक पत्रों के मुखपृष्ठ पर मोटी सुर्खियों में वीरगंजविजय की खबर—वीरगंज पर मुक्तिसेना का कब्जा···वीरगंज लिबरेटेट···वीरगंज कैप्चर्ड···वीरगंज···वीरगंज···वीर···।

उत्तर-आकाश में युद्ध के दमामों के गम्भीर शब्द निरन्तर गूँजने लगे। सभी की निगाहें उत्तर की ओर मुड़ गयीं। खबरें आने लगीं—आ रही हैं लगातार—दिन-रात तार से, बेतार से।

मुक्तिसेना की 'एडवान्स फोर्स की टुकड़ी' के साथ मार्च करता हुआ—पी०टी०आई० के विशेष संवाददाता लैजरस का आँखों देखा विस्तृत विवरण: "नवम्बर की सर्द रात में सोये हुए वीरगंज के निवासियों की नींद मुक्तिवाहिनी की राइफलों और ब्रेनगनों की दहाड़ से टूटी। सहस्र कण्ठों से 'जिन्दाबाद' के नारे प्रतिध्वनित हुए। स्थानीय जनता ने मुक्तकण्ठ से 'राणाशाही के नाश' होने की कामना प्रकट की—'राणाशाही मुर्दाबाद!!' ···बिजली की तरह चमक और कड़ककर—मुक्तवाहिनी, राणाफौज पर टूटी। विस्मित, हतबुद्धि राणा की फौज में पहले भगदड़ मची। फिर तुरन्त ही सँभलकर प्रत्याक्रमण में वे गोलियाँ बरसाने लगे। किन्तु, मुक्तिसेना के युवक कमाण्डर थिरबममल्ल की रणचातुरी और आजादी के दीवाने मुक्तियोद्धाओं की अदम्य वीरता के आगे वे बहुत देर तक नहीं टिक सके। सुबह होने के पहले ही वीरगंज के 'बड़ा हाकिम' ने आत्म-समर्पण कर दिया और वीरगंज के प्रमुख सरकारी भवन पर—नेपाली कांग्रेस का चार सितारोंवाला लाल झण्डा—विजयपताका—फहराने लगा··· और, रात की इस लड़ाई का संचालन करते हुए मुक्तिसेना के कमाण्डर थिरबममल्ल बुरी तरह घायल होकर रक्सौल के डंकन अस्पताल में···"

मुक्तिवाहिनी के सर्वाधिनायक मेजर जनरल सुवर्ण ने नेपाली कांग्रेस के लोकप्रिय कार्यकर्त्ता तथा मुक्तिसैनिक तेजबहादुर को वीरगंज का मिलेटरी गवर्नर मनोनीत किया है। नेपाली कांग्रस के सभापति ने भारत सरकार से इस नये राष्ट्र को मान्यता देने की अपील की है।

और, 'संग्राम-समिति' की ओर से शहीद थिरबममल्ल की मृत्यु की घोषणा की जा रही है···नेपाली कांग्रेस की केन्द्रीय संग्रामसमिति अपनी पार्टी तथा अपने देश की जनता को गहरे दुख के साथ सूचना देती है—पच्छिमी मोर्चे के अधिनायक थिरबममल्ल ने वीरगंजविजय के सिलसिले में कल रात वीरगति पायी···!!

सद्यःमुक्त वीरगंज की धरती पर—लिबरेटेड एरिया में—थिरबममल्ल का अन्तिम संस्कार फौजी कायदे के मुताबिक हो रहा है—बिगुल पर मातमी धुन और राइफलों से सलामी···

धन्य, धन्य मुक्त भूमि, मुक्तियुद्ध, मुक्तिसैन्य, मुक्ति, मुक्ति, मुक्ति···!

नेपाली प्रजातन्त्र—अमर हो!

वीरगंज के मिलेटरी गवर्नर, नेपाली प्रजातन्त्र के प्रथम फौजी शासक तेजवहादुर के कार्यालय तथा अन्य सरकारी इमारतों के अलावा वीरगंज के घर-घर पर—महलों से लेकर झोपड़ों के मुंडेरे पर—चार सितारों वाले लाल झण्डे—बड़े-छोटे, असंख्य—लहराने-फहराने लगे। हर्षोत्फुल्ल नागरिक जयघोष करते हैं। प्रजातन्त्र के स्वागत मे गाते-बजाते हैं।

उधर, काठमाण्डो में—जंगबहादुर के वंशजों की अनेकानेक अंग्रेजी उपाधियों और सैकड़ों सामन्ती सम्मान तथा वीरता के स्वर्ण-रौप्य-कांस्य पदकों की चमक अचानक गायब हो गयी है। कालिमा पुत रही है—उनके दरबारों के इर्द-गिर्द। राणातन्त्र का अन्तिम 'नामलेवा' मोहन शमशेर दाँतों को पीसता हुआ कसमें खा रहा है—"मरगत खानँछू···मैं इनका रक्त पीयूंगा···इनकी बोटियो का कलेवा करूँगा···कांग्रेसियों का कच्चा मांस···हा-हा-हा···मार्टार···फील्डगन···मशीनगन···ब्रेनगन···मरगत खानँछू···!"

मेजर जनरल सुवर्ण ने अब पूर्वी मोर्चे की तैयारी का गुप्त आदेश दिया है। नेपाली कांग्रेस का मुख्य कार्यालय तथा केन्द्रीय संग्राम-समिति,

प्रचार-विभाग के दफ्तर नेपाल की पूर्वी तराई में स्थानान्तरित हुए। युगों से 'परदेश-परभूमि' में निर्वासित प्रवासी नेपालियों के विशाल समूह अपनी जन्मभूमि की ओर लौटे। और, मुक्तिसेना के करीब साढ़े चार सौ सैनिक —पूर्वी तराई मे ही कहीं—पूर्वी मोर्चे की नाकेबन्दी मे जुट गये।

अब गेरिला छापेमारी नही, बाजाब्ता युद्ध···मुक्तियुद्ध, मुक्तिसैन्य, मुक्तिफौज, मुक्ति···नेपाली···ने-पा-ली···अगि बढ़दा बढ़दै जाउ क्रान्ति-झण्डा ले—क्रान्ति-झण्डा ले—ने-पा-ली···नेपा···ली···ई···!!

मुक्तिसेना के सर्वाधिनायक सुवर्ण तथा ईस्टर्न कमाण्ड के चीफ़ बी० पी० शिविरों का परिदर्शन कर आये हैं। रणक्षेत्र मे उनकी उपस्थिति मुक्तिसैनिकों के दिलो में उत्साह और उमंग भर जाती है। प्रत्येक मुक्ति-संग्रामी के कानों के पास सर्वाधिनायक सुवर्ण की गम्भीर वाणी सदा गूँजती है : "साथी हरूहो ! ···आप इसको हमेशा याद रखें कि राणाशाही मात्र नही, यह नेपाल मे प्रजातन्त्र चाहनेवाले प्रत्येक नेपाली की लड़ाई है···हम नेपाल की जनता के सैनिक हैं···

युद्ध, युद्ध, युद्ध···मुक्तियुद्ध, युद्ध···ने-पा-ली-नेपा···ली···ई···इ!!

पच्छिमी मोर्चे पर फिर गोलाबारी।

मारात्मक अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित मोहन शमशेर की सेना—राह के दोनो ओर के गाँवो को लूटती-खसोटती, आतंक फैलाती हुई—नीचे की ओर—समतल तराई की ओर बढ रही है। मुक्तिसेना के जवान आगे बढ़-कर अमलेखगंज में उनसे जाकर टकराते हैं। प्रबल प्रतिरोधात्मक युद्ध। घमासान लड़ाई ?

राणाशाही अफसरों का मोहभंग हुआ। नाके-बन्दी और अस्त्र-संचालन के ढंग देखकर वे समझ गये—ये 'नवसिखुए' सिपाही नही—रेगुलर···अनुभवी लड़ाके हैं ! ···मशीनगन नही, अब मोर्टार फायर !!···

राणाशाही तोप दहाड़ने लगी—धाँ···य ! धाँ···य !

मुक्तिसेना के सर्वाधिनायक को दिन-रात कभी चैन नही। उन्होने नींद नही आनेवाली गोलियाँ खा ली हैं, शायद। उन्होंने फिर एक मोर्चे को जगाया—नया मोर्चा। तीसरा मोर्चा—पच्छिमी नेपाल के प्रमुख नगर नेपालगंज पर—नेपाली कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी महेन्द्रविक्रम शाह के

नेतृत्व में मुक्तिसैनिकों ने धावा बोल दिया।

ड्रम-ड्रम ड्रम···मुक्तियुद्ध···युद्ध!!

महाकाल से मेची तक युद्ध के नगाड़े बज रहे हैं। नेपाल की धरती पर जययात्रा करते हुए मुक्तिसैनिकों के कदम—उसी ताल पर बढ रहे हैं—धरती के चप्पे-चप्पे को मुक्त करते हुए।

राणाशाही फौज—अन्धाधुन्ध गोले बरसाती हुई—भ्रमलेखगंज तक पहुँचने में सफल हुई। किन्तु, तब तक मुक्तिसेना का कमाण्डर-इन-चीफ सुवर्ण पच्छिमी नेपाल के दूसरे नगर भैरवाहा में एक और मोर्चा स्थापित कर चुका था। भैरवाहा में के० आई० सिंह के जवान कई दिनों से आदेश की प्रतीक्षा में 'कछमछा' रहे थे। हुक्म पाते ही वे दुश्मनों की सेना पर टूट पड़े। रणभेरी भैरवाहा के आकाश-पाताल में भी गूँजने लगी।

सारे नेपाल में भूचाल···हिलती-डोलती 'तीन सरकार' की गद्दी पर झकोले खाता हुआ मोहन शमशेर क्रोध से चिल्लाता है—रगत खानैछ··· रक्त चाहिए। और, उसकी रक्तपिपासा को मिटाने के लिए—मुक्ति-फौजियों का टटका खून लाने को—काठमाण्डो से रोज राणाशाही फौज की एक टुकड़ी मार्च करती हुई चल पड़ती है—फबानी, भैरवाहा और नेपालगंज की ओर···!

मेजर जनरल सुवर्ण ने उपयुक्त अवसर देखकर—'वार काउंसिल' में विराटनगर पर चढ़ाई का प्रस्ताव रखा। सर्वाधिनायक की रणनीति के अनुसार विराटनगर का मोर्चा महत्त्वपूर्ण और निर्णायक होगा। दुश्मन को पच्छिम में पूरी तरह उलझाकर—पूरब में पूरी शक्ति के साथ आक्रमण।

'वार काउंसिल' में, शीर्षस्थ नायकों के अलावा मोरंग जिला नेपाली कांग्रेस के कई जिम्मेदार कार्यकर्त्ताओं को भी शरीक किया गया है। शिव-हरि, तारिणी, विश्वबन्धु, शिवजंग, और भोला चैटर्जी एकमत हैं: विराटनगर पर चढ़ाई करने का यही सही समय है। वातावरण हमारे पक्ष में है। विभिन्न मिलों के दस हजार मजदूर हमारा साथ देने को तैयार है—वे सभी नेपाली कांग्रेस के साधारण सदस्य हैं···गाँव के किसानों में हमारा संगठन मजबूत है···विराटनगर की जनता हमारी प्रतीक्षा कर रही है।

मुक्तिसेना के गुप्तचर विभाग ने उत्तमविक्रम राणा की सारी तैया-

रियों का पूरा लेखा-जोखा संग्राम-समिति के सामने प्रस्तुत कर दिया है—बाज़ाब्ता नक्शे के साथ।

ईस्टर्न कमाण्ड के चीफ़ अब पूर्वी मोर्चे के नये अधिनायक की ओर देखते हैं। नया अधिनायक : बर्मा से आया हुआ, ब्रिटिश सेना का अवसर-प्राप्त अफसर जी० बी० सुब्बा उर्फ याकयुम्बा।

याकयुम्बा ने इस इलाके मे एक सप्ताह रहकर एक अनुभवी फौजी की दृष्टि से सबकुछ देख-परख लिया है। यों, उसके मुखड़े पर सदा मुस्कराहट अंकित रहती है। किन्तु, संग्राम-समिति मे अपनी राय जाहिर करते समय उसके चेहरे पर एक अपूर्व गम्भीरता छा जाती है। सैनिक-सुलभ अनुशासित वाणी में वह अपना मत प्रकट करता है : "हमारा मौजूदा लोकवल निर्णायक-आक्रमण के लिए यथेष्ट है। किन्तु हमें कम-से-कम पाँच सौ राइफल चाहिए···"

"कम-से-कम पाँच सौ राइफल और?"—वार काउंसिल मे शरीक अधिकांश साथियों के चेहरों के रंग अचानक उतर गये—"कहाँ से आयेंगी इतनी राइफलें?···न राधा को नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।"

सर्वाधिनायक सुवर्ण ने अधिनायक याकयुम्बा से बहुत ही सहज ढंग से कहा : कम-से-कम पाँच सौ राइफल हम आपको देंगे।"

याकयुम्बा ने तुरन्त उठकर सर्वाधिनायक को फौजी सलामी दी। सर्वाधिनायक ने अब संग्राम-समिति के विशेष आमन्त्रित साथियों की ओर अर्थपूर्ण दृष्टि से देखा। वे सभी चुपचाप खेमे से बाहर चले गये—चकित, प्रश्न।

ने-पा-ली-ई-ई-नेपा-ली-ई···!! रात आधी बीत चुकी है और पूर्वी मोर्चे के शिविरों में मुक्तिसैनिक 'रतजगा' कर रहे हैं। बड़े-बड़े बक्सों से राइफलें निकाली जा रही हैं। मित्र-देश से आयी हुई राइफलें और प्रचुर मात्रा में ०३ बुलेट। सारे शिविर में—शिविर के साढ़े पाँच सौ मुक्ति-सैनिकों की देह में उत्तेजना की लहर दौड़ रही है। वे तैयार हो रहे हैं। कोई आकर इनका 'साज-सिंगार' देखे। बूट-पट्टी बाँधते हुए, कमर के बेल्ट को कसते हुए—वे गुनगुना रहे हैं—एक सबसे मधुर गीत, जययात्रा का प्रसिद्ध गीत—नेपाली! 'नेपाली···रक्त माँगता है आज···मुक्तियुद्ध,

मुक्तियुद्ध···!

एक प्रोज्ज्वल तारा पूरब आकाश मे चमक उठा। पाँच सौ मुक्ति-फौजियो के लोहे के टोपों तथा राइफलों की सगीनो पर इस सितारे की चमक—'टलकिछ'—अर्थात् जगमगा उठी। मुक्ति-सैनिको को दो कालमों में बँट 'जययात्रा' का आदेश दिया, अधिनायक याकथुम्बा ने !

वे क़दम से कदम मिलाते हुए विराटनगर शहर की ओर चल पड़े। विराटनगर जूट मिल के पास पहुँचकर पाँच सौ राइफलो ने अपनी भाषा मे 'जयध्वनि' की—ट्ठाँय ! ···जय नेपाल !!

पाँच सौ मुक्ति-सैनिको के मुक्त कण्ठ की आवाज ध्वनित होकर गूँजी—जय नेपाल !!

मुक्ति-फौज मुक्ति-फ़ौज, मुक्ति, मुक्ति—नेपा-ली ! नेपाली !!

मुक्तिसेना ने सबसे पहले जूट मिल, फिर काटन मिल और मैच फैक्टरी पर कब्जा किया। जोगबनी से विराटनगर शहर को जोड़नेवाली दोनों—सदर और कच्ची—सड़को के किनारे राणाशाही फ़ौज के चेक-पोस्ट पर तैनात सन्तरियों ने राइफलो की आवाज तथा हजारों मानव-कण्ठ की जयध्वनियों से ही अन्दाज लगा लिया—वे आँधी के तिनके की तरह उड जायेंगे। मुक्तिसेना के मैच फ़ैक्टरी के पास पहुँचने के पहले ही—वे सभी चेकपोस्ट छोड़कर गवर्नर उत्तमविक्रम के 'किला-निवास' मे एकत्रित हो चुके थे।

कदम से क़दम मिलाती, मुक्तिवाहिनी की दोनों टुकड़ियाँ आगे बढ़ रही हैं। मुक्तियोद्धाओं के प्रत्येक पदचाप पर नेपाल की धरती मुक्त होती जा रही है। मुक्त हो रही धरा, मुक्त हो रहा गगन—मुक्त जन मगन, कदम मिला करके चल रहे—"राणाशाही मुर्दाबाद !"

'बाजार अड्डा'—विराटनगर शहर के प्रवेशद्वार के पास मुक्तिसेना ने पुन: जयघोष किया। राइफलों ने अपने सचालकों के स्वरों में इस्पाती निनाद भर दिया—जय नेपाल ! ···ट्र-ट-ठाँ···य···ठाँय···!!

मुक्तिवाहिनी निर्विघ्न आगे बढ़ती जा रही है : सरकारी इमारतो तथा राणाफ़ौज द्वारा खोदी गयी खाइयों पर कब्जा करती हुई—दो रास्तो से, दो दिशाओं से उत्तमविक्रम के किले की ओर—सरकारी हेड-

क्वार्टर की ओर।

सदर सड़क के शनिहाट की ओर बढ़नेवाली टुकड़ी—'गोलचा हाउस' के सामने 'तिराहे' पर पहुँची तो राणाशाही फ़ौज की राइफलें प्रतिरोध के स्वर मे बरस पड़ी—ठाँय-ठाँय-ठाँय-ठठाँय।

मुक्तिफौज के दूसरे 'कालम' की गति का अवरोध उत्तमविक्रम के किले के मुंडेर पर फिट—मशीनगन ने किया—खुले मैदान के दक्षिण। मजबूत चारदीवारी के अन्दर, निरापद स्थानो मे बैठे राणा के फौजियो ने—दक्षिण और पच्छिम की ओर मशीनगनों और ब्रेनगनों की गोलियो की झड़ी लगा दी—अविराम।

मुक्तिफौज के दोनो कालमो ने कुछ क्षणो तक तो धुआँधार जवाब दिया। बाद मे, दोनो कालमों के नायकों ने राणाशाही फौज की इस उन्मत्त गोलाबारी का तत्काल मुकाबला करना उचित नही समझा। वे राणाफौज द्वारा खोदी गयी खाइयों मे आश्रय लेने के लिए बाध्य हो गये···

"रक्षा करो पशुपति, हे दन्तकाली···!

"जय वराहदेव···!"

"रक्षा करो···जय नेपाल!"

विराटनगर की जनता अपने-अपने घरो में बन्द त्राहि-त्राहि कर रही है। शहर के अधिकांश परिवारो ने कई दिन पहले शहर छोड़ दिया है। जो रह गये हैं, वे हर 'फाइरिंग' पर दहल रहे हैं। सबसे ज्यादा भयभीत हैं—राणाशाही की चाकरी (जी-हजूरी) करनेवाले, विर्तेवाले (बिना माल-गुजारी दिये ही सैकड़ों एकड जमीन के जागीरदार), चोरबाजारी से रातों-रात करोडपति-लखपति बन जानेवाले काले व्यापारी, पेंशनभोगी, सरकारी कर्मचारी।

"रक्षा करो···"

खिड़कियो को अच्छी तरह बन्द करके भी खरदारनी निश्चिन्त नही। 'हुजुरवाजे' अर्थात् खरदारबाजे—पेंशनभोगी वृद्ध, भरी हुई बन्दूकें लेकर बन्द जनाना फाटक पर बैठे है। मुकुन्दे, बड़ा बेटा ऊपर तिजोरी वाले कमरे में 'भरुआ बन्दूक' (पुरानी किस्म की, जिसमे गज से बारूद

भरा जाता है) लेकर, मानबहादुर के साथ बैठा हुआ है। पुष्पा और गैंवी, दोनों रजाई में दुबके, पलंग पर पड़े हैं। दोनों ही रजाई छोड़कर माँ के आँचल में छिप जाना चाहते हैं···

फड़र्र-र्र-र्र-र्र···!

गुड़गुड़म···धाँय-धाँय !!

टटटटटटट ! टटटटटटटटटटट···!!

ठाँठाँय-ठाँयठाँय—ठाँय-ठाँय···!

पुराने बैरक के पास फाइटिंग चल रही है! ···खरदार साहब आवाज़ परखकर फिसफिसाकर कहते है—"घोर फाइटिंग चलदैछ।"

खरदारनी अपने सात महीने के शिशु तीरथ को कलेजे से चिपकाकर —पलंग और ट्रंको के बीच की जगह मे बैठी हुई है—मानो ट्रेंच मे बैठी हो। उसका बायाँ हाथ पलंग पर पुष्पा और गैंवी के सिरहाने है और दाहिना हाथ गोद मे सोये तीरथ के सिर पर। आश्चर्य, तीरथ निर्भय गटर-गटर कर दूध पी रहा है···लेकिन, मुकुन्दे जो ऊपर है···रक्षा करो। शायद, उसने खिड़कियों को ठीक से बन्द नही किया हो। फुलवारी की ओर खुलनेवाली खिड़की की चिटखनी जरा ढीली थी···रक्षा करो··· और, 'हुजुरबाजे' फाटक पर क्यो हैं ? उन्हे अन्दर आ जाना चाहिए। 'भानसाघर' (रसोईघर) के टीन के छज्जे पर कभी-कभी गोलियाँ आकर गिरती हैं। पिछले कई दिनों से खरदारनी कह रही थी—जोगवनी या रँगेली के 'कामत' (खलिहान) पर सभी को लेकर···'हुजुरबाजे' की ज़िद, अब सीखें ! और, यह मुकुन्दे ? बहू को कल शाम को मैके भेज दिया। प्रभानानी (पुतोहु) के बाप का घर कर्नल के बँगले की ओर है। आजकल के लडके माँ-बाप की बात एक बार भी अगर मानें···मना किया। नही माने। अब सीखो मज़ा···

"फड़र्र-र्र-र्र-र्र-र्र !"

"गुडगुडम—धाँय, धाँय, धाँय !!"

"टटटटटटटटटटट···!"

"ठाँयठाँय, ठाँयठाँय-ठ-ठाँय···!"

"रक्षा करो···"

"रक्षा करो, जय नेपाल !"

सरदार साहब ने पहचाना—ग्रौरत की ग्रावाज ?

सरदार साहब ने फाटक को तनिक खोलकर पूछा—

"को हो ?…कौन ?"

"म…शिवू की ग्रामाँ…जरनैलनी…"

'जरनैलनी ?…भित्र ग्राउनेस…क्याड़े…जल्दी।"

बुढ़िया भय से थर-थर काँपती हुई ग्रन्दर आ जाती है।

"ग्रौर, जरनैल साहब ?"

"जरनैल साब, कान्छा, नानी—सबै गो।"

"गयो ? कता…कहाँ गये सभी ?"

"कुन्नी…पता नहीं कहाँ…"

"हजुरी, ढोका, खोल,"—सरदार साहब किवाड़ से मुँह सटाकर धीरे से पुकारते हैं—"हजूरी, दरवाजा खोलो।"

पुष्पा ग्रौर गँबी एक ही साथ रजाई फेंककर उठ खड़े होते हैं—"बाउ !"

"को भो ?"—खरदारनी एक हाथ से दरवाजा खोलकर, काँपती हुई पूछती है—"क्या हुग्रा ?"

"जरनैलनी !"

"जरनैलनी ?"

"फड़र्रर्र-र्र-र्र-र्र…"

"जय नेपाल !"

"राणाशाही मुर्दाबाद !"

"कड़प-कड़प कड़प-कड़प, कड़प…"

ग्रचानक टिमटिमाती हुई बिजली गुल ! पुष्पा ग्रौर गँबी माँ के ग्राँचल मे छिप जाते हैं। खरदार साहब फर्श पर बैठकर जमीन पकड़ लेते हैं। खरदारनो फिसफिसाकर जरनैलनी से पूछती है—'उनिहरु घर भित्र पछन के ?"…वे क्या घरों मे भी घुसेंगे ?

खरदार साहब पूछते हैं—"ग्रापका शिबू तो नेपाली कांग्रेस… ?' खरदारनी सिसकारी-भरे शब्दों मे कहती है—"सिस ! …धीरे से।"

बाहर, सड़क पर फौजियों के दौड़ने की आवाज़···?

"जै गयंपति गयंपति···" अर्थात्—गणपति गणपति।

मल्हूरामजी की अवस्था चिन्ताजनक है। राइफलों की आवाज को वे 'बम' गिरने की आवाज समझ रहे हैं और जब तोप दहाड़ती है तो उन्हें लगता है, बाजार का एक-एक कोना उड़कर आसमान में चक्कर काट रहा है। उनका मुँह खुला हुआ है—जबड़े बैठ नहीं रहे हैं। पहली ही 'फाइरिंग' की आवाज़ सुनकर उनका मुँह खुला सो खुला ही रह गया। खुले हुए जबड़े के कारण वे कुछ भी स्पष्ट उच्चारण नहीं कर पाते हैं—पयय, पयय—अर्थात् प्रलय। प्रलयकाल उपस्थित है···लेकिन, तिजोरी छोड़कर वे कहीं नहीं जा सकते हैं। वे चल-फिर सकते हैं। तिजोरी को देखकर उनको लकवा मार जाता है—रुपये, जेवर, सोना···वह लाचार हैं।

"गुड़गुड़म—घाँय! घाँय!!"

"टटटटटट···!"

अब तीन मोर्चे। पहला, गवर्नर के निवास के पूरब-दक्षिण कोने में—सिन्घिया नदी की ओर, सोमप्रसाद नेपाल के घर के पास। दूसरा सदर रोड पर—'तियुहानी' पर···तीसरा, बाजार-अड्डे के पास।

मुक्तिसेना के अधिनायक याकथुम्वा—सी॰ बी॰ सुब्बा राणाफौज के बालू के बोरे और खोदी हुई खाइयों पर कब्जा कर बैठे हैं। ट्रेंचों में छिपे मुक्तिसेना के जवान—घनघोर गोलाबारी के बावजूद—हर मिनट पर बाहर निकलकर 'एटैक' करना चाहते हैं। कवर-फाइरिंग करते हुए आगे बढ़ना चाहते हैं। मगर, किले से अविराम गोलियों की वर्षा हो रही है···वे फिर ट्रेंचों में छिप जाते हैं।

टटटटटट! टटटटटट···

शंकरजंग की माँ, मौसी और छोटी बहन उषा···सभी एक ही कमरे में बन्द हैं। और, हर 'फाइरिंग' पर सोलह-वर्षीया उछल पड़ती है। ठीक शंकरजंग की तरह देह को मरोड़ती है, झटके देकर···अगर, एक राइफल नहीं तो शाटगन भी होती तो···शंकरजंग की माँ और मौसी और भी तेजी से माला फेरने लगती हैं···शंकरजंग गया, हिरण्यजंग गया इसी तरह

ऐंठते-छटपटाते, ताल ठोकते। इस लड़की की 'मति-गति' का भी क्या ठीक! कब निकल जाय—"उषा! त्यस्तो न गर···ऐसा मत करो। खिड़कियों को मत खोलो।"

"आमाँ, मलाई त जान् मन परयो—दाज्युलाई मदद गर्ने···माँ मेरा तो जाने का मन कर रहा है, भैया की सहायता के लिए···"

"त्यस्तो कुरा न गर···ऐसी बातें मत करो!"

"फड़र्र-र्र-र्र-र्र···"

"जय नेपाल!"

अब उषा पगली की तरह नारे लगाने लगती है—"नेपाली कांग्रेस जिन्दाबाद! राणाशाही मुर्दाबाद! प्रजातन्त्र कायम हो।"

"टटटटटटट! टटटटटटटट!!"

मल्हूरामजी 'पयय-पयय' रट रहे हैं। पिछले कंट्रोल के जमाने में—*भारत-नेपाल की सीमा पर—करेंसी नोट के पुल बाँधकर कपड़े-सिमेंट,* किरासन तेल, चीनी की गाड़ियाँ सीमा के इस पार से उस 'पार' करनेवालों में मल्हूराम का नाम सबसे पहले लिया जाता है। हिन्दुस्तान के कितने सरकारी अफसरों और कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं को दावत खिला चुके हैं, चन्दे दिये है···लेकिन, जबड़े बन्द नहीं हो रहे। क्योंकि, गोलियाँ गोदाम के छत पर ओले की तरह गिर रही हैं! झर-झर-झर-झर गोलियाँ दावत और चन्दे नहीं चाहतीं। सीधे जान माँगती हैं। पयय-पयय···

"गुडगुडम···धाँय-धाँय।"

मुकुन्द ने अपना काम बना लिया था···बाप की सारी कमाई तिजोरी से निकालकर बोरियों में बाँधकर मानबहादुर के सिर पर रखा ही था कि खरदार साहब ऊपर के कमरे में आ धमके—"तिजोरी कैसे खुली?"

"हट जाइए। गोली मार दूँगा।"

"भरुआ बन्दूक से पिता की हत्या नहीं हो सकेगी। यह लो, असल बन्दूक···मार डालो···मार डालो सभी को, माँ को, भाई को, बहन को···"

"त्यस्तो करामेर कुरा न गर!"—खरदारनी, पिता-पुत्र के ऐसे

दर्जनों झगड़े दिन में दस बार देख-सुन चुकी है। वह चाहती है कि अभी कोई 'गुलगपाड़ा' नहीं हो अन्दर।

खरदार साहब अपनी बन्दूक और कारतूस की पेटी लेकर निकल पड़ते हैं—"जिसके लिए चोरी किया, वही कहे चोर। अरे, कृष्णप्रसाद कोइराला का मित्र होकर भी मैं आज तक मुँह सीकर क्यों बैठा था? तुम्ही लोगों के लिए?···हजूरी, दरवाजा बन्द कर लो। मैं आज़ादी की लड़ाई मे शरीक होने जा रहा हूँ···लानत है, धन-दौलत और परिवार पर···बेटे की गोली खाकर मरने से अच्छा—युद्धभूमि में दुश्मन से लड़ते हुए मरना···जय नेपाल।"

"ठाँय! ठाँय!!"

"फिल्डगन्स—फायर!"

कर्नल उत्तमविक्रम के 'किला-निवास' के अन्दर भय और मायूसी रह-रहकर घिर आती है। कर्नल के दोनों पुत्र—चारदीवारी के अन्दर—दक्षिण और पच्छिम की ओर—सैन्यसंचालन कर रहे हैं। उन्हें विश्वास है कि धनकुट्टा के रास्ते शीघ्र ही सहायता मिल जायेगी। अतः वे उदारतापूर्वक बुलेट और गोले खर्च कर रहे हैं। किले के अन्दर व्याप्त होनेवाली मायूसी को दूर करने के लिए भी आवश्यक है—अविराम अस्त्र-संचालन।

"फड़र्र्र-र्र-र्र···"

सुबह की रोशनी के साथ राणाशाही फ़ौज की फाइरिंग की गति भी तेज होती जा रही है···अपने-अपने घरों की खिड़कियाँ खोलकर झाँकनेवालों पर, सड़कों पर भागते हुए लोगों को लक्ष्य कर गोलियाँ दागी जा रही हैं। लोग घायल होकर गिर रहे हैं, यत्र-तत्र।

मुक्तिफ़ौज के तीनो मोर्चों पर डटे हुए जवान, राणाशाही गोलियों का समुचित उत्तर देते हैं, रह-रहकर···याकयुम्वा की टुकड़ी ने चाय पीने के बाद—पन्द्रह मिनट तक किले की छत पर—ब्रेनगनों से गोलियाँ बरसायीं और राणाशाही के एक 'गनर' को सदा के लिए चुप करा दिया।

दोपहर को, विराटनगर की आबादी पर राणाशाही मोर्टार के गोले गिरने लगे। एक बार उन्होंने किले से बाहर निकलकर आक्रमण करने का

साहस भी किया। किन्तु, मुक्ति-सैनिकों ने उन्हें फिर किले के अन्दर छिपने के लिए मजबूर कर दिया।

दोपहर को ही जब विराटनगर मे घमासान गोलाबारी हो रही थी—विराटनगर जूट मिल अर्थात् मुक्ति फौज के हेड क्वार्टर में, संग्राम-समिति में सर्वाधिनायक सुवर्ण ने केशवप्रसाद कोइराला को विराटनगर का मिलेटरी गवर्नर मनोनीत किया। मेजर जनरल ने ठीक ही समझा है: अब थोड़ा समय लग जायेगा। युद्ध की अवधि बढ़ेगी।

"त्येसेले मेरो विचार मा", 'लीस्ट ब्लडशेड' मरेर 'विक्टरी' नै असल हो···इसलिए मेरी राय में, न्यूनतम रक्तपात करके विजय प्राप्त करना ठीक है।"—ईस्टर्न कमाण्ड के चीफ बी०पी० अपनी राय जाहिर करते हैं।

अग्रिम मोर्चे से याकथुम्बा ने 'कोड' में संवाद भेजा है: हम डटकर जवाब दे रहे हैं। किले के बाहर एक भी फौजी को कदम नही रखने दिया है···याकथुम्बा, सर्वाधिनायक के अगले हुक्म की प्रतीक्षा कर रहा है।

'संग्राम-समिति' के फैसले के मुताबिक अग्रिम मोर्चे के अधिनायक को आदेश दिया गया: "पूर्ववत् घेरा डाले रहो।"

सर्वाधिनायक ने विश्वबन्धु और शिवहरि को—नागरिकों से सम्पर्क स्थापित करके तुरन्त 'नागरिक सुरक्षा समिति' गठन करने का आदेश दिया है। भोला चैटर्जी की गैरिला-वाहिनी के पचास प्रतिशत जवानों को एडवान्स फ़ोर्स मे लिया है याकथुम्बा ने। चैटर्जी के बाकी गैरिला हेडक्वार्टर में दलपतियों के सशस्त्र अंगरक्षक, कार्यालय के सन्तरी, मुख्यद्वार के प्रहरी, मालखाना, गोदाम, पावर हाउस, प्रयोगशाला, लंगर आदि प्रमुख स्थानों पर तैनात किये गये हैं।

सुसंगठित, साधनसम्पन्न और अनुशासित मुक्तिफौज का प्रधान कार्यालय। कार्यालय के ऊपर, नेपाली कांग्रेस का चार सितारोंवाला बड़ा झण्डा लहरा रहा है।

मुख्यद्वार पर जनता की अपार भीड़, मुख्यद्वार पर सीमेण्ट की मेहराब पर 'श्री जुद्ध प्रभु की जै जै जै' लिखा हुआ था—उसको तोड़ दिया गया है। जुद्ध शमशेर की मूर्ति की गर्दन तोड़ दी गयी है। राणाशाही की हर निशानी, प्रत्येक प्रतीक और चिह्नों को मिटा दिया गया है। जनता

रह-रहकर नारे लगाती है। खुशी से नाच रही, गा रही है।

मुख्यद्वार के पास ही—मुक्तिफौज का 'भरती दफ्तर' खुला हुआ है, भर्ती चल रही है। सामने दो-तीन पंक्तियों मे कतार बाँध क्यू लगाकर खड़े हैं—मुक्तिफौज मे भरती होनेवाले उम्मीदवार, कच्ची उम्र के सैकड़ों प्रसन्नमुख नेपाली जवान।

सभी कार्यालयों के सामने, देवनागरी लिपि मे साइन बोर्ड लटकाये जा रहे हैं: जनस्वास्थ्य, यातायात, नागरिक सुरक्षा समिति, खाद्य तथा आपूर्ति विभाग के दफ्तर···

यातायात विभाग के कब्जे मे तीस ट्रक, बारह जीप, चार स्टेशन-वैगन और चार कारें हैं। एम०जी० अर्थात् मिलेटरी गवर्नर ने शहर के सभी पेट्रोल डीजल पम्पों और डिपो को अपने अधिकार मे ले लिया है। दोनों जूट मिल, सूगर फैक्टरी, काटन मिल के तेल के भण्डार और कोयले के डिपो में सामयिक सैनिक सरकार के सन्तरी तैनात हैं। यातायात दफ्तर में पेट्रोल और डीजल की पुर्जा(कूपन) दिये जा रहे हैं, इसलिए सबसे ज्यादा गुलजार हैं···

ड्राइवरो की मण्डली सबसे ज्यादा उत्तेजित और प्रसन्न है। ड्राइवरो के दलपति गौरमणि को गर्व है: फौजियों के पहले हम ड्राइवरों ने काम किया है। हमे चालीस घण्टे पहले ही राणाशाही हुक्म मिल गया था—चौबीस घण्टे के अन्दर-अन्दर अपनी गाड़ियाँ सरकारी गैरेज में जमाकर दो। हमने उस हुक्म की परवाह नहीं की और मुक्तिसेना की 'जययात्रा' के दो घण्टे पेश्तर हमारे ड्राइवर भाई लोग अपनी गाड़ियों के सामने झण्डा बाँधकर 'रेडी' थे।

जनसमुद्र लहरा रहा है—मुख्यद्वार के सामने। जनता अपने बहादुर नायकों को देखना चाहती है। नारों से आकाश गूँज रहा है। कोलाहल, कलरव, जयकार हठात् रुक जाता है। मोर्चे की ओर से दो गाड़ियाँ धूल का बवण्डर उड़ाती हुई, मुख्यद्वार के पास भीड़ को चीरती हुई पहुँची। अगली गाड़ी स्टेशन-वैगन—'रेडक्रास' का एंबुलेंस है: तीन घायल नागरिक और दो मुक्ति-सैनिक घायल होकर आये हैं। पिछली गाड़ी, जीप पर—चार युद्धबन्दी, राणाशाही फ़ौज के, भागते हुए पकड़े गये हैं।

और भी कई गाड़ियाँ: एम० जी० अपने अंगरक्षकों के साथ आये।

दूसरी गाडी पर, नागरिक सुरक्षा समिति वाले, विश्वबन्धु शिवहरि, शिवजंग भोना चैटर्जी, तारिणी प्रसाद। सभी के चेहरे धूल-धूसरित। किन्तु सभी के ओठों पर ताजा मुस्कराहट।

ध्वनि-विस्तारक यन्त्र से घोषणा की जा रही है—माइयो! आज सन्ध्या तीन बजे—जूट मिल के मैदान मे विशाल सभा होगी, जिसमें नेपाली कांग्रेस के सभापति मातृका प्रसाद कोइराला का भाषण होगा।

"नेपाली प्रजातन्त्र—जिन्दाबाद···!"

ऐतिहासिक सभा! अभूतपूर्व जनसमागम। पन्द्रह हजार से भी अधिक नर-नारियों का सम्मिलित जयघोष हो रहा है। असंख्य झण्डे—चार सितारोंवाले—लहरा रहे हैं।

'बेतार कक्ष' में वायरलेस से सटकर बैठा 'प्रचार-अधिकारी' मोर्चों से आये हुए 'मैसेज' को सिलसिलेवार फाइल करता जा रहा है। 'वार काउंसिल' द्वारा सेन्सर होने के बाद ही इन्हें प्रकाश में लाया जा सकेगा। प्रचार अधिकारी का चेहरा, पच्छिमी मोर्चे के संवाद को पढ़ते समय ज़र्द हो जाता है: वीरगंज की आजादी खतरे मे···राणाशाही ने अपनी बिखरी ताकत को बटोरकर वीरगंज पर अधिकार करने के लिए अन्तिम आक्रमण कर दिया है। सम्भवत: यह संवाद, वीरगंज से प्रेषित 'मुक्तिसेना बेतार केन्द्र' का अन्तिम मैसेज हो।

किन्तु, अभी-अभी पूर्वी मोर्चे से दो टुकड़ियाँ धरान और धनकुट्टा की ओर जा रही हैं—मुक्तिसेना की अग्रिम-विजयवाहिनी की टुकड़ियाँ ···जै नेपाल! प्रजातन्त्र—अमर हो!!

मुक्तियुद्ध-मुक्तियुद्ध-मुक्तियुद्ध-मुक्ति···

२० नवम्बर '५०···

शहीदों की धरती पर राणाशाही फ़ौज ने पुन: सामन्तवाद का झण्डा गाड़ दिया और इसके बाद शुरू हुई पैशाचिक लीला···अस्पताल के मरीजों की, उनके 'बेड' पर ही गोली मारकर हत्याएँ की गयीं···बच्चों, बूढ़ों और अपाहिजों को भी नहीं छोड़ा गया। देखते-देखते सारा वीरगंज श्मशान हो गया!···जलते हुए घर···आर्तनाद···क्रन्दन···और हवा मे जलती हुई लाशों की चिरांइन गन्ध! साकार रौरव नरक के दृश्य: चारों ओर!!

किन्तु राणाशाही फ़ौज की सम्मिलित शक्ति मुक्तिवाहिनी के अटूट मनोबल को तनिक भी भंग नहीं कर सकी। वीरगंज से 'रिट्रीट' करने के बाद वे अन्य मोर्चों पर दूने उत्साह और संकल्प से दुश्मन पर टूट पड़े। वीरगंज के पतन के बाद सारे देश मे मुक्तिसेना की गतिविधि एक ही साथ तीव्र हो गयी।

उस दिन विराटनगर के मोर्चे पर याकथुम्बा के जवानों ने कर्नल उत्तमविक्रम के सिपाहियों को पल-भर चैन लेने नही दिया। सुबह से शाम तक अविराम आक्रमण···!

विराटनगर मोर्चे पर धुआंधार लड़ाई चल रही है और विराटनगर मे चार मील दक्षिण, मुक्ति-सेना के हेडक्वार्टर में—जूट मिल के सामने वाले मैदान में जनसमुद्र उमड़ आया है !! ·· उत्ताल शब्द-तरंग और लहरें, गगनभेदी नारे और जयध्वनियाँ !!

लगता है मोरंग जिला के सारे गाँव—गाँव के लोग उमड़ते आ रहे हैं—सभी दिशाओं से। जहाँ तक दृष्टि जाती है—अपार भीड़, नरमुण्ड ही नरमुण्ड और असंख्य झण्डे लहराते हुए।

विशाल सभा ! अभूतपूर्व जनसमागम !!

चार मील उत्तर—मोर्चे पर तोपों की दहाड़ 'जिन्दाबाद' की गूँज में खो गयी और विशाल जनसभा के ऊँचे मंच पर—'माइक' के सामने नेपाली कांग्रेस के सभापति मातृका प्रसाद कोइराला हाथ जोड़कर प्रकट हुए··· कुछ क्षणों तक वह कुछ भी नही बोल सके। जयध्वनियों की प्रतिध्वनियाँ बहुत देर तक आकाश-पाताल मे मँडराती रहीं। जनता अपनी सेना के सेनापतियों को देखना चाहती है···एक झलक···झाँकी, दर्शन···!

मातृका बाबू ने शुरू किया—"दाजूभाई हो···सबसे पहले आपको यह बता दूँ कि इस सभा में मुक्तिसेना के सर्वाधिनायक मेजर जनरल सुवर्ण अथवा ईस्टर्न कमाण्ड के चीफ़ अथवा मुक्तिसेना के कोई नायक न तो उपस्थित हैं और न होंगे। भाषण देने का तो कोई सवाल ही नहीं पैदा होता। वे लड़ाई के मोर्चे पर हैं। वे युद्ध का संचालन कर रहे हैं। वे इस समय कहाँ हैं, कैसे हैं, किस अवस्था में हैं—हैं भी या नहीं—हम नही कह सकते···"

'जिन्दाबाद-जिन्दाबाद-जिन्दाबाद···जिन्दा···!!" जनता ने इस स्थल पर भाव-विह्वल होकर हार्दिक शुभकामना प्रकट की।

आनन्दातिरेक से उन्मत्त 'अबूझ जनता' तुरत 'बूझ' गयी। उन्होंने एक स्वर से कहा—"ठीक है···आप ही बोलें···हुजूर ही बोलें!"

"भाइयो! अब न तो यहां 'हजुरिया राज' है और न कोई अब यहां 'हुजूर' कहलायेगा। मुक्तिसेना के जवान, राणाशाही के बन्धन से देश और देशवासियों को मुक्त करने के लिए, अपनी जान कुर्बान कर रहे हैं··· नेपाली कांग्रेस के सभापति की हैसियत से मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूँ कि सिर्फ राजनैतिक मुक्ति ही नहीं, हम आर्थिक गुलामी से भी नेपाल की जनता को मुक्ति दिलायेंगे · अर्थात् नेपाल में प्रजातन्त्र···गणतन्त्र··· जनता की सरकार···"

"जिन्दाबाद-जिन्दाबाद-जिन्दा···जैंजैंजैं-जैंजैं···!!"

"मुट्ठीभर राणाओं की सामन्तशाही चक्की में युगों से पिसती हुई जनता गुलामी की बेड़ियों को तोड़ चुकी है। काली रात का अन्त हो चुका है। प्रजातन्त्र का सूरज अब उगनेवाला है। यह नेपाल की सर्वहारा जनता की लड़ाई है। यह जनयुद्ध है। मुक्तिसेना की जीत का मतलब है जनता की विजय, प्रजातन्त्र का उदय···"

"नेपाली प्रजातन्त्र अमर हो!"

"भाइयो, हम अभी लड़ाई के मैदान में हैं। दुश्मन का रू-ब-रू मुकाबला कर रहे हैं। लडाई का हर लमहा नाजुक होता है। मगर, हम यह दावे के साथ कह सकते हैं कि जिस तरह सूरज का उगना सत्य है, हमारी जीत भी उसी तरह निश्चित है। सारी दुनिया की निगाह आज नेपाल पर है···"

"जय नेपाल, जय नेपाल, जय-जय···जैंजैंजैंजैं!!"

उस दिन जिन लोगों ने मातृका बाबू को पहली बार बोलते सुना था और जिन्होंने कई बार उनके भाषण सुने थे, सभी ने एक स्वर से कहा— "ऐसा भाषण कभी नहीं सुना और न इतनी बड़ी सभा हुई कभी नेपाल में!··· पच्चीस हजार सद्य:मुक्त जनता का प्रथम और अभूतपूर्व सम्मेलन!"

सचमुच सारी दुनिया की दृष्टि नेपाल के नक्शे पर है।

तिब्बत पर साम्यवादी चीन के कब्जा के बाद हिमालय की गोद में बसे हुए नेपाल में, समाजवादी बी० पी० कोइराला के नेतृत्व में जनक्रान्ति ने अमरीका को रहस्यपूर्ण चुप्पी साधने के लिए बाध्य कर दिया है।

लेकिन, अंग्रेज चुप नही रहेंगे। मोहन शमशेर ने अंग्रेजी साम्राज्य की रक्षा के लिए नेपाल में गरीब गुर्खों की भर्ती की अबाध अनुमति दे रखी है अंग्रेजों को। अतः अपने स्वार्थ के लिए वे मोहन शमशेर की यथासाध्य सहायता करना चाहेंगे।

और आज रूस के समाचारपत्रों ने नेपाली जनता के इस जनयुद्ध का मखौल उड़ाते हुए कहा है: नेपालियो का यह तथाकथित मुक्ति-संग्राम नेपाल के बुर्जुआ वर्ग द्वारा शासन पर अधिकार करने के लिए छेड़ा गया है। यह सर्वहारा की लड़ाई नही···!!

"भाइयो ! भाइयो !···सामयिक सरकार के जनसम्पर्क-विभाग की ओर से रोजाना बुलेटिन का प्रकाशन आज से शुरू हो गया है। रोज शाम को तीन बजे, दो पन्ने का यह बुलेटिन एक आना में मुक्ति-सेना के स्वयं-सेवकों से खरीदकर पढ़ें···अफ़वाहों पर कान न दें। दुश्मन के गलत प्रचार पर यकीन मत करें···"

'वार कौन्सिल' में अन्तरराष्ट्रीय राजनैतिक दृष्टिकोण और कूटनीतिक दाँव-पेंच पर विचार-विमर्श हो रहा है। सभी के चेहरों पर एक ही प्रश्न अंकित है—"रूस के इस रुख का क्या असर पड़ेगा हमारे संग्राम पर ?"

नेपाल के मुट्ठी-भर कम्युनिस्ट नेता इस लड़ाई मे अब तक नेपाली कांग्रेस के साथ थे। बी० पी० का विश्वास है, रूस की राय जान लेने के बाद निश्चय ही वे इस जनक्रान्ति के विरुद्ध हो जायेंगे।

"मगर वे तो उँगलियों पर गिने जा सकते हैं···"

"हमने उन पर विश्वास करके, धनकुट्टा इलाके की सारी जिम्मेदारी सौंप दी···हमने उन्हे अस्त्र-शस्त्र भी दिया है और सबसे बड़ी बात यह कि हमारी एडवान्स फोर्स को इन्ही लोगों पर भरोसा करने के लिए कहा गया है···"

"और अपने गुप्तचर-विभाग की रिपोर्ट है कि विराटनगर का कम्यु-

निस्ट नेता मनमोहन अधिकारी बीमार पड़कर बाहर नही गया है। पिछले सप्ताह उसे दार्जिलिंग में कई 'तिब्बती-नेपालियों' के साथ देखा गया···"

"विराटनगर के हर मिल की मजदूर कालोनी में उनके 'घोसले' (सेल्स) हैं···"

"कल जोगबनी के बाजार में चन्दरमा सिंह को देखा गया। कम्युनिस्ट पार्टी की बिहार शाखा के और कई लोग···"

"हूँ! सर्वहारा-क्रान्ति!! ···मुश्किल यह है कि हमारे कई समाजवादी साथी भी रूस की बात करते समय इस भ्रम मे पड़े रहते हैं कि वहाँ लेनिन बैठा हुआ है। स्तालिन, मोहन शमशेर और राणाशाही के पक्ष में और नेपाली जनक्रान्ति के विरुद्ध कुछ कह या कर सकता—उन्होंने कभी कल्पना ही नही की···"

कोशी-कछार के मोर्चे के कमाण्डर कुलदीप झा का संवाद लेकर आया है, सवाद-वाहक : धनकुट्टा सेक्टर के सभी संग्रामी, जिन्हें आर्म्स दिये गये थे और खिरियाही-पुल की निगरानी करने का आदेश दिया गया था, वे सब-के-सब आर्म्स-सहित लापता हैं। पुल पर राणा फौज का दखल है··· हम कोशी के किनारे कुसहा घाट के पास मोर्चा लगाकर राणाफ़ौज की प्रतीक्षा कर रहे हैं। धनकुट्टा के विश्वासघाती साथियो ने राणाशाही फौज की खुलकर मदद की है। उनसे सावधान···!

"सावधान! सावधान! ···ले जाइए एक आना में—मुक्ति-सन्देश : प्रजातन्त्र नेपाल की सामयिक सरकार का समाचार बुलेटिन···सावधान, सावधान···दोस्त के वेश मे दुश्मन···जनता सतर्क रहे···पढ़िए, पढ़िए···!"

नेपाली कांग्रेस के 'प्रचार-विभाग' ने अब सामयिक सरकार के 'जन-सम्पर्क-विभाग' का रूप ग्रहण कर लिया है। अब 'पब्लिसिटी आफिसर' या 'प्रचार-अधिकारी' नही—पी० आर० ओ०···पीआरो···पियारे और अन्ततः 'प्रियो बाबू'।

'प्रियो बाबू' के दफ्तर में सबसे ज्यादा भीड़ है। प्रत्येक विभाग में काम करनेवालों के 'परिचयपत्र' यही बनाये जा रहे हैं। मिलेटरी गवर्नर केशवप्रसाद के हुक्म से एलान किया गया है : कल से बिना 'परिचयपत्र'

(आइडेण्टी कार्ड) के, हेडक्वार्टर की चारदीवारी के किसी भी द्वार से कभी भी प्रवेश पाने की चेष्टा करना असम्भव और विपदजनक हो जायेगा। इसलिए सभी विभाग के अधिकारी अपने कार्यकर्त्ताओं के 'कार्ड' सबसे पहले बनवा लेना चाहते हैं। अतः जनसम्पर्क विभाग में सघन जनसमागम, कलरव और कोलाहल। 'किचेन-इंचार्ज' अर्थात् 'लंगर-अधिकारी' मधुसूदन सिंह तारस्वर में चिल्ला रहा है—"तो ठीक है। किचेनवालों का कार्ड मत बनाइए—आज शाम को ही 'टी' टाइम मे ही सभी विभाग के बाबू लोगों को पता चल जायेगा।"

सभी हँसते हैं। उन्मुक्त हँसी की लहरें एक दफ़्तर से दूसरे विभाग में और फिर बाहर सड़कों पर आकर हिलोरें लेने लगती हैं।

चार मील उत्तर—मोर्चे पर फायरिंग होने लगती है। यहाँ शोर-गुल हठात् थम जाता है। सभी उत्कर्ण होकर सुनते हैं—धांय-धांय। यह राणाशाही मोर्टार है···यह चालू हुआ मशीनगन···पगला गया है कर्नलवा क्या जी?···यह···यह···अपनी सेना का जवाब है निश्चय ही···मुक्ति-वाहिनी—तीनों मोर्चों से एक साथ जवाब दे रही है···जय हो! जय हो!!

अधिनायक याकथुम्बा की इच्छा के अनुसार मेजर जनरल ने प्रयोगशाला को 'प्राचीरभजक बमगोले', 'हथगोले', 'धूमजालबम' (स्मोकस्क्रीन बम) प्रस्तुत करने का आदेश दिया है। याकथुम्बा ने काठमाण्डो से आती हुई राणाफ़ौज के लिए तराई में 'बूबी ट्रैप' अर्थात् 'मूरख फन्दा' बिछाने का प्रस्ताव रखा था, किन्तु, मेजर जनरल सहमत नहीं हुए···द्वितीय विश्वयुद्ध की रण-नीति की उपज यह 'बूबी-ट्रैप'—ऊपर से निरापद तथा निर्दोष दिखनेवाली कोई वस्तु, जो छूते ही धड़ाके के साथ फट जाये···नहीं-नहीं··· हमने पराये देश पर चढ़ाई नहीं की है। हम अपनी मातृभूमि को लुटेरों के हाथ से मुक्त करनेवाले मुक्तिसंग्रामी हैं···नो बूबी ट्रैपिंग, हियर···

प्रयोगशालाओं को विस्फोटकों की परीक्षा करने के लिए निर्जन स्थान चाहिए। निर्जन स्थान का सन्धान देना भी जनसम्पर्क विभाग वालों का काम है। लेकिन, पी० आर० ओ० कहता है: 'लिबरेटेड एरिया' (मुक्त क्षेत्र) में विस्फोटन से 'पैनिक'···भगदड़ मच जायेगी। लोग घबराकर

गाँव-घर छोड़कर भागने लगेंगे। इसके लिए या तो 'मिलेटरी गवर्नर' अथवा किसी अन्य उच्च अधिकारी की अनुमति लेना आवश्यक है।

फील्ड हास्पिटल के आपरेशन थियेटर में बिजली की लाइन तुरन्त कैसे लगायी जा सकती है—इसका उपाय शीघ्र बताना या करना भी जनसम्पर्क···?

पूर्णिया जिला सोशलिस्ट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी नरसिंहनारायण सिंह पर नजर पड़ते ही पी०आर०ओ० पुकारता है—"नरसिंह बाबू आपके 'सोशलिस्ट रेजिमेण्ट' के दो सौ साथियों के परिचयपत्रों पर आपका 'काउण्टर सिगनेचर' चाहिए। बहुत सारे कामरेडों की सूरत पहली बार देख रहा हूँ—यहाँ आकर। इसलिए आप तनिक सतर्क होकर···अरे, पता नहीं आपके 'हर-बोलिया दल' में कैसे-कैसे लोग आ गये हो···लीजिए, कामरेड भोलानाथ मण्डल और सरयुग मिश्र भी आ गये हैं। इनकी मदद लीजिए और चटपट, एक घण्टा···"

नरसिंहनारायण सिंह ने मुस्कराकर धीरे-से कहा—"सुनो! इस गाड़ी से मनमोहन अधिकारी आ रहा है। कटिहार से खबर आयी है। बी० पी० को इसकी सूचना तुरन्त दे दो।"

मनमोहन अधिकारी? बी० पी० का आत्मीय है। १९४७ की हड़ताल में बी० पी० के साथ गिरफ्तार होकर कई वर्षों तक एक साथ जेल में रहा, किन्तु सदा अपनी 'कम्युनिस्टी कट्टरता' को बरकरार रखा। बी०पी० हमेशा उसकी कट्टरता की तारीफ अपने ढंग से करते हैं···

गिरिजा और शिवजंग बी० पी० का आदेश पाकर जीप लेकर जोगबनी स्टेशन पर पहुँचे, मनमोहन की अगुआनी करने···बूबी ट्रैप?

पी० आर० ओ० ने अपनी व्यक्तिगत डायरी में उस रात को लिखा: "मनमोहन को नजरबन्द कर दिया गया है। बी० पी० ने कहा, 'मनमोहन की सुरक्षा के लिए ही ऐसा किया गया है, क्योंकि, धनकुट्टा के कामरेडों की करतूत की खबर याकयुम्बा के जवानों को लग गयी है और याकयुम्बा के जवान तो नेपाली कांग्रेस के नहीं हैं और न ही वे किसी पार्टी के लीडर या कार्यकर्ता को पहचानते हैं। वे 'दोस्त' और 'दुश्मन' को गन्ध से ही परख लेते हैं। इसलिए मनमोहन का बाहर रहना उचित नहीं···' तांडागु

किसने कैप्चर ?"

'सोशलिस्ट रेजिमेण्ट' नाम 'अनआफिसियल' है—पी० आर० ओ० का दिया हुआ, स्वयं पी० आर० ओ० सोशलिस्ट पार्टी का सदस्य है और धीरे-धीरे दिल्लगी में ही उसने इस नाम को चालू कर दिया है। नरसिंह नारायण ने 'परिचयपत्रों' पर दस्तखत करने के पहले जब 'चेक' किया तो एक सौ अस्सी सोशलिस्टों में दो आदमी ठग निकले, अर्थात् उन्होंने अपने को सोशलिस्ट बताकर प्रवेश पालिया था। दोनों व्यक्तियों को सामयिक सरकार के पुलिस एवं जेल-अधिकारी शिवजंग के पिता के जिम्मे सुपुर्द किया गया और शिवजंग के पिता ने उनको और घुड़ककर देखा तो दोनों ने तुरन्त क़बूल कर लिया कि वे पूर्णियाँ-सहरसा के एक मशहूर डकैत के दल के हैं। दलपति ने उन्हें हथियार-बमगोले वगैरह चुराने के लिए भेजा था। दोनों कैप्चर्ड हो गये'''चन्द्रप्रसाद नेपाल का बड़ा बेटा तीरथ नेपाल भी कैप्चर्ड होकर आया है। उसने दो साल पहले—छद्मवेश में नेपाल में पार्टी का प्रचार करते हुए बी० पी० को गिरफ्तार करवाया था—ऐसी अफ़वाह उस समय फैली थी। लेकिन उसको चाकरीबाजी नागरिक होने के जुर्म में 'कैप्चर' किया है।

झापा कैप्चर्ड ! रँगली कैप्चर्ड !!

भदरपुर कैप्चर्ड !!!

मालगोदाम कैप्चर्ड—अर्थात् मिल का खाली मालगोदाम, जिसमें सोशलिस्टों का 'रैनबसेरा' था—उसे रँगरूट सैनिकों का बैरक बना दिया गया है। इस बैरक का इन्चार्ज कपिलदेव को बनाया गया है। सोशलिस्ट कपिलदेव'''

मुक्ति-संग्राम के पूर्वी मोर्चे पर पूर्णियाँ जिले के डेढ़ सौ सोशलिस्टों के अलावा बंगाल के भी आधा दर्जन समाजवादी आकर डटे हुए हैं। एक दर्जन से अधिक सोशलिस्ट हेडक्वार्टर में विभिन्न विभागों के उत्तरदायित्व-पूर्ण पदों पर मुस्तैदी से काम कर रहे हैं। पच्चीस सोशलिस्ट गेरिल्लों को ही याकछुम्बा ने अपने काम का समझा है। सबसे ज्यादा भरोसा कुनदीप झा पर है—याकछुम्बा को, ईस्टर्न कमाण्ड के चीफ को, तथा सर्वाधिनायक सुवर्ण-शमशेर-टुकड़ी—अग्रगामी दल का दलपति उन्हें ही चुना गया है

श्रोर सकलदीप उर्फ शैलेन्दर उर्फ रहीम उनके सहायक। कामरेड लखनलाल कपूर'''सभी १९४२ के 'आजाद दस्ता' के अनुभवी श्रौर बहादुर लडाके—जिनके नामों को सुनकर ही 'टॉमी' श्रौर 'बलूच' सिपाही थर-थर कांपते थे।

बंगाल के समाजवादियों में भोला चटर्जी। गेरिल्ला-युद्ध की ट्रेनिंग देने से शुरू करके विदेश से, मित्र-देशों से अस्त्र-शस्त्र लाने का काम उसने किया है। डाक्टर लोहिया ने बी० पी० से इस बहादुर बंगसन्तान का परिचय देते हुए कहा था : "यह स्वयं एक भीषण मारात्मक विस्फोटक पदार्थ है'''"

कलकत्ते से तारापद बाबू के नेतृत्व में कई नौजवान श्राये हैं, जो 'लेबोरेटरी' (प्रयोगशाला) में काम कर रहे हैं। ठीक, ईस्टर्न कमाण्ड।

एक श्रौर सोशलिस्ट कामरेड है जो गुरुत्वपूर्ण पद पर है, यानी, 'किचेन फ्रण्ट' का कमाण्डर मधुसूदन सिंह। वह दिन-रात इस जाड़े के मौसम में भी पसीने से लथपथ हो रहा है। सदा तारस्वर में बातें करने-वाला। श्राज वह तनिक उदास है। कहता है—"यार! किचेन फ्रण्ट पर एकबार श्राकर देखो—एक ही दिन में सारी 'फुटफुटी' ग़ायब हो जायेगी! श्राज मोर्चे के जवानों ने ट्रेंच में लंच नहीं खाया। यार, पता नहीं क्या बात हुई?"

छः

एक बंगला कहावत है—ढेंकी अगर स्वर्ग भी जायेगी तो वहाँ भी उसको धान कूटना पड़ेगा। अब तक पूर्णियाँ जिला में सोशलिस्ट पार्टी के जितने सम्मेलन हुए और शिविर चलाये गये, सभी के भोजनालय-विभाग को सुचारु रूप से चलानेवाला साथी मधुसूदन, यहाँ आकर भी अर्थात् लड़ाई के मैदान में भी, सात-आठ सौ व्यक्तियों को तीन जून भोजन 'सप्लाई' करने के काम में जुटा हुआ है। तीन बजे भोर को ही अपने दल-फ़ौज के साथ 'किचेन' में आकर कोयला सुलगाना शुरू कर देता है। बड़े-बड़े कड़ाह और देगों को माँजने की आवाज़ ब्रह्मवेला में ठीक झाँझ-करताल के साथ बजनेवाले पूजा के ढोल की आवाज़-जैसी सुनायी पड़ती है। सात सौ व्यक्तियों को अहले सुबह चाय—ठीक डेढ़ बजे दोपहर का भोजन, तीन बजते-बजते चाय और रात में आठ से दस तक रात्रि-भोजन की दैनिक व्यवस्था हँसीखेल नहीं। और कामरेड मधुसूदन रसोई बनाने वाले पाचकों को सिर्फ़ हुक्म नहीं देता—खुद हाथ में छोलनी या छनौटा अथवा बड़ी कलछी लेकर—बड़े-बड़े दहकते भट्ठों पर चढ़े कड़ाहों में 'भटनकरी' या 'विजिटेबल स्टू' पकाता हुआ कभी वह मसाला पीसने वाले को सतर्क करता है—"अरे भाई! हल्दी के खराब गाँठ को नहीं पहचानते तो क्यों पीसने गये हो मसाला! चलो, पानी भरो जाकर।" कभी याद दिलाता है—"ए भाई! हास्पिटल का खाना अब तक गया है या नहीं?···ए सन्तरी! किचेन में किसी बाहरी आदमी को मत आने

दो···हाँ-हाँ···पाँच बार बाहर जाग्रो या सौ बार, आते-जाते सन्तरी को तलाशी देनी ही पड़ेगी···ए बाबाजी···ट्रेंच जवानों के लिए पचीस-तीस परमग चाय चाहिए। पुर्जी लेकर गोदाम से कण्डेन्स्ड मिल्क ले आइए और कहिएगा कि डिब्बे की मछली कोई जवान छूता तक नहीं—लगता है खराब हो गया है···अरे यार ! यहाँ सोशलिस्ट पार्टी के सम्मेलन के डेलीगेट नहीं जो सिर्फ़ हो-हल्ला और नारा लगाकर—बिना तरकारी के भात खा लेंगे। मैं सभी से फिर कह रहा हूँ—मोर्चे पर जानेवाले जवान से कोई 'बकटेटी' (बेकार बहस) मत करना। छोटकू बाबाजी से पूछो—आज क्या गये छोटकू बाबाजी···"

छोटकू बाबाजी कह रहा है—"अरी बाबा ! आजि हमर बूँझू जे प्राण बचि गेल। एहेन सुतारि कै बाहक गम हमरा पर फेंकलक···"

छोटकू बाबाजी की बोली सुनकर सभी हँसते हैं। नेपाली कांग्रेस के सभापति मातृका प्रसाद के अति प्रियपात्र। इन्हें देखते ही वह मैथिली में बोलने लगते हैं। और, छोटकू पण्डित आज तक 'कप' को 'टब' और 'मग' को 'गम' ही कहता है।

मातृका बाबू हँसते हैं—"सुतारि कै की फेंकलक ?"

"जी ! वेंह की जे कहैछै···"

मधुसूदन कहता है—"एक जवान चीनी माँग रहा था बहुत देर से। छोटकू बाबाजी लगे क़ानून बघारने कि दो चम्मच से फाजिल चीनी देने का 'ग्रोडर' नहीं है। कि 'ग्रोडर' शब्द सुनते ही वह अगिया बैताल—ग्रोडर? ग्रोडर—किसका ग्रोडर ? तुम्हारा ? तुम हमारा कमाण्डर होता है ? तुम ग्रोडर देगा—मूजी-ई···पूरा मग की चाय उछालकर छोटकू की ओर फेंककर चला गया···"

"आ गये, आ गये ! दोनों सेनापति आ गये !!"

पश्चिमी मोर्चे का दौरा करके मेजर जनरल सुवर्ण अ ग्रौर अमी ईस्टर्न कमाण्ड के साथ अगले मोर्चे पर मुक्तियोद्ध के लिए जा रहे हे। बी० पी० के साथ बाडीगार्ड जा रहे हैं और भोला चटर्जी। बी० पी० ने 'पी० आर० ओ०' को भी है···पी० आर० ओ० के राइफल ढोने के ढंग और मुद्रा

हँसते हैं। मेजर जनरल ने प्रसन्न होकर पी० आर० ग्रा० को अपनी टामीगन भेंट करते हुए कहा—"बट डोंट फारगेट योर पेन···"

दो जीपों में लदकर वे चले अगले मोर्चे की ओर—जहाँ तीन दिनों से ट्रेंचों में मुक्तिसेना के जवान डटे हुए हैं···बाज़ार अड्डा के मोर्चे के पास ही याकथुम्बा अगुआनी के लिए उपस्थित था। उसने पहले एतराज जाहिर किया—अगली खाई तक जाना ठीक नहीं—बहुत जोखम है। लेकिन मुक्तिसेना के सर्वाधिनायक और ईस्टर्न कमाण्ड ट्रेंच में लड़ते हुए एक-एक मुक्तियोद्धा से मिलना चाहते हैं। अत: याकथुम्बा बहुत सतर्कतापूर्वक अपने अफसरों को लेकर आगे बढ़े—अब लेट जाइए···पेट के बल 'काल' ···हाँ···अब एकदम पेट के बल पड़े रहिए—दुश्मन फायरिंग कर रहे हैं···कई मिनट के बाद जब मशीनगन चुप हुई तो वे फिर आगे बढ़े···

ट्रेंचों की अवस्था देखकर अचरज होता है—इनमें तीन दिनों से कैसे पड़े हुए हैं ये लोग ?

मुक्तिसेना के प्रत्येक योद्धा की एक ही प्रार्थना है—बुलेट, मारक विस्फोटक बम, हथगोले और भेजिए। दुश्मन की पचीस गोलियों के बाद हमें एक गोली छोड़ने का हुक्म है···हमें फाइनल हमले का हुक्म दिया जाये। ट्रेंच में इस तरह पड़े रहने से अच्छा है घायल होकर अस्पताल के बेड पर···नहीं—नहीं···भोजन में कोई गड़बड़ी नहीं—खाने को जी ही नहीं करता···

मेजर जनरल ने एक-एक मुक्तियोद्धा को प्यार से कहा—"साथी ! घबराओ मत। बहुत जल्दी ही प्रचुर मात्रा में बुलेट और अन्य अस्त्र-शस्त्र आ रहे हैं···"

'फील्ड हास्पिटल' में चार सर्जन और पन्द्रह नर्स घायलों की सेवा कर रहे हैं। सानोआमाँ, नलिनी दीदी, इन्दिरा, विजयलक्ष्मी—और नूना भाभी—कोइराला-निवास की माँ, बेटियाँ और बहुओं के साथ नगर के प्रतिष्ठित घरों की लड़कियाँ स्वयंसेविका के रूप में दिन-रात फिरकी की तरह घूमती रहती हैं।

सर्वाधिनायक की पार्टी हास्पिटल का परिदर्शन करके लौटी ही थी कि हेडक्वार्टर में भीषण धमाका···धड़ाड़-धड़ाम ! ! ···ठीक मेजर जनरल

के दफ्तर के बगल में···धरती काँप उठी···धुएँ का काला गुब्बारा बढ़ता हुआ सारे मिल के आकाश को आच्छादित करता जाता है···सभी धरती पर लेट गये···बारूद और गन्धक की जलती हुई गन्ध···मुक्तिवाहिनी ने लगातार कई राउण्ड फायर किया···दुश्मन···दुश्मन···??

नहीं, दुश्मन नहीं! दोस्त···कामरेड तारापद अपने चार साथियों के साथ प्रयोगशाला मे काम कर रहे थे। असावधानी से एक ग्रेनेड गिरकर फूटा और सभी तैयार बम और गोले एक साथ···विस्फोटक धड़धड़ाकर फटने लगे···दीवारों में दरारें···ध्वंस···ईंट-सिमेण्ट, रक्त···रक्त, ध्वंसावशेष···तारापद बाबू और उनके साथियों की लाश की चिथियाँ···मांस के कुचले और जले हुए कई लोंदे मात्र···और कुछ नहीं···न किसी का सिर, न किसी का पैर···हड्डियाँ चिंदी-चिंदी···एक वीभत्स दृश्य।

नेपाली क्रान्ति ·

सात

शेल-शॉक ?

भोला चेटर्जी, तारिणी प्रसाद कोइराला और 'पी० आर० ओ०' को 'शेप शॉक' लगा है, शायद ! तीनों कई घण्टे तक 'एबनार्मल' की तरह बड़बड़ाते और चुप हो जाते। और चुप्पी ऐसी कि जोर से पुकारने पर भी कोई जवाब नहीं !

नेपाली कांग्रेस के सभापति मातृका प्रसाद—सारे शिविर के 'ठूलो दाज्यु'—बड़े भैयाजी हैं। उस रात को वह इन तीनों के कमरे में ही बहुत देर तक बैठे रहे।

उसी भीषण विस्फोट के बाद—तारापद बाबू तथा उनके साथियों की आकस्मिक और समूह-मृत्यु के बाद—मुक्तिसेना के हेडक्वार्टर में, कई घण्टों तक ऐसा सन्नाटा छाया रहा कि जिसकी याद करके मातृका बाबू आज भी रवीन्द्रनाथ टाकुर की इन पंक्तियों को दुहराने लगेंगे—"नमि हे भीषण, मौन, रिक्त ! एस मोर भांगा आलये, हस्ते तोमार लौह-दण्ड बाजिछे लौह बलये···!!"

उस रात की भीषण उदासी को गौरव प्रदान करने के लिए 'ठूलो दाज्यु' (मातृका बाबू) ने रवि ठाकुर की और भी कई पंक्तियों की आवृत्ति की थी, धीरे-धीरे गाकर गाया भी था—"ओगो मरण हे मोर मरण हाय एमनि करे कि उओ चोर चुपि-चुपि एसे···?"

"पी० आर० ओ०' बड़बड़ा उठा था—'चुपि-चुपि नहीं। चोरी-

चोरी नहीं, इसे डकैती कहिए—धमाके के साथ आगमन···!"

मातृका बाबू इन भावुक युवकों की मनोदशा को समझ रहे थे, अच्छी तरह। वह बड़े भैयाजी का कर्त्तव्य पालन करते रहे। इनके दिलों में चुपचाप व्याप्त होनेवाली शून्यता और रिक्तता को दूर करने के लिए उन्होंने एक 'बाउल गीत' भी गाकर सुनाया। और, अन्त में स्वरचित एक नेपाली गीत—"साथी अब कति टाढा जाने···साथी अब और कितना दूर जाना है ?"

और, उनके इस सवाल का जवाब दिया—बीस मील उत्तर-पश्चिम कोसी के कुसहा घाट से, अग्रगामी टुकड़ी के अधिनायक डाक्टर कुलदीप झा ने—"मंजिल करीब ला रहे हैं हम !"

कुसहा घाट से आये हुए 'विशेष संवाद' ने हेडक्वार्टर के मनहूस वातावरण को पलक मारते दूर कर दिया। सभी इस संवाद को सुनकर जग गये हैं—सर्वाधिनायक से लेकर सन्तरी तक···तो, वह सकुशल है ?

पिछले दो दिनों से चेष्टा करने पर भी एडवान्स फ़ोर्स की टुकड़ी का कोई संवाद हेडक्वार्टर को नहीं मिल सका था। कोई अता-पता नहीं। तारापद बाबू और उनके साथियों की मृत्यु के बाद हेडक्वार्टर के कई कोनों में एक आशंका कभी-कभी प्रबल हो जाती थी—सम्भवतः एडवान्स फ़ोर्स के सभी जवान किसी कुचक्र के शिकार हो गये। युद्ध-भूमि के अनुभवी सैनिकों का कहना है—कभी-कभी खराब समाचार आने लगते हैं तो लगातार कई दिनों तक बस 'बैड न्यूज' ही आते रहते हैं चारों ओर से···!

डाक्टर कुलदीप झा ने एक लम्बी चिट्ठी लिखी है। अग्रगामी टुकड़ी वास्तव में खतरे में पड़ गयी थी। धनकुट्टा के 'कम्मी-कामरेडों' ने विश्वास-घात नहीं—'सेबटाज' भी किया। अगर खिरियाही पुल के पास ट्रकों को रोककर अधिनायक ने पुल की परीक्षा नहीं की होती तो 'एडवान्स फ़ोर्स' के सभी जवान एक ही साथ मौत के मुँह में समा जाते। हमारे ये नये दुश्मन पुल की पटरियों को हटाकर पास की झाड़ियों में छिपे बैठे थे। डॉ० कुलदीप ने अपने जवानों को सिगनल दिया और वे ट्रकों से उतरकर

पहुँचेगी, इसमें मुझे सन्देह है। और, इसकी जरूरत ही क्या है ?"

"जरूरत है।"—बी० पी० दृढ़तापूर्वक कहते हैं।

एक ओर फ़ौजी पोशाक मे एक संवेदनशील, उच्च शिक्षित, सही मानवमूल्यों मे विश्वास करनेवाला मधुरभाषी बुद्धिजीवी नेपाली है और दूसरी ओर सैनिक अकादेमी का प्रशिक्षित शत-प्रतिशत फ़ौजी नेपाली, जिसके सिर में दिमाग की जगह पर 'मिलेटरी मैनुअल' रखा हुआ है। मैनुअल में, मोर्चे से दुश्मन के नाम अपील करने की बात कही नहीं! ईस्टर्न कमाण्ड के चीफ़ तर्क करते हैं—"उत्तमविक्रम की हठधर्मी अथवा मूर्खता के कारण सैकड़ों नेपाली जवान मारे जायें—यह मैं नहीं चाहता। मुझे लगता है, उत्तमविक्रम और उसके पुत्र अपनी सुरक्षा का ख्याल करके···अर्थात् वे समझते हैं कि पकड़े जाने पर उन्हें तुरन्त गोली से उड़ा दिया जायेगा। शायद, इसीलिए···"

याकथुम्बा तर्क नहीं करता। वह 'एटेंसन' की मुद्रा में खड़ा हो गया है. अब बी० पी० कह रहे हैं—एक-एक प्रशिक्षित नेपाली जवान की क्या क़ीमत है, हम जानते हैं···आज वे ग़रीब राणा के साथ हैं, उनके हुक्म से गोलियाँ चलाते हैं। कल वे ही नेपाली प्रजातन्त्र सरकार के सैनिक होंगे···!"

एक जीप पर लाउडस्पीकर के सारे सामान—बैटरी, एम्पलिफायर, हार्न और माइक आदि लादे जा रहे हैं। दूसरी गाड़ी पर याकथुम्बा के साथ बी० पी० की पार्टी—अर्थात् दोनों अंगरक्षक भोला चैटर्जी और तारिणी प्रसाद। आज बी०पी० ने 'पी०आर० ओ०' से साथ चलने को नहीं कहा। यह ईस्टर्न कमाण्ड के साथ चलने की अनुमति माँगता है—"वहाँ तो आप भाषण देंगे न? तब तो मेरे विभाग के किसी व्यक्ति को वहाँ उपस्थित रहना चाहिए। न्यूज कवर करने को।"

बी० पी० हँसते हैं। किन्तु तारिणी और भोला चैटर्जी व्यंग्य करते हैं—"अरे यार पी० आर०—तुम कहाँ चलोगे, अकेले? ···टू दिन कवर यू?"

बी० पी० की अनुमति पाकर प्रसन्न 'पी० आर० ओ०' जवाब देता है—"अकेला कहाँ हूँ? यह रही मेरी 'रक्षा' और वह 'सिद्दिदा'।"

'पी० आर० ओ०' ने सर्वाधिनायक-प्रदत्त अपनी 'टामीगन' को नाम दिया है 'रक्तपा' और उसके सभी मित्र तथा आत्मीय जानते हैं, 'सिद्धिदा' उसकी 'पार्कर-५१' कलम का नाम है।

बाज़ार अड्डा मोर्चे के पास दोनों गाड़ियाँ रुकीं। 'रिजर्व' के जवानों ने 'लाउडस्पीकर' के सामान के साथ ऑपरेटर को अगले मोर्चे तक पहुँचाया। बाद में स्वयं याकयुम्बा और सी० बी० सुब्बा—बी० पी० की पार्टी को 'कवर' करके मोर्चे की ओर बढ़े।

मोर्चे पर पहुँचकर पता चला—आज सुबह से राणाशाही—गोला-बारी की गति तनिक मन्द है। मुक्ति-सैनिकों को राणाशाही के बी राउण्ड के बाद एक 'राउण्ड' से ज़्यादा गोली चलाने की आज्ञा अब भी नहीं दी गयी है। इसलिए, प्रत्येक मुक्ति-फ़ौजी के चेहरे पर 'बोरडम' (एकरसता) से उत्पन्न रेखाएँ अंकित हैं।

अब, ईस्टर्न कमाण्ड के चीफ़ की 'अपील', ध्वनिविस्तारक-यन्त्र की सहायता से—गोस्वारा-कचहरी की दीवारों से टकराकर प्रतिध्वनित होने लगी—"कर्नल साहब—कर्नल उत्तमविक्रम राणाजी···कृपया ध्यान दें··· कर्नल उत्तमविक्रम···अगर आप तक मेरी आवाज़ पहुँच रही हो तो—थोड़ी देर के लिए फ़ाइरिंग बन्द करवा दें। मैं—मुक्तिसेना के पूर्वी कमाण्ड का चीफ़—बी० पी० कोइराला—आज आपके सामने एक 'अपील' लेकर उपस्थित हुआ हूँ···हम राणातन्त्र के दुश्मन हैं, राणाओं के नहीं। हमारी मुक्तिफ़ौज के सर्वोच्च अधिनायक राणा ही हैं। कई प्रमुख राणा-परिवार के नौजवान, मुक्तिसेना के अधिनायक और साधारण सैनिक हैं। आपके जैसे अनुभवी शासक की ज़रूरत नेपाल की किसी भी सरकार को पड़ेगी··· यह निश्चित है कि विजय अन्ततः नेपाली जनता की ही होगी। मुझे उम्मीद है कि आप अपने देश की जनता का साथ देकर खोया हुआ अवसर···याद रहे, हम अपने देशवासियों का रक्त व्यर्थ ही नहीं बहाना चाहते। आप जनता की इस लड़ाई में शरीक हों, आप जिस पद पर हैं—सामयिक सरकार आपको उसी पद पर बरकरार रखेगी। इस सम्बन्ध में अगर आप विस्तारपूर्वक बात करना चाहें तो मैं इसके लिए भी तैयार होकर आया हूँ। दोनों ओर से सफ़ेद झण्डे फहराये जायें। आप किले से अपने अंग-

रक्षकों के एक दस्ते के साथ बाहर निकलकर 'हुलाख' (पोस्ट ऑफ़िस) के बरामदे पर आने की कृपा करें, मैं भी आगे बढ़कर उस जगह पर पहुँचता हूँ। अगर आप चाहें तो···!"

किले की दीवार के उस पार एक सफ़ेद झण्डा ऊपर की ओर उठ रहा है। उठता ही जा रहा है। हाँ, सफ़ेद झण्डा! सुबुद्धि की जय हो! इधर भी सफ़ेद झण्डा लहरा उठा।

उधर, किले का लौह कपाट खुला—सशब्द। फिर, बी० पी० मुक्ति-वाहिनी के दोनों अधिनायकों और सशक्त जवानों के साथ—ट्रेंच से बाहर निकलकर—आगे बढ़े।

किन्तु, वे दस कदम भी नहीं बढ़े होंगे कि सामने से—क़िले की छत पर फिट मशीनगन अट्टहास कर उठी—टटटटटट···टटटटट···टट···!!

याकथुम्वा और सी० बी सुब्बा दोनों एक ही साथ बी० पी० को 'अंकवार' में भरकर यन्त्र-चालित मशीन की तरह फुर्ती से जमीन पर लेट गये और लुढ़कते हुए ट्रेंच में गिरे। कई जवान बुरी तरह घायल हुए। और, पन्द्रह-बीस मिनट तक दोनों ओर से जैसी गोलाबारी हुई वैसी कई दिनों से नहीं हुई। मुक्तिसेना के जवान पागल हो गये हैं—सफेद झण्डा दिखलाकर फाइरिंग? ऐसी दगाबाजी?···इसका मजा चखाना होगा। ट्रटठाँय-ठाँय ठाँय!!

उस दिन कर्नल उत्तमविक्रम तथा उनके दोनों पुत्रों को पूरा विश्वास हो गया था कि उनकी 'धोखाधड़ी-गोलाबारी' सफल हुई यानी बी० पी० कोइराला मर गये। मुक्तिसेना के 'बेतार-ऑपरेटर' ने उस दिन कर्नल विक्रम की 'आकाशवाणी' (राणा सरकार के शासन के समय नेपाल 'वायरलेस विभाग का नाम आकाशवाणी ही था!) को जितनी बार 'इण्टरसेप्ट' किया, उत्तमविक्रम यही संवाद बार-बार काठमाण्डो भेज रहा था—हमने बी० पी० के जीवन का अन्त कर दिया···

"हाँ—घायल नहीं, एकदम समाप्त···वह निश्चित रूप से मारा गया है···।"

बी० पी० तथा उसकी पार्टी के सदस्यों को हेडक्वार्टर में सकुशल पहुँचाने के बाद ही, याकथुम्वा के चेहरे पर उसकी सहज और स्वाभाविक

मुस्कराहट लौट आयी—"रणचण्डी की विशेष और असीम कृपा है हम पर अन्यथा आज··· !"

"जय नेपाल कमाण्डर !"

याकथुम्वा प्रसन्नता के मारे उछल पड़ता है—"साथी पूरनसिंह ? कब आये ?"

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की 'आज़ाद हिन्द फ़ौज' का प्रसिद्ध लड़ाका पूरनसिंह अपने कई 'मिलटरी-मैकनिक' साथियों के साथ आया है—सर्वाधिनायक सुवर्ण का सन्देश पाकर। आते ही उसने सबकुछ सुनने के बाद—कैटरपिलर बुलडोजर को टैंक मे परिणत करने के सुझाव का समर्थन किया है। आज रात से ही वह अपने साथियों के साथ जूट मिल के बड़े 'वर्कशाप' मे लोहे की चद्दरों की 'वेल्डिंग-मौल्डिंग' का कारोबार शुरू कर देगा।

इवेकुएशन ! एइवेकुएशन !!

"शहर खाली कीजिए !"

विराटनगर शहर खाली हो रहा है। खाली करवाया जा रहा है। ट्रकों पर लदे हुए सामान बिस्तर, ट्रंक, रेडियो, सिलाई की मशीन, पेट्रोमेक्स, पंखे, ग्रामोफोन···पालतू कुत्ते-बिल्ली, तोता-मैना, काकातुआ···!!

'घबराइए नही। पच्चीस ट्रक हैं। बारी-बारी से एक-एक परिवार को सकुशल सुरक्षित स्थान में—इवेक्वी कैम्प मे—पहुँचा दिया जायेगा। आपस में झगड़ें नहीं। अपने घरों और गोदामों मे ताले लगा दें···पहले, गर्भवती महिलाओं को—बूढे, बच्चे और बीमारों को पहले जाने दीजिए—प्लीज, प्लीज, गुलगपाडा एकदम नही—आपकी सहायता के लिए हर मुहल्ले मे, हर गली मे मुक्तिसेना के सशस्त्र स्वयंसेवक तैनात हैं—स्वयसेविकाएँ भी हैं—भाग-दौड़, होहल्ला नहीं—होशियारी से—पैदल जानेवाले भाइयो ! मुक्तिसैनिकों की बात का अक्षरशः पालन करें—उनके बताये हुए रास्ते से चलें। वे जैसा कहें, करिए—हाँ, दूसरा ट्रिप··· तीसरा खेप···ट्रक और जीप गाड़ियाँ जा रही हैं—घबराइए नहीं—स्वयंसेवकगण शान्ति से काम लें कृपया।"

विराटनगर की सड़कों, गलियों और नुक्कड़ों पर 'पिकेट' करते हुए

मुक्तिसेना के सन्तरी अवाक और हैरान हैं—ऐसा तो कभी नहीं देखा। न बर्मा में, न इम्फाल में और न कोहिमा में—कहीं भी नहीं। औरतें, जवान लड़कियाँ, मुर्गे-मुर्गियाँ, भेड-बकरे, रुपये-पैसे सभी सुरक्षित जा रहे हैं। सर्वाधिनायक की चेतावनी उनके कान के पास प्रतिध्वनित हो जाती है—"हम लुटेरे सैनिक नहीं। हम मुक्ति-सैनिक हैं—हम नेपाल की जनता के सिपाही हैं···"

ट्रकों की निरन्तर 'आवाजाही' से सडकों पर सदा धूल के विशाल बवण्डर मँडराते रहते है···स्मोक-स्क्रीन···प्राकृतिक धूमजाल!!

पूरनसिंह अपने साथियों के साथ 'वर्कशाप' की भट्टी को सुलगा चुका है। वर्कशाप मे रह-रहकर प्रज्जवलित होनेवाली नीली रोशनी आस-पास की इमारतों की दीवारों पर चकाचौंधपूर्ण इन्द्रजाल की सृष्टि कर जाती है, रह-रहकर। बड़े-बड़े हथौड़ों से जब लोहे की 'पिटाई' होने लगती है तो हेडक्वार्टर की सभी इमारतों मे लगे लोहे खनकने लगते है।

और, ठीक उसी समय हेडक्वार्टर के नये और बड़े बेतार-कक्ष में बाहर से आये हुए वायरलेस-इंजीनियर साहब, 'पावरफुल ट्रान्समीटर' बैठा रहे है। टेस्ट कर रहे हैं—हैलो-हैलो!!···पूरनसिंह के वर्कशाप के हथौड़े की चोट पर ट्रान्समीटर की 'मेजिकआइज' की रोशनी काँप-काँप जाती है।

दो दिन पहले, 'पी० आर० ओ०' और उसके लँगोटिया यार नेपाली के तरुण और यशस्वी कथाकार—तारिणी प्रसाद कोइराला—ने मिलकर संग्राम-समिति के सामने एक आवश्यक सुझाव रखा था—"हमारे साधारण वायरलेस का 'रेंज' काठमाण्डो, गोरखपुर, बनारस, कलकत्ता, दार्जिलिंग तक है। क्यो नही हम बाजाब्ता ब्राडकास्ट करवाना शुरू कर दें?"

सर्वाधिनायक ने इस सुझाव को मानकर, हवाई जहाज भेजकर नया ट्रान्समीटर और बड़े इंजीनियर को बुलवाया है। कल सुबह आठ बजे से ही 'शार्ट वेव' के ४१ मीटर बैंण्ड पर 'प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो' का प्रसारण शुरू हो जायेगा। सभी पत्र-प्रतिनिधियों को समय और मीटर की पूरी सूचना दे दी गयी है।

'पी. आर. ओ.' को बहुत मुश्किल से एक कीर्तन-मण्डली का पुराना

हारमोनियम मिला। लेकिन, रात के ग्यारह बजे तक 'पी० ग्रार० ग्रो०' तथा तारिणी प्रसाद 'डुग्गी-तबला' की जोड़ी की खोज में जोगबनी के बाजार में भटकते रहे। सभी को अचरज होता है—फौजियों को हठात् हारमोनियम-तबला की जरूरत क्यों पड़ गयी ? ग्रौर, जब 'इवेक्वी-कालोनी' मे वे किसी सुकण्ठ गायक ग्रथवा गायिका की तलाश करने पहुँचे तो दोनों की नीयत पर भी सन्देह किया जाने लगा—कमाण्डर को सूचना देनी होगी ! ···खाकी वर्दी, मुँह में हुक्र्युलिस-रम की तीव्र गन्ध ग्रौर किसी गानेवाली की रात मे खोज ?···दोनों बहुत रात तक भटकते रहे।

दूसरे दिन सुबह, सात बजकर तीस मिनट तक भी कोई गायक नहीं मिला। तब वायरलेस-विभाग के ही दो-तीन कार्यकर्त्ताग्रों को लेकर 'जय-यात्रा' का रिहर्सल शुरू किया गया। चीफ़ ग्रॉपरेटर लामा ने संकेत दिया। सबसे पहले उसने कई बार—'दिस इज प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो टेस्टिंग ग्रान फोर्टीवन मीटर बैण्ड'—दुहराया। ग्रौर, ग्राठ बजते ही हारमो-नियम ग्रौर डुग्गी के ताल पर—"नेपाली, नेपाली ग्रगि बढ़दा, बढदै जाउ क्रान्ति झण्डा ले" गीत का प्रसारण प्रारम्भ हो गया !

तारिणी हारमोनियम बजा रहा था ग्रौर डुग्गी पर ताल दे रहा था 'पी० ग्रार० ग्रो०'—डम-डम-डम। नेपाली-नेपाली !!

"जय नेपाल !"—प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो पर तारिणी का प्रथम ग्रभिवादन !!

"डम-डम-डम—नेपाली-नेपाली···"

"यो प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो हो। हामी नेपाल को मुक्त क्षेत्र बाट···!" तारिणी नेपाली में खबरें सुनाने लगा।

"यह प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो है।"—'पी० ग्रार० ग्रो०' ने हिन्दी में समाचार पाठ किया—"हमारे दिल्ली-स्थित संवाददाता ने ग्रभी-ग्रभी खबर दी है कि मोहन शमशेर के दो दूत, जनरल केशव ग्रौर विजय शमशेर जंग पिछली रात को दिल्ली पहुँच गये हैं···झापा पर मुक्तिसैनिकों ने कब्जा कर लिया है···धनकुट्टा के रास्ते में खिरियाही पुल के पास मुक्ति-सेना की एडवान्स टुकड़ी ने जमकर मुकाबला किया···"

"यू ग्रार ट्युण्ड टु प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो···! "

अंग्रेजी समाचार बुलेटिन विजयलक्ष्मी के स्वर मे।

उस दिन प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो के 'फिल्म-स्टुडियो' से प्रसारण के बाद जब वे बाहर निकले—सर्वाधिनायक सुवर्ण, बी० पी० तथा एम०पी० सभी एकसाथ बधाई देने के लिए प्रसन्न खड़े थे—"शाबाश!··वाह!!"

'पी० आर० ओ०' ने मातृका प्रसाद से अनुमति मांगी—"आज दोपहर की सभा में—आपका गीत—'साथी अब कति टाढा जाने' प्रसारित किया जायेगा···तारिणी गायेगा। क्या आप रिहर्सल के समय कुछ देर के लिए स्टुडियो मे पधारने की कृपा करेंगे?"

ठुलोदाज्यु ने हँसते हुए कहा—"जो हुक्म! ···हुन्छः"

कोसी का कुसहा घाट!

धनी तराई को दो हिस्सों में बाँटती हुई हिमालय की प्रसिद्ध नदी कोसी, अर्थात् कोसी मैया, दूर तक फैली हुई श्वेत, सैकतशय्या पर लेटी है। कातिक-अगहन मे, इस घाट पर कोसी 'तन्वंगी' तो है किन्तु, श्रान्त-क्लान्त-निश्चल नही। कलकल-वाहिनी प्रखर तरंगिनी है। पहाड़ी से नीचे उतरने के बाद—कोसी का यह दूसरा अथवा तीसरा घाट है—कुसहा; जहाँ मुक्ति-सेना की अग्रगामी-टुकडी के कमाण्डर डाक्टर कुलदीप झा पिछले कई दिनों से व्यूह-रचना करके सतर्क बैठे हैं। घाट की सभी नावें और डोंगियाँ डुबो दी गयी हैं।

कुहरा-कुहासा चारों ओर व्याप्त। सूरज उगने के दो घण्टा बाद भी कुहरा छँटा नही है। तराई की हरियाली पर गहरा सफेद आवरण! और सुबह चलनेवाली पहाड़ी हवा के साथ शीतलहरी!! इस पार से उस पार तक दृष्टिपथ को घेरकर रखनेवाले सफेद आवरण पर कही कोई धब्बा नहीं।

सूरज ने तराई से और ऊपर उठकर अपनी किरणों से इस श्वेत आवरण को कई स्थानों पर चीरना शुरू कर दिया। और, तब कमाण्डर झा ने देखा—घाट के उस पार···उस पार बालू पर क्या है वह?···गाड़ी पर नाव?···अर्थात् वे आ रहे हैं?···अरे रे! दरिया मे भी किश्तियाँ··· रहीमजी—दूरबीन?

"दूरबीन पार्टी नम्बर दो के पास है।"

'गाडी पर नाव है न ? और नदी में··· ?"

"मगर गाड़ियों मे बैल या भैंसा नहीं—आदमी जुते हुए है।"

"वहां, बालू पर···तराई से पंक्तिबद्ध··· ?"

दुश्मन···दुश्मन ! तराई की हवा कुसहा मोर्चे के हर जवान के कानों के पास फिसफिसाकर कह गयी—दुश्मन !

कमाण्डर के संकेत पर वे 'पोजीशन' लेकर तैयार हो गये। कमाण्डर ने हुक्म दिया और गोलाबारी शुरू हो गयी।

कामरेड रहीम उर्फ़ शैलेन्दर सिंह उर्फ सकलदीप के शब्दों में कुसहा घाट की इस लड़ाई का विवरण—"फ़ायरिंग करते-करते राइफल की नली आग हो गयी समझिए। फ्लास्क का पानी खतम। खैर, किसी तरह नली को ठण्डा किया। डाक्टर साहब तब तक स्टेनगन से नाव पर बैठे दुश्मनों को भून चुके थे। दोनों नावों को डुबा चुके थे। उधर पार्टी नम्बर दो दाहिने बाजूवाली खाई से फ़ायरिंग किये जा रही थी। दुश्मन जब तक भौंचक रहा, सिर्फ हमारी गोलियां ही बोलती रहीं। मगर दुश्मन ने जब हमारा ठिकाना जान लिया, तो जवाब आने लगा। ऐसा जवाब कि समझिए भड़ी लगा दी। हम और डाक्टर साहब जिस 'मिट्ठे' की आड़ में थे, वह ढहने लगा तो हम रेंग-रेंगकर दूसरी खाई में पहुँचे। पार्टी नम्बर दो ने भी अपना ठिकाना बदला···एक ही दूरबीन, सो भी पार्टी नम्बर दो के पास। डाक्टर साहब बोले—'पार्टी नम्बर दो चुप क्यों हो गयी ?' उस पार से धुआंधार गोलियां आ रही थी।

"डाक्टर साहब घुटने के बल बैठकर स्टेनगन को ठीक करने लगे। मैं *बोला, 'पेट के बल लेट जाइए।' डाक्टर साहब इतने लम्बे कि घुटने के बल* बैठने पर भी पीठ दिखायी पड़े। पेट के बल पर हम दोनों लेटे रहे। फ़ायरिंग रुकी तो फिर नया 'पोजीशन' लिया। डाक्टर साहब ने पाँच मिनट तक गोली चलायी होगी। जिस वक़्त पार्टी नम्बर दो फ़ायरिंग देने लगी, हम दोनों जगह बदलने के लिए 'सखुआ' पेड़ की आड मे खिसकते हुए जा रहे थे कि डाक्टर साहब के मुँह से निकला—'ओह !' मुड़कर देखा तो वह पेट पकड़े हुए थे। दुश्मन की गोलियां सामनेवाले पेड़ के तने के 'बाकल' को उधेड़ रही थी। दुश्मन ने हम दोनों को अच्छी तरह देख

लिया था। डाक्टर साहब पेट पकड़कर रेंगते हुए ढलान से नीचे लुढ़क गये। हमको भी ऐसा ही करने को कहा। बोले—'फ़ायरिंग बन्द मत करिए! जारी रखिए!' मगर, जब हमने उलटकर देखा, तो डाक्टर साहब खून से लथपथ थे। मैं उनके पास पहुँचा तो हुक्म हुआ—'अपनी पार्टी के जवानों को पार्टी नम्बर दो की मदद के लिए भेज दीजिए'···वही किया। लौटकर आया तो खुद अपनी कमीज़ फाड़कर, बूट की पट्टी खोलकर पेट पर बाँध रहे थे। हमको देखकर बोले—'अंतड़ी निकल गयी है। सँभालकर अन्दर करके पट्टी बाँध दीजिए।' पहले तो सोचा कि पार्टी नम्बर दो को खबर दूँ। मगर, डाक्टर साहब को उस हालत में छोड़कर कैसे जायें? आखिर, अपनी राइफ़ल और डाक्टर साहब की स्टेनगन को अगल-बगल लटकाकर—डाक्टर साहब को पीठ पर लादकर—पहाड़ी 'खोरा' (सूखी नाली) की राह पकड़कर मैं चला···"

घनी तराई का बीहड़ पथ। एडवान्स फ़ोर्स के घायल कमाण्डर को पीठ पर लादकर, कामरेड रहीम हेडक्वार्टर की ओर जानेवाली पगडण्डी को खोज रहा है। कमाण्डर झा गम्भीर रूप से घायल हैं। किन्तु, बेहोश नहीं—"साथी रहीमजी! आप 'अकनेधी' का लत्तर पहचानते हैं? सन्थाल लोग और अपने गाँव के लोग भी इसके पत्ते को पीसकर कटे हुए स्थान पर लगाते हैं। खून तुरन्त बन्द हो जाता है और फिर घाव सूखने पर ही लेप अपने-आप उतर जाता है। 'ऐण्टीसेप्टिक' भी होता है और घाव को आराम करने में उस्ताद है यह जड़ी। मुझे किसी जगह पर रखकर झाड़ियों में ढूँढ़िए।" कामरेड रहीम ढूँढ़कर 'अकनेधी' की लता ले आया है। डाक्टर साहब मुस्कराकर कहते हैं—"ठीक है। आप जंगली जड़ी-बूटी को पहचानते हैं।" रहीम, पत्तियों को राइफल के 'बट' पर रखकर पत्थर से कुचलता-पीसता है। किन्तु, पट्टी को हटाकर घाव को देखते ही उसका सिर चकराने लगता है। डाक्टर झा कहते हैं, "कुछ ही दूर पर, इटहरी गाँव में एक डाक्टर रहता है। उसके पास पेनिसिलिन होगी। अगर अभी एक सुई लग जाये···"

लेकिन डाक्टर के पास पेनिसिलिन नहीं थी। और होती भी तो···? इटहरी पहुँचते-पहुँचते डाक्टर झा की अवस्था नाजुक हो चुकी थी।

उनकी बोली बन्द हो चुकी थी। इटहरी पहुँचकर रहीम ने जब उनको बरामदे पर लिटाया, तो एक बार आँखों को खोलकर देखा। फिर, एक लम्बी साँस के साथ, सब समाप्त !

सुबह आठ बजे का चला हुआ रहीम, शाम को पाँच बजे डाक्टर झा की लाश को लेकर हेडक्वार्टर में हाजिर हुआ। और, दो मिनट के बाद एडवान्स फोर्स की पार्टी नम्बर दो का सन्देशवाहक भी शुभ संवाद लेकर पहुँचा। डाक्टर झा की लाश को मेजर जनरल के कमरे में बन्द कर दिया गया। पार्टी नम्बर दो के सन्देशवाहक का लाया हुआ 'उत्साहवर्द्धक समाचार' तत्काल ही 'प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो' के दफ्तर में, शाम के समाचार-बुलेटिन में प्रसारण के लिए भेज दिया गया। और, तुरत एक टुकड़ी कुसहा घाट की ओर चल पड़ी—एडवान्स फोर्स की मदद करने के लिए।

"यह प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो है··· एक विशेष संवाद सुनिए (फ्लैश !!!)··· आज सुबह आठ बजे कोसी नदी के कुसहा घाट पर जमकर लड़ाई हुई। काठमाण्डो से विराटनगर को आती हुई राणाशाही की सेना की टुकड़ियाँ जब नावों पर लदकर नदी पार कर रही थीं, मुक्ति-सेना के जवानों ने उन पर अचानक गोलाबारी शुरू कर दी और दुश्मन की दो नावों को डुबा दिया। डेढ़ घण्टे तक मुकाबला करने के बाद हमारे जवानों ने दुश्मन को उस पार की तराई में खदेड़ दिया है···!!"

रात को साढ़े नौ बजे प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो की तीसरी सभा समाप्त करके 'पी० आर० ओ०' अपने कैम्प में लौटा तो पहरे पर खड़ा सन्तरी साथी गिरधारी फूट-फूटकर रो पड़ा।

कैम्प में चारों ओर हिचकियाँ-सिसकियाँ और घुटता हुआ क्रन्दन !! सोशलिस्ट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी नरसिंह नारायण सिंह की आँखें झर रही थी और वह मानो 'बाथ' में बोले जा रहे थे—"तुमने···अब तक डाक्टर साहब से मुलाकात नहीं की ? रहीम कह रहा था—मोर्चे पर डाक्टर साहब तुमको बार-बार याद करते थे···चलो, अपने प्यारे साथी कुलदीप झा से मिल लो।"

नेपाल-भारत की सीमा-रेखा के पास 'नो मैन्स लैण्ड' के किनारे, भारत

की भूमि पर एक चिता सजायी जा रही है। विराटनगर और जोगबनी के दस हज़ार मजदूरों के प्यारे और बहादुर साथी की अर्थी उठ रही है। पूर्णियाँ ज़िला के किसानों का अगुआ-लडका और बिहार के विद्यार्थियों और नौजवानों के प्रिय 'भैयाजी'—लाल झण्डे में लिपटे, फूलमालाओं से लदे आ रहे हैं···सावधान ! आगे-आगे मातमी धुन बजाती हुई बिगुलवादकों की टुकड़ी—धीरे-धीरे आ रही है···भारत-नेपाल-मैत्री, अमर हो···नेपाली प्रजातन्त्र जिन्दाबाद···डाक्टर कुलदीप झा—टूठांय ! सलाम-लाल सलाम !! ···टूठांय ! ··· सलाम··· टूठांय !!

"···· समाचार आप प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो से सुन रहे हैं। मोहन शमशेर के दोनों विशेष दूत, आज दिल्ली से काठमाण्डो वापस हो गये। जानकार सूत्रों का कहना है कि भारत सरकार ने मोहन शमशेर की समझौता-वार्ता की शर्तों को नामंजूर कर दिया है और साथ ही इस बात पर बल दिया है कि भारत श्री-५ महाराजाधिराज त्रिभुवन को नेपाल का महाराजाधिराज मानता है···आज के विशेष समाचार फिर एक बार सुन लीजिए—ईलाम पर, मुक्तिसेना ने बिना एक बूँद रक्त बहाये कब्जा कर लिया है। भोजपुर-खटांग में घमासान लड़ाई चल रही है···लीजिए, अभी-अभी खबर मिली है कि भोजपुर-खटांग के सरकारी-भवन पर मुक्ति-सैनिकों ने विजय का झण्डा फहरा दिया है···"

प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो से प्रतिदिन तीन बार—सुबह, दोपहर और शाम की सभाओं में समाचार प्रसारित किये जाते हैं। समाचार के अलावा गीत, लोकगीत, रिपोर्ताज और एकांकी। सभी प्रसारणों का मूल वक्तव्य —'नेपाल में सदियों से छाये अन्धकार को दूर कर—नया सूरज नया विहान ला रहा है।'

किन्तु, विराटनगर का अडिग और अजेय दुर्ग इन सारी बातों को झुठलाता हुआ नित्य नरसंहार कर रहा है। इसलिए, झापा, ईलाम और भोजपुर-अंचलों के उत्साहवर्धक समाचारों पर जनता अविश्वास-सा करने लगी है। मुक्ति-सैनिकों के मनोबल भी डाँवाडोल हो रहे हैं। और, सबसे बड़ी और 'टाप सीक्रेट' बात—यदि एक-दो दिन में ही विराटनगर किले का पतन नहीं हुआ तो मुक्तिसेना के समक्ष एक भीषण और चरम संकट-

पूर्ण समस्या उपस्थित हो जायेगी। अर्थात् मुक्तिसेना का गोलाबारूद और बुलेट का भण्डार करीब-करीब खाली हो चुका है। तब क्या होगा ? सिर्फ प्रेरणादायक राष्ट्रीय गीतों और रक्त को उबालनेवाले रिपोर्ताज से राणाशाही फौज की दुर्वार गति को रोका तो नही जा सकता ?

भट भट भट भट भट···??

पूरनसिंह तथा उसके साथियों ने कैटरपिलर बुलडोजर को सचमुच टैंक मे कनवर्ट कर दिया है। वे इस लौह-दानव को चला-फिराकर 'ट्रायल' ले रहे है। लोहे के चद्दरो से मण्डित, ब्रेनगन से सुसज्जित। पूरनसिंह ब्रेन-गन की चर्खी को घुमा-फिराकर विभिन्न कोण में निशाना लेकर देखता है—"कमाण्डर याकथुम्बा—यह रहा आपका टैंक !"

आश्चर्य ! दोपहर की सभा मे प्रसारण के लिए, उत्तम विक्रम राणा के नाम, ईस्टर्न कमाण्ड की फिर एक अपील ? अपील नही, अन्तिम चेता-वनी—"अब जनि दोष देहु मोहि लोगू···।"

और, इस अन्तिम चेतावनी का जवाब उत्तमविक्रम की सेना ने मोर्टार के गोलों से दिया—

"मिले न कबहुँ सुभट रण गाढ़े···।"

तेईस दिसम्बर के सुनहले दिन का तीसरा पहर। मुक्तिसेना के बैरकों मे मानो नयी जिन्दगी दौड़ गयी है। रिजर्व के जवान भी तैयार हो रहे हैं। चारों ओर सरगर्मी, उत्तेजना की लहरें !! ट्रकों में लदकर मुक्तिवाहिनी के योद्धा—विराटनगर मोर्चे की ओर चले। और ट्रकों के पीछे-पीछे तमाशबीन निहत्थी जनता। कमाण्डर के सामने नयी समस्या—"नहीं, नहीं। पब्लिक को रोको। एकदम रोको।"

पिकेट पर तैनात मुक्तिसेना के जवान मुस्तैदी से सड़कों पर घेरा डाल-कर अड़ गये। अबूझ जनता को नेपाली कांग्रेस के स्वयंसेवक समझा रहे हैं। किन्तु जनता अपनी सेना के साथ मार्च करना चाहती है—"भाइयो ! फौजियों की जय-यात्रा मे कोई बाधा न पड़ें—कोई अमंगल घटना न घटे —इसलिए आपसे अनुरोध है आप विराटनगर की ओर एक कदम भी आगे न बढावें···"

अगले मोर्चे पर कमाण्डर याकथुम्बा और सी० बी० सुब्बा ने मिल-

कर 'आखिरी हमले' की सारी तैयारी कर ली है। ड्राइवरों का सरदार गौरमणि, टैंक के 'पिट' में बैठा हुआ मुस्करा रहा है। मुक्तिसेना के जवानो को कई कालमों मे बाँट दिया गया है। सभी ईस्टर्न कमाण्ड के चीफ बी० पी० के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

ईस्टर्न कमाण्ड के चीफ़ की पार्टी आयी। याकयुम्बा ने आगे बढ़कर स्वागत किया—"सब, ठीक-ठाक—तैयार है। हुक्म हो।"

कमाण्डर ने सबसे पहले टैंकचालक गौरमणि को संकेत किया—स्टार्ट!

भटटटटट-टट-टट-भट भट···!

मार्च!!

भटभटभटभटभट···!

लोहे का विशाल-कच्छप सचल हुआ।

यन्त्रदानव धरती को कँपाता हुआ आगे बढ़ा। इसके पीछे-पीछे मार्च करती—कवर फाईरिंग देती हुई—मुक्तिसेना। सामने से मार करती हुई राणाशाही गोलियाँ। गोलियाँ टैंक पर सशब्द बरस रही हैं—भटभटभट-ट्ठाँय ट्ठाँय-धाँय-टटटटटट-भटभटभटभट-ठाँय—ठाँय—नरपति गिरा। उसको ट्रेंच में ले जाओ—ठाँय-ठाँय—जय नेपाल—आह!! भटभटभटभट—धाँय-धाँय—जय माँ काली—टटटटट घायलो को ट्रेंच मे ले जाओ—धाँय-धाँय—भटभटभट भट भट—ट्ठाँय-ट्ठाँय—जय नेपाल—भटभटभटभट—भटभट—धड़धड़धड़ाम—अर-र-र-गिरी-गिरी दीवार धड़धड़ाम—टूट गयी दीवार किले की—जय हो—भटभटभटभट···

किले की दीवार के टूटने के बाद का आँखोंदेखा हाल—प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो की तीसरी सभा मे प्रसारित हो रहा है, पी० आर० ओ० के शब्दों में—"दीवार अरराकर टूट गयी है और मुक्तिवाहिनी का टैंक गर्जन करता हुआ किले के अन्दर प्रवेश कर गया है—अब सिर्फ मुक्ति-सेना की गोलियाँ बोल रही हैं—भीषण कलरव—कोलाहल, जयध्वनि—मैं देख रहा हूँ, अन्दर की दीवार यानी पूरब की दीवार को फलाँगकर राणा के सैनिक भागना चाहते हैं लेकिन वे एक-एक कर नीचे गिर रहे है—मुक्तिसेना के जवान क्रोध से पागल हो गये है—सफेद झण्डा दिखलाकर

फायरिंग करने का मजा वे अच्छी तरह चखा देना चाहते हैं, दुश्मनों को।
अब मैं भी किले के अन्दर पहुँच चुका हूँ—बी० पी० दौड़कर उत्तमविक्रम के निवास की ओर जा रहे हैं—मुक्तिसेना के जवान एक लाश को घसीट-कर ले आये हैं—यह शायद—शायद—हाँ, यह उत्तम विक्रम के तीसरे पुत्र सुदर्शन शमशेर की लाश है—मुक्तिसेना के जवानों को मालूम है कि सफेद झण्डा फहराकर बी० पी० पर गोली चलाने का आदेश सुदर्शन शमशेर ने ही दिया था, इसलिए मुक्तिसेना के जवानों ने कसमें खायी हैं—"रगत खानछू—रक्त पीयूँगा उसका"—और, और···वे सचमुच रक्त पी रहे हैं, किलक-किलककर—एक नारकीय दृश्य—चारों ओर,—दुर्गन्ध, दुर्गन्ध—कोलाहल—आर्त्तनाद, जयध्वनि—गोलियों और संगीनों की मार—ट्ठांय—खच्च-खच्च !! ठांय-ठांय—"नो नो नो !!"

बी० पी० अपनी दोनों भुजाओं को पसारकर उत्तमविक्रम के दरवाज़े के पास—राह छेंककर खड़े हो गये है—"स्टाप फाईरिंग !" किन्तु, मुक्ति-योद्धाओं को उत्तमविक्रम की गर्दन चाहिए। थाकयुम्बा और बी०सी० सुब्बा जवानों को सँभाल रहे हैं। नेपाली कांग्रेस के स्वयंसेवक अब विजय के नारे लगाने लगे। उत्तेजना तनिक मन्द हुई है। और आत्मसमर्पण की मुद्रा मे—दोनों हाथों को ऊपर की ओर उठाये—दुश्मन के जवानों को उन्होंने कतार में पंक्तिबद्ध खड़ा कर दिया है। मुक्तिसेना के जवान उनके फेंके हुए हथियार बटोर रहे हैं—राणा के मशीनगनचालक की गर्दन धड़ से अलग करके—फुटबाल की तरह पाँव से लुढ़का रहे हैं और उन्हें रह-रहकर जब उत्तमविक्रम के अमानुषिक कुकृत्यों की याद आती है तो वे कर्नल के बँगले की ओर जाना चाहते हैं···बी० पी० कर्नल उत्तमविक्रम के रोते हुए पोते-पोतियों को चुप करा रहे हैं—मुँह में उँगली डालकर रोता हुआ एक शिशु—जिसकी घिघ्घी बँध गयी है रोते-रोते—उत्तम विक्रम पत्थर की मूर्ति की तरह खड़ा है—उसको घेरकर खड़ी कई महि-लाएँ—दुहाई माँगतीं, बिलखतीं, रोतीं···बी० पी० कहते है—"कर्नल साहब, अब आप सपरिवार मुक्तिसेना के बन्दी हैं, घबराइए मत। नहीं-नहीं—अब कोई गोली नहीं चलायेगा—आपके दोनों पुत्र घायल हुए हैं—मामूली चोट है—नहीं-नहीं—आप यकीन करें—आपको फिलहाल कोई

गोली नहीं मारेगा, शान्त होइए—इन्हें पानी पिलाइए, बच्चों को भी···"

पानी पीते समय भी उत्तमविक्रम की आँखें बी० पी० पर टँगी रहीं—उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि उसकी जान···लेकिन अब बी० पी० स्वयं एक रोते हुए बालक को गोद में लेकर चुप कराने लगे तब उत्तमविक्रम की पथराई हुई-सी आँखों मे पानी छलछला आया और उसने प्रलाप शुरू किया—"आप देवता हैं, मनुष्य नहीं—मैं देवहत्या-ब्रह्महत्या करनेवाला—मुझे मत माफ कीजिए—बी० पी०, बी० पी० आप सचमुच नेपाल की जनता के नेता···युग-युग जीयें आप···!"

शेष हुआ—विराटनगर का यह मृत्युयज्ञ !

अपने प्राणों की आहुतियां डालकर जिन योद्धाओं ने इसे सफल और सम्पन्न किया—उनके नाम इतिहास के पृष्ठों पर कभी नही लिखे जायेंगे। वे सदा अनाम रह जायेंगे। किन्तु, मुक्त नेपाल मे जब कभी 'स्वाधीनता दिवस' या 'प्रजातन्त्र दिवस' का उत्सव होगा—आकाश-पाताल में उनकी मृत्युंजय वाणी गूँजती रहेगी—"जय नेपाल ! जय नेपाली प्रजातन्त्र !!"

विराटनगर-विजय के बाद मुक्ति-वाहिनी की अग्रगामी टुकड़ियों ने धरान और धनकुट्टा की ओर सम्मिलित शक्ति और दूने उत्साह के साथ कूच किया। इन योद्धाओं की जय-यात्रा के अवसर पर प्र० ने० रेडियो से एक चेतावनी प्रसारित हो रही है—धरान और धनकुट्टा के राणा शासकों के नाम—"मुक्तिसेना धरान और धनकुट्टा की ओर मार्च कर चुकी है। अब भी पाँच-सात घण्टे का समय है। इसी बीच आप ठण्डे दिल और दिमाग से अन्तिम फसला कर लें। अगर कर्नल उत्तमविक्रम ने हमारी चेतावनियों पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान दिया होता तो कम-से-कम डेढ़-दो सौ नेपाली जवान—दोनो पक्ष के—आज नेपाल की मुक्त धरती पर जीवित हँसते-गाते होते। वे आज विराटनगर और मोरंग जिले के नर-नारियों के साथ विजय-उत्सव मनाते होते। किन्तु, राणाशाही हठधर्मी के कारण आज उनकी लावारिस लाशें···अगर अपने अंचल के सैकड़ो अबोध नेपालियों को मौत के मुँह में नहीं झोंकना चाहते तो आपसे यह अन्तिम और सविनय अनुरोध है कि आप आत्मसमर्पण की भावना से आगे बढकर—मुक्तहृदय और रिक्तहस्त—नेपाली कांग्रेस के जयघोष के साथ मुक्ति-

सेना का स्वागत करें···!"

तीन बजे भोर को चीफ़ ऑपरेटर लामा खुशी से नाचता-उछलता, चुटकियाँ बजाता—मुँह से सीटी 'सिसकारता' हुआ आया—"धरान-धनकुट्टा-आ-आ-आ-अगि बढदा—बढ़दै हाम्रो विजय भये को—हो साथि हो—धरान-धनकुट्टा सरेण्डर्ड···साथी यो विजय साचे भन्ने भये, सरासर प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो ले छोड़े को 'शब्दवाण' बाट ने···!!"

चीफ ऑपरेटर लामा ही नहीं, ईस्टर्न कमाण्ड के चीफ़ बी०पी० ने भी हँसकर स्वीकार किया—"हाँ, धरान और धनकुट्टा विजय का श्रेय प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो को ही देना होगा···दिनु पर्छ···"

विराटनगर-पतन और धरान-धनकुट्टा के आत्मसमर्पण के साथ ही मुक्ति-सग्राम के 'अन्तिम पर्व' का आयोजन शुरू हुआ। प्र० ने० रेडियो से घोषणा की जाने लगी—"विजयी मुक्तिसेना अब काठमाण्डो की ओर बढ़ रही है। कुसहा घाट के मोर्चे से भागनेवाले राणा-सैनिकों में अधिकाश तराई की जनता के द्वारा पकड़ लिये गये हैं···!"

रेडियो स्टेशन के प्रतीक्षालय में अब उम्मीदवार कलाकारों की भीड़ लगी रहती है। रेडियो से अब सिर्फ़ 'जुझाऊ गीत' ही नहीं, चाँद-तारे, पहाड़-झरने और प्रेम के गीत भी प्रसारित किये जाते हैं। प्रथम प्रसारण के दिन चिराग लेकर ढूँढने पर भी आश्रय-प्रार्थियों के कैम्प में कोई कलाकार नहीं मिला था। अब ऐसा लगता है, प्रत्येक परिवार में एक या एकाधिक गुणी गायक अथवा वादक अवश्य हैं। सितार, सारंगी, हारमोनियम, बाँसुरी, क्लेरियोनेट, तबला, ढोलक और 'घटम' (घडा) बजानेवालों के आवेदनपत्र नित्य प्राप्त हो रहे हैं। शास्त्रीय और सुगम संगीत गानेवाले कलाकार तारिणी और पी० आर० ओ० को हमेशा घेरे रहते हैं। तारिणी कहता है—"अभी हमें दुर्गा या जयजयवन्ती अथवा ठुमरी-दादरा नहीं—विशुद्ध लोकगीत चाहिए, नेपाली जनजीवन के 'असल' गीत। 'भयाउरे' गानेवालों की जरूरत है हमें—फिल्मी धुन की नकल नहीं चलेगी···!"

नेपाली, नेवारी, हिन्दी और अंग्रेज़ी में समाचार बुलेटिन पढ़ने के लिए और भी कई सुकण्ठ उद्घोषकों की नियुक्तियाँ हुई हैं। सब मिलाकर पन्द्रह-बीस स्त्री-पुरुष 'स्टाफ आर्टिस्ट' के रूप में काम कर रहे हैं और अब

कई सप्ताह पहले ही प्रसारित होनेवाले प्रोग्राम का 'शिड्यूल' बना लिया जाता है। समय की पाबन्दी पर पूरा ध्यान दिया जाता है। रेडियोवाले सदा गाने-बजाने और रिहर्सल में व्यस्त रहते हैं। इसीलिए हिन्दी समाचार बुलेटिन पढने के लिए, सोशलिस्ट कैम्प के एक साहित्यिक साथी 'निर्झर' की नियुक्ति हुई तो सबसे ऊबे हुए और सदा सभी पर कुढ़ते रहनेवाले एक कामरेड ने व्यंग्य किया था—"आप लोग तक़दीर के सिकन्दर हैं। जिनको मारना था मर गये। अब आप लोग मौज कीजिए। जाइए, रेडियो में 'बन की चिड़िया बन-बन बोलूँ रे' दोगाना गाइए···!!"

जब तक लड़ाई चल रही थी, किसी विभाग के किसी कोने में भी सद्भाव, सहयोग और भाईचारे का अभाव नहीं दीखता था। सभी मानो एक नशे में मस्त थे। किन्तु, युद्ध की गति मन्द होते ही मनोमालिन्य, ईर्ष्या, द्वेष और स्वार्थपरता के लक्षण प्रकट होने लगे हैं। एक नये क़िस्म का 'बोरडम' चतुर्दिक व्याप्त हो रहा है, धीरे-धीरे। आठ-दस हज़ार मजदूर अब अपने को सचमुच बेकार समझने लगे। अतः नेपाली कांग्रेस के सभापति ने तात्कालिक समस्याओं पर विचार-विमर्श करने के लिए आवश्यक बैठक बुलायी है।

उधर मोहन शमशेर समझौता के लिए फिर दिल्ली का दरवाज़ा खटखटा रहा है। नेपाल के 'परराष्ट्रविभाग' के मन्त्री को दिल्ली भेजा गया है!!

"समझौता? कैसा समझौता? किसके साथ समझौता?"

"सैकड़ों नेपाली नौजवानों की कुर्बानियों के बाद, देश के एकतिहाई से अधिक भू-भाग को मुक्त करने के बाद समझौता शब्द का उच्चारण भी करनेवाला देशद्रोही समझा जायेगा।"

नेपाली कांग्रेस के सभापति ने सदस्यों का ध्यान अफ़वाहों से हटाकर उपस्थित तात्कालिक समस्याओं की ओर आकर्षित किया—"आप विश्वास करें—नेपाली कांग्रेस ऐसा कोई क़दम नहीं उठायेगी जो जनमत-विरोधी हो···अभी हमारे सामने—'लिबरेटेड एरिया' में 'ला एण्ड आर्डर' क़ायम करने का अहम सवाल है। दस-पन्द्रह हज़ार मजदूरों की रोज़ी-रोटी की व्यवस्था करना, शहर और गाँवों के अस्त-व्यस्त जीवन

को फिर व्यवस्थित करना हमारा पहला कर्तव्य है···!"

"अब हाम्रो घर तिर फरकने बेला आयो! ···अब हमारे घर लौटने का समय आ गया।" आश्रय-प्राथियों के मुहल्ले मे रह-रहकर सम्मिलित हँसी और किलकारियाँ गूँज जाती हैं।

नागरिक-सुरक्षा-समिति के कार्यकर्त्ता फिर सक्रिय हुए। ट्रकों, जीपों और बैलगाड़ियों पर फिर सामान लादे जाने लगे। लोगों के उत्साह का अन्त नहीं। अब वे अपने-अपने घरों को वापस जा रहे हैं। एक 'बस' के मुरेड़ पर—बक्स-बिस्तर-पिटारियों के बीच बैठा एक नेपाली—अपने पालतू बन्दर को कन्धे पर बिठाकर गा रहा है—"हम मेहमां हैं अब अपने घर जायेंगे—घर जायेंगे, हाँ जी घर जायेंगे···"

मिलेटरी गवर्नर ने सभी मिलों के मालिकों के नाम नोटिस जारी किये हैं—"एक सप्ताह के अन्दर कल-कारखानों को चालू कर दें। जो उद्योग-पति इस आदेश का पालन नहीं करेंगे, उनके मिलो को सामयिक सरकार अपने हाथ मे ले लेगी और उन्हे चलाने की व्यवस्था करेगी···।"

ग्राम-पंचायत के आरम्भिक और मूल सिद्धान्तों पर विचार करने के लिए मोरंग जिला नेपाली कांग्रेस की विशेष बैठक बुलायी गयी है। नाग-रिक-सुरक्षा-समिति के दो प्रमुख अधिकारी शिवहरि और विश्वबन्धु की सम्मिलित राय है—"ग्राम पंचायत ट्रेनिंग कैम्प चलाने की व्यवस्था शीघ्र की जाये और प्रशिक्षित कार्यकर्त्ताओं को ही ग्राम-पंचायत के संगठन के लिए गाँवों में भेजा जाये।"

ग्राम-पंचायत ट्रेनिंग कैम्प में 'ट्रेनिंग' देने का दायित्व 'सोशलिस्ट रेजिमेण्ट' के नरसिंह मण्डल पर पड़ा है। उसने बाजाब्ता ट्रेनिंग ली है—ग्राम-पंचायत संगठनकर्त्ता की। अपने मन का काम पाकर नरसिंह मण्डल का सदाप्रसन्न मुखड़ा अब और भी चमकने लगा है। वह अपने दल-बल के साथ मोरंग जिले के दूर गाँवों की ओर—'जनसम्पर्क अभियान' में जा रहा है। सोशलिस्ट कैम्प के सदाकुपित-कुण्ठित और कुढ़े हुए एक काम-रेड ने फिर व्यंग्य किया—"आप भी तकदीर के सिकन्दर हैं। जाइए, मौज कीजिए!"

उधर नेपाली कांग्रेस के खेमे में शिवजंग राणा का व्यक्तिगत असन्तोष

दिन-प्रति-दिन बढ़ता जा रहा है। तुरन्त उत्तेजित होकर कुछ कर गुजरने-वाला यह राणा-सन्तान आजकल सदा असन्तुष्ट रहता है। बात-बात में व्यंग्य और आक्षेप करने की आदत बढ़ गयी है···सामयिक सरकार का जेल और पुलिस विभाग उसके पिता के जिम्मे था। किन्तु उस दिन बन्दी उत्तमविक्रम राणा के कमरे के पास भावुक 'बाबू साहेब' (राणा के लिए व्यवहार किया जानेवाला आदरसूचक शब्द) का हृदय उमड़ आया—"एक राणा-सन्तान अपने ही भाई राणा को काल-कोठरी में बन्द कर ताला लगावे···विधि को यो कस्तो विडम्बना?" वे खिड़की से सिर सटाकर रोने लगे, फूट-फूटकर, और खबर पाते ही मिलेटरी गवर्नर ने उन्हें तत्काल जेल तथा पुलिस विभाग के दायित्व से मुक्त कर दिया है। बाबू साहेब का पुत्र शिवजंग नाराज है। उसकी नाराजगी के बहुत सारे कारण उसके पास जमा हो गये हैं। किन्तु मुख्य कारण है बी० पी० के द्वारा उसके व्यक्तित्व और महत्त्व की अवहेलना, उसके प्रति 'हाई कमाण्ड' की उपेक्षा का भाव तथा शिवहरि और विश्वबन्धु से अधिक लगाव—उन पर अधिक विश्वास···!

अचानक एक आवश्यक संवाद पाकर सभी शीर्षस्थ नेताओं ने दिल्ली के लिए प्रस्थान कर दिया है। फिर एक बार समझौते की सम्भावनाओं और समझौते के विरोध में बातें शुरू हो गयी हैं—और बहस के सिल-सिले में बात बढ़कर भारतीय राजनेताओं के विरुद्ध कटु आलोचना का रूप भी ले लेती है। हर वर्ग के लोग अपनी-अपनी बुद्धि और विचार के अनुसार अपनी राय प्रकट करते हैं···असिस्टेण्ट वायरलेस ऑपरेटर नेत्र बहादुर गुरुंग ताश खेलता हुआ कहता है—"यो अब 'ट्वेण्टी नाइन' को खेला शुरू भये को झल्ल···इण्डिया के हाथ में अभी रंग का 'रायल पेयर' मतलब किंग और क्वीन की जोड़ी है। नेपाल कांग्रेस और राणाशाही—दोनों को वह जब चाहे तब दे सकता है। विरोध किया कि 'रायल पेयर' दिखलाया—हां-हा-हा-हा!!"

युद्ध-भूमि से समझौते के टेबुल पर पहुँचकर नेपाली कांग्रेस के नेताओं ने ग़लत किया या सही—यह सदा विवाद का विषय बना रहेगा। किन्तु नेपाल-क्रान्ति में विराटनगर ने अपनी शानदार और प्रमुख भूमिका का

जिस बहादुरी से निर्वाह किया उसको सभी स्वीकार करेंगे। अविस्मरणीय रहेगा विराटनगर का अवदान...!!

पिछले तीस वर्षों से नेपाल की राजनीति में सैकड़ों तीखे मोड़ आये हैं और पिछले बीस वर्षों से—हर ऐसे मोड़ पर—पी० आर० ओ० अपनी पुरानी डायरी के कई पृष्ठों को खोलकर फिर से पढ़ लिया करता है और हाशिये पर कुछ लिख दिया करता है :

"१७ फ़रवरी, शनिवार, १९५१

हो गया समझौता ! मोहन शमशेर प्रधान-मन्त्री होंगे और बी० पी० डिप्टी-प्राइममिनिस्टर ! बबर शमशेर (राणा पक्ष) रक्षामन्त्री और सुवर्ण शमशेर (ने० का०) अर्थमन्त्री...

लोग जो भी कहें—मैं इसे असमाप्त क्रान्ति ही कहूँगा, असफल नहीं।"

आज शिवजंग ने अचानक विद्रोह कर दिया। सशस्त्र सैनिकों के एक दस्ते को लेकर उसने कॉटन मिल एरिया पर धावा बोल दिया। 'निर्झर' ने हिन्दी समाचार बुलेटिन पढ़कर समाप्त किया और मैं मिलेटरी गवर्नर के आदेश का प्रसारण कर ही रहा था कि बिजली गुल हो गयी। एमरजेन्सी डाइनेमो चलाने की व्यवस्था हो रही थी, कि शिवजंग ने अपने विद्रोही सिपाहियों को लेकर रेडियो स्टेशन को घेर लिया। 'निर्झर' ने तुतलाकर अंगिका बोली में कहा—"बरगाँही शिवजंगा पगलाय गेलछै !" 'निर्झर' की बात सुनकर वैसी घड़ी में भी हँसी आ गयी। शिवजंग हाथ में रिवाल्वर लेकर चिल्लाता हुआ आया—हैंड्स अप ! एवरी बाडी हेयर—आर कैप्चर्ड—हैंड्स अप !"

रेडियो स्टेशन के बगल में ही नजरबन्दों के एक कमरे से मनमोहन अधिकारी चिल्ला रहा है—"किल दीज़ इण्डियन्स—पहले इन 'मधेसिया मूजियों' को खतम करो।"

हम सभी हाथ ऊपर की ओर उठाये खड़े रहे। शिवजंग ने गुर्राकर पूछा—"ह्वे र इज यौर टामीगन ?"

मैंने जवाब दिया—"मैंने कल ही मालखाना में जमा कर दिया है।"

शिवजंग रेडियो स्टेशन की तलाशी लेने के लिए अपने सशस्त्र साथियों के साथ अन्दर गया। बाहर चारों ओर भगदड़, कोलाहल और

बीच-बीच में फाइरिंग की आवाज। 'निर्भर' मुझसे सटकर खड़ा है और अपने गाँव की मीठी बोली में कुनमुनाकर मुझसे कह रहा है—"हे रे मैया! एकर मुख पर जवाब मत देवं—खिसियैलो छौ··· (भाई रे! इसके मुँह पर जवाब मत दो। गुस्से से पागल हो रहा है। गोली मार देगा पगला!)"

शिवजंग ने बाहर निकलकर फिर रिवाल्वर तानते हुए कहा—"एवरी बाड़ी कैंप्चर्ड!—हम समझौता नहीं मानता है। हम मोहन शमशेर के साथ मिलकर गवर्नमेण्ट बनानेवालों को खत्म कर देंगे···"

"लेकिन हम मोहन शमशेर के साथ मिलकर सरकार नही बना रहे।"—मैंने बहुत साहस बटोरकर कहा। 'निर्भर' उस समय भी कुनमुना रहा था—"हे रे भैया, बरगाँही कर मुख पर जवाब मत दहँ। गोली मारी देतौ रे!"

"हैंड्स अप!!"—याकथुम्बा अपने जवानों के साथ आया। उसको देखते ही विद्रोही सिपाहियों ने हथियार रखकर आत्मसमर्पण कर दिया। याकथुम्बा ने फुर्ती से शिवजंग के हाथ से रिवाल्वर छीनकर कहा—"यों बोलाहे लाई कैपचर गर!"

मिलेटरी गवर्नर के पास पहुँचकर शिवजंग ने अपनी ग़लती क़बूल कर के माफी माँग ली है। सुना, अगर याकथुम्बा समय पर नहीं आ जाते तो आज शिवजंग कई लोगों को मार डालता निश्चय ही।

जान बची, लाखों पाये। लेकिन घर का बुद्धू अभी लौटकर नहीं जा रहा। आदेश आया है—शपथ ग्रहण करने के दिन प्रजातन्त्र नेपाल रेडियो का कोई प्रतिनिधि काठमाण्डो में उपस्थित रहे। किन्तु मैं नहीं जाऊँगा: मैं बी० पी० को डिप्टी-प्राइममिनिस्टर के रूप में—सो भी, मोहन शमशेर के प्रधानमन्त्रित्व में—नही देखना चाहता। इसकी कल्पना भी हमने नहीं की थी। उधर के० आई० सिंह ने उस समझौते के खिलाफ अपनी आवाज उठायी है। पूरब, भद्रपुर में भैरवप्रसाद उपाध्याय ने भी लड़ाई बन्द करने के हुक्म को अमान्य कर दिया है। बार-बार नेत्रबहादुर गुरुंग की बात कान के पास गूँज जाती है—"इण्डिया के हाथ में रायल-पेयर हैं···!!"

२१ फरवरी, बुधवार।

पूर्णियाँ जिला सोशलिस्ट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी नरसिंह व नारायण सिंह ने सभी सोशलिस्टों को नेपाल से वापस आने का आदेश दिया है। अच्छा किया है उन्होंने। ग्राम-पंचायत के लिए मोरंग के गाँवों में गये हुए कुछ समाजवादी भाइयों ने सचमुच में मौज करना शुरू कर दिया है। नरसिंह मण्डल ने उनके खिलाफ कार्रवाई की, तो उन्होंने नरसिंह मण्डल को ही जान से मार डालने की धमकी दी है। मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि वे कामरेड जनरल सेक्रेटरी के आदेश का पालन करेंगे। आठ वर्ष की उम्र से ही मैं नेपाल की धरती पर पला हूँ। नेपाली कितने 'टची' (स्पर्श-कातर) होते हैं, जानता हूँ। यह भी जानता हूँ कि नेपाल की आम जनता के दिल में भारत और भारतीय के प्रति तनिक 'खटखटापन' सदा से रहता आया है। भारतीय उन्हें हेय दृष्टि से देखते हैं। उनके आर्थिक और राजनीतिक पिछड़ेपन को असहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से देखते हैं। विराटनगर के भारतीय उद्योगपतियों ने अपने व्यवहार से इस 'खटास' को और भी बढाया है। नेपाल मे पिछले कई दशक से कारोबार करनेवाले भारतीय उद्योगपतियों का भागा हुआ दल—मिलिटरी गवर्नर के आदेश पर वापस आ गया है और इस बार वे काँटे से ही काँटे को निकालने की चेष्टा कर रहे है। उन्होने प्रत्येक सोशलिस्ट के विरुद्ध गुप्तरूप से प्रचार करवाना शुरू कर दिया है। वे नेपाली कांग्रेस के कार्यकर्ताओं की आवभगत करते हैं और उन्हें सदा सतर्क करते रहते हैं—भारतीय राजनैतिक कार्यकर्ताओं के ससर्ग से अपनी पार्टी को दूर रखिए, नही तो उधर के सारे रोग ला करके वे इधर भी फैला देंगे। बात बिगड़ने के पहले ही हमें यहाँ से चल देना चाहिए।

४ मार्च, रविवार।

दो महीना पहले शोकाकुल अवस्था मे सान्दाज्यु (बी०पी०) का पत्र मिला था—"तुम्हारे पिताजी और छोटे भाई की मृत्यु एक ही पखवाड़े मे हुई और इस दोहरे दुख को तुम झेल रहे हो, मालूम हुआ। तुम्हारे दुख को अनुभव कर रहा हूँ। किन्तु इस तरह शोक में डूबे रहने से कैसे काम चलेगा? फिर इससे कोई लाभ भी तो नही। अभी तो न जाने ऐसे कितने

शोक-संवाद मिलेंगे—यहाँ आकर देखो—कितने लोग मरने के लिए आये हुए हैं। इस वर्ष का अन्त होते-होते तक पता नहीं तुमको और कितने प्रियजनों की मृत्यु के समाचार सुनने और सहने को मिलें। पत्र पाते ही यहाँ आ जाओ। एक बार यहाँ आओ तो सही। फिर, न हो तो, वापस चले जाना। तुम्हारा, सान्दाज्यु।"

आज विराटनगर छोड़ने के पहले सान्दाज्यु के नाम एक पत्र लिखकर जाना चाहता हूँ—"सान्दाज्यु। आपसे अनुमति मिले बिना वापस जा रहा हूँ। क्षमा करेंगे।"

लेकिन, नहीं लिखूँगा। यों, लिखने को एक महत्त्वपूर्ण पत्र भारत के प्रधानमन्त्री के नाम भी लिखना चाहता हूँ—"प्रधानमन्त्रीजी! पिछले कई सप्ताह से काठमाण्डो-स्थित भारतीय दूतावास में वायरलेस पर होनेवाली बातचीत को हम इण्टरसेप्ट कर रहे हैं। एक आवाज़—फटी-फटी-सी आवाज को हमने पहचान लिया है। यह निश्चय ही हमारे राजदूत महोदय की है। बिहारी होने के कारण हम बिहार के खूसट जमींदारों की बोली और मुहावरों को अच्छी तरह समझते हैं। अपने को 'किंग मेकर' और 'किंग्स केयर टेकर' माननेवाले इस महानुभाव के तेवर कुटिल और बोली कर्कश सुनायी पड़ने लगी है। भारतीय राजदूत के रूप मे नेपाल की सीमा से सटे हुए इलाके के इस 'सर' की सारी बिरादरी और भाई-भतीजे नेपाली जनता के भाग्यविधाता बन बैठे हैं। यह फटी हुई आवाज बहुत शीघ्र ही नेपाल मे भारत-विरोधी स्वर को तीव्र कर देगी। महाराजाधिराज को सकुशल देश से बाहर भगा ले जाने और वापस लाने के बाद हमारे राजदूत महोदय अपने को ही 'महाराजाधिराज' मान बैठे हैं। वह नेपाल की जनता और नेपाल के नेताओं को पग-पग पर अपमान करने को प्रस्तुत रहते हैं। उनको गलतफहमी हो गयी है कि नेपाल बिहार का एक जिला मात्र है··· क्या आप भी यही समझते हैं?···महोदय, किसी नौकरशाह अथवा 'सर' या 'रायबहादुर' को नहीं—किसी विशालहृदय, उदार व्यक्तित्व को नेपाल के राजदूत के पद पर···"

लेकिन, मैं किसी को पत्र नहीं लिखूँगा। सिर्फ नेपाल को सम्बोधित कर नमस्कार कर लूँ—"नेपाल मेरी सानो आमाँ···नेपाल मेरी मौसी-

अम्मा मेरा नमस्कार ग्रहण करो।"

भारत-नेपाल सीमा पर सोये हुए प्रहरी साथी कुलदीप झा को 'लाल सलाम' करके कहता हूँ—"अच्छा तो डाक्टर साहब, हम चले। आप देखते रहना—भारत-नेपाल-मैत्री का पौधा सूख न जाये : इसे कोई जानवर ठूँठ न कर दे…।"

"और तारापद बाबू ?—बलून ना—आपनार माँ के कि बोले दिब ?…क्या कहूँगा आपकी माँ से ?"